उदयाचल

वार्षिक पत्रिका

अंक: 61 | मार्च, 2024

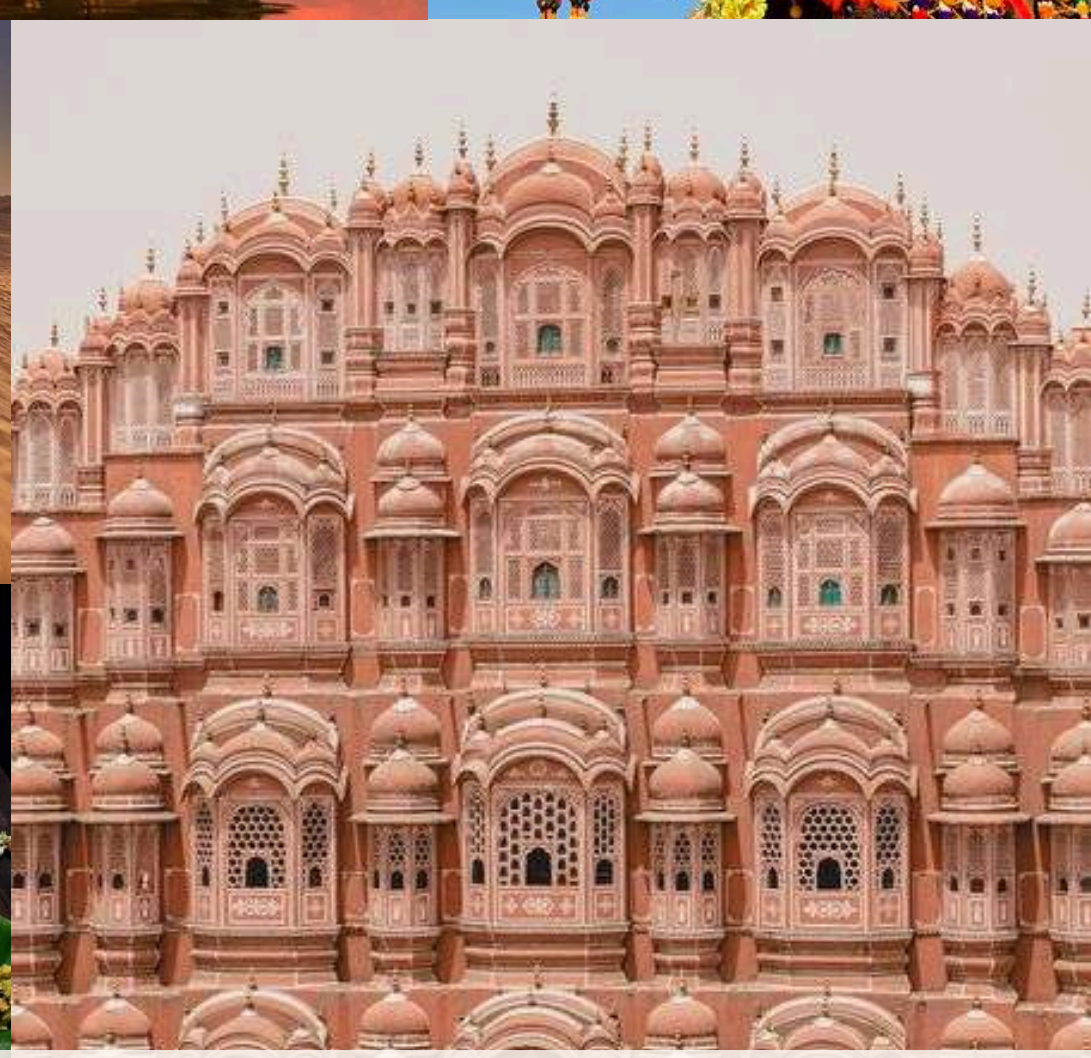

आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

Shri Pawan Jaggi
Chairman, College Governing Body

Prof. Gyantosh Kumar Jha
Principal

Dr. Bhavnath Jha
Convener, Magazine Committee

College Magazine Committee

Dr. Bhavnath Jha
Anita Singh
Prof. Sunita Bhagat
Dr. Manika Jain
Dr. Shalini Gupta
Ms. Shweta Nanda
Dr. Nisha Jha
Dr. Jyothsna Phanija Bolla
Dr. Anil Kumar Singh
Dr. Priyam Barooah
Mrs. Shilpi Jain
Ms. Swati Jharwa

Magazine Designed by:
Samridhi Dwivedi
Abhyudaya Kumar Mishra

Udayachal

उदयाचल

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते ।
तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्मनि विन्दति ॥
श्री मद्भगवद्गीता (४.३८)

**ON EARTH HERE IS NO PURIFIER AS GREAT AS KNOWLEDGE;
HE WHO HAS
ATTAINED PURITY OF HEART THROUGH A PROLONGED
PRACTICE OF
KARMAYOGA AUTOMATICALLY SEE THE LIGHT OF TRUTH IN
THE SELF IN
COURSE OF TIME.**

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है। उस ज्ञान को कितने ही काल से कर्मयोग के द्वारा शुद्धान्तःकरण हुआ मनुष्य अपने-आप ही आत्मा में पा लेता है।

**आत्मा राम सनातन धर्ममहा विद्यालय
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
धौला कुआँ, नई दिल्ली - 110021**

OUR FOUNDERS

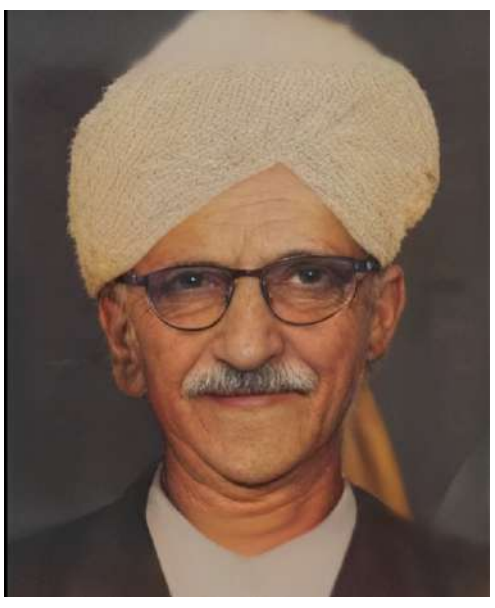

LATE SHRI MELA RAM JAGGI
(FOUNDER MEMBER)
SANATAN DHARMA COLLEGE

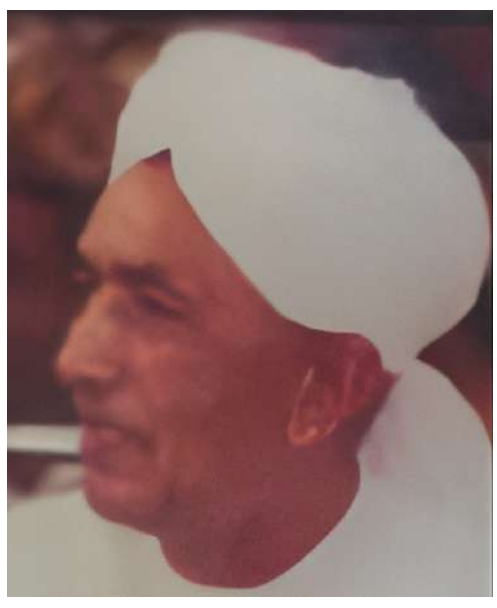

LATE SHRI GANGA RAM GUJRAL
(FOUNDER MEMBER)
SANATAN DHARMA COLLEGE

LATE SHRI ATMA RAM CHADHA

The College was founded in August 1959 by the Sanatan Dharma Sabha (Rawalpindi), Delhi. It was named Sanatan Dharma College till 1967. In 1967 Shri Atma Ram Chadha took over as Chairman of the College Governing Body, and Atma Ram was prefixed to the name of the college.

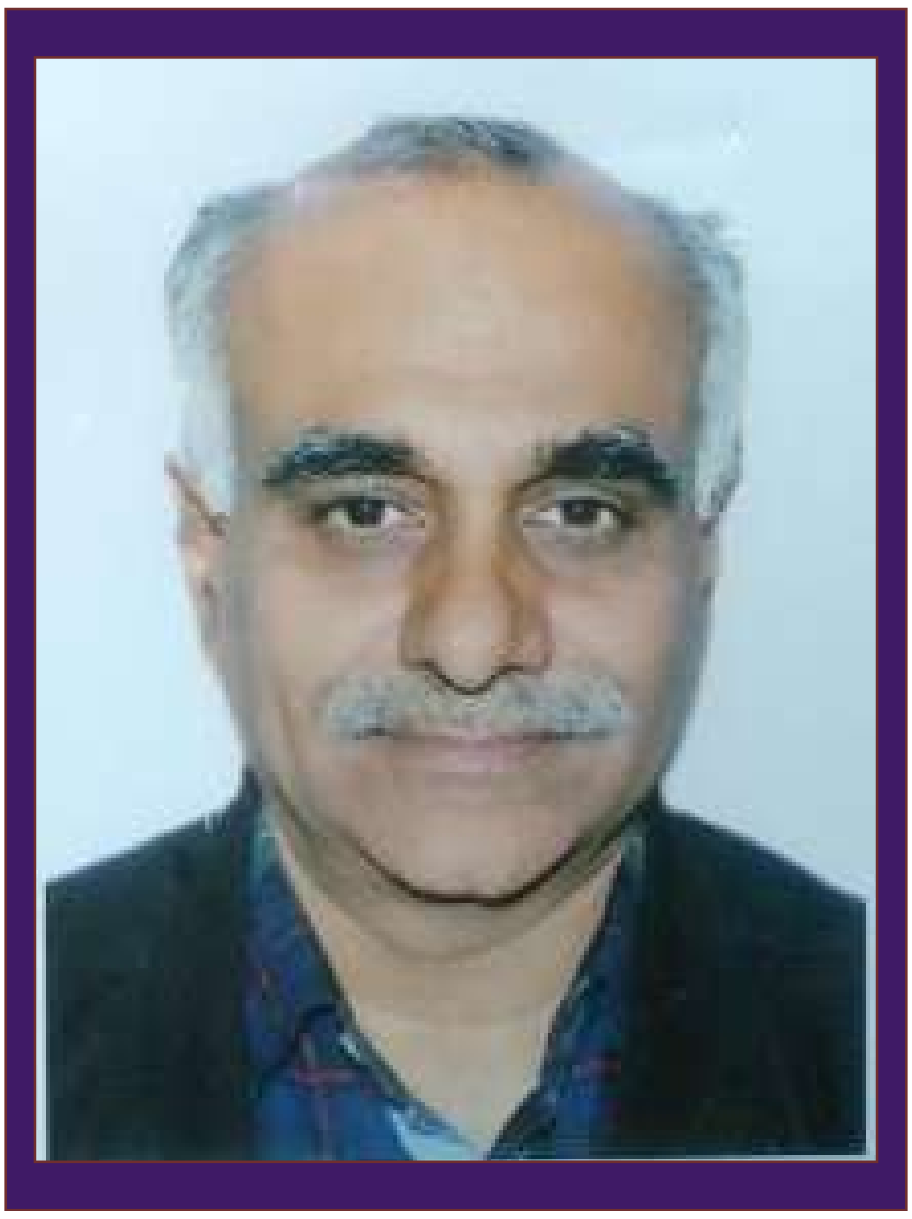

FROM THE CHAIRPERSON'S DESK

Shri Pawan Jaggi

Chairman,
College Governing Body

अकादमिक संस्थान के रूप में आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय जिन आदर्शों और मूल्यों को अपने भीतर समाविष्ट कर विद्यार्थियों का पथ प्रशस्त करता है वह हमारे समय की अतिवादिताओं के बीच हमारे समाज में सकारात्मक आशा और उर्जा का संचार करने वाला है। सच्ची शिक्षा समाज में ज्ञान से युक्त अच्छी नागरिकता का विकास करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

यह बात मुझे बहुत गर्व और खुशी से भर देती है, जब मैं देखता हूँ कि महाविद्यालय के सभी हितधारक अपनी शैक्षणिक गतिविधियों और सामाजिक जिम्मेदारियों को सर्वोत्तम क्षमता और हुनर के साथ कुशलतापूर्वक निर्वाह करते हैं और महाविद्यालय को सफलता की नई ऊँचाइयों की तरफ ले जाने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं। नई शिक्षा नीति से प्रेरित होकर, महाविद्यालय ने ज्ञान समृद्धि के नए तरीकों को अपनाया है। रिकॉर्ड संख्या में वेबिनार, एफडीपी, ऑफलाइन राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ और यहां तक कि सभी अनुशासनों में प्रदर्शनपरक कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं। महाविद्यालय में प्रशासनिक एवं वित्तीय सेवाएँ और सहायता उन सभी विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध रहती है जिन्हें उनकी आवश्यकता होती है। इसके अलावा, नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में सक्रिय रूप से शामिल होने के लिए और नई कार्यप्रणाली विकसित करने के लिए महाविद्यालय प्रशासन, विशेष रूप से प्राचार्य बधाई के पात्र हैं। इन प्रयासों से हम कॉलेज को शैक्षणिक प्रगति की राह पर बनाए रखने में कामयाब रहे हैं।

वार्षिक पत्रिका उदयाचल, इस तथ्य की गवाही देती है कि आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय छात्रों और शिक्षकों के समग्र विकास के लिए समर्पित है। उदयाचल छात्रों को अपनी प्रतिभा और रचनात्मक कौशल को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करने का एक उत्कृष्ट अवसर प्रदान करता है। इसी के अनुरूप विद्यार्थियों ने अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा की उत्कृष्ट प्रस्तुति की है। पत्रिका हमारे पाठकों के लिए एक प्रोत्साहन भी है, जो उनसे सर्वश्रेष्ठ बनने के अपने संकल्प को मजबूत करने का आग्रह करती है। यद्यपि हमें राष्ट्रीय मूल्यांङ्कन एवं प्रत्यायन परिषद् द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ ग्रेड पॉइंट से पुरस्कृत किया गया है तथापि आइए हम छठे एनआईआरएफ रैंक से आगे बढ़ते हुए शिक्षण का सर्वोत्तम संस्थान बनने का संकल्प लें। मैं उदयाचल के 61वें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को बधाई देता हूँ ।

FROM THE PRINCIPAL'S DESK

Prof. Gyantosh Kumar Jha

Principal

महाविद्यालय की पत्रिका उदयाचल के नये अंक का प्रकाशन हर्ष का विषय है। यह संपादकीय बोर्ड-जिसमें संकाय सलाहकार और छात्र संपादक दोनों शामिल हैं, के संयुक्त प्रयासों से संभव हुआ है । यह रंगीन पत्रिका हमारे अनुभवों, विचारों, भावनाओं, मूल्यों और दृष्टि की सामूहिक अभिव्यक्ति है। पत्रिका वैश्विक समाज के लिए आवश्यक मानवीय एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रति हमारी रचनात्मकता और प्रतिबद्धता का प्रतीक भी है।

हम, अखिल भारतीय स्तर पर श्रेष्ठतम शिक्षण संस्थानों में से प्रमुख संस्था के रूप में, जिज्ञासु छात्रों को सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान निर्माण और उसके विकास की प्रक्रिया से जोड़कर व्यक्तिगत एवं सामाजिक चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करने का प्रयास करते हैं। इस सन्दर्भ में हमारे विद्यार्थी आस-पास के अवसरों और चुनौतियों को जानने और समझने के लिए कक्षा और पाठ्यक्रम से परे जाकर अध्ययन और शोध का कार्य करते हैं।

मुझे यह बताते हुए गर्व हो रहा है कि नई शिक्षा नीति द्वारा उपलब्ध कराए गए अवसरों व चुनौतियों को आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय ने न सिर्फ आगे बढ़कर अपनाया है, बल्कि विभिन्न नई, रोचक, शोधपरक और कौशलपूर्ण गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को ज्ञान संपन्न करने के साथ-साथ रोजगार अर्जन और सृजन की दिशा में भी उन्मुख करता है । इसके लिए हमने नए शैक्षणिक तरीकों और प्रौद्योगिकियों के साथ सफलतापूर्वक प्रयोग किया है । कई प्रायोगिक कार्यशालाएँ और राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ आयोजित की गईं जिनमें दुनिया भर से भागीदारी को आमंत्रित किया गया । विभागों और सांस्कृतिक समीतियों ने ऐसी गतिविधियाँ आयोजित की जिससे छात्र समूह पूरे वर्ष शैक्षणिक रूप से उत्साहित और सक्रिय रहा ।

पत्रिका में प्रकाशित होने वाली सामग्री से यह स्पष्ट है कि इस बार हम इस पत्रिका में जो प्रस्तुत कर रहे हैं वह केवल कविताओं, कहानियों, विचारों आदि का संग्रह नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के निजी अनुभवों और कल्पना से प्रेरित कुछ ऐसे उपाख्यान भी हैं जो उनकी निखरती हुई रचनात्मक प्रतिभा के प्रतीक हैं। इसलिए, उदयाचल एक ऐसा मंच है जहां विद्यार्थियों की नैसर्गिक प्रतिभा और सोच का प्रकाशन, दस्तावेजीकरण और संग्रहण भी होता है । मैं उदयाचल के 61वें अंक के प्रकाशन से जुड़े सभी लोगों को बधाई देता हूँ ।

STUDENT EDITORIAL BOARD

SAMRIDHI DWIVEDI

ABHYUDAYA KUMAR MISHRA

NANCY DABAS

SARANYA

MUKUL SHARMA

YASHI TYAGI

AASTHA MISHRA

VIDYA SINGH

ADITYA SINGH KUSHWAH

AYUSH MAURYA

TANU PATHAK

संपादकीय

एक नए रूप में वार्षिक पत्रिका ' उदयाचल ' अपने नए संस्करण के साथ आपके समक्ष प्रस्तुत है । यह पत्रिका अपने आप में उन सभी संकल्पित विचारों का उद्घोष है जो किसी तलवार से कई ज्यादा अपने कलम के प्रति विश्वास रखते हैं । प्रत्येक वर्ष यह विश्वास , यह आस्था हमें भिन्न-भिन्न रूपों में पढ़ने व देखने को मिलती है । इस बार भी कुछ ऐसी ही युवा प्रतिभाओं ने अपनी कल्पना की भूमि पर सृजनशीलता के दुर्लभ बीज बोकर इस पत्रिका को सघन रूप प्रदान किया है , जिसका साक्षी इस पत्रिका का हर शब्द , हर पंक्ति और हर पन्ना बनते हुए दिखाई देता है। यह पत्रिका एक प्रशस्ति है उन सभी परिंदों की जो इस सृष्टि में एक नई सृष्टि के लिए निरंतर उदीयमान रहते हैं ।

इस वर्ष पत्रिका ने अपना मुख्य विषय ' हमारी संस्कृति : अनेकता में एकता ' को रखा जिसने अपने आंगन के इस उत्सव में सभी संस्कृतियों को आमंत्रित किया है । हमारे जीवन में भिन्न-भिन्न कलाओं , विधाओं , परिधान , खान-पान एवं रीति-रिवाज के साथ-साथ हमारे दैनिक जीवन में भी प्रयोग में आने वाली एक छोटी से छोटी वस्तु की भी अपनी एक संस्कृति है , जिसने एक संस्कृति के रूप में हर दूसरी संस्कृति को संरक्षित व संवर्धित रखने में अपना योगदान दिया है । यह पत्रिका उन सभी संस्कृतियों के रंगो का एक चित्र है। इस चित्र में ' वसुधैव कुटुम्बकम् ' की अमिट छाप है ..

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम् ।।

हमारी संस्कृति के इस भव्य आंगन व अंक में सामाजिक , प्राकृतिक , राजनीतिक एवं भौगोलिक आदि सभी संस्कृतियों की अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों में देखी जा सकती है । सभी संस्कृतियों के विविध रूप भारत देश की विविधता को प्रदर्शित करते हैं और यही कारण है कि इस संदर्भ में भारत देश संपूर्ण विश्व का शिरोमणि हैं । एक पत्रिका किसी भी संस्था की रचनात्मक प्रतिभा का प्रतिबिंब होती है और इसके लिए हमारे आदरणीय प्राचार्य एवं समस्त गुरूजन का बहुत-बहुत धन्यवाद जिन्होंने अपने ज्ञान व मार्गदर्शन से इस पत्रिका के रूप में हमें अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया । संस्कृत , हिंदी और अंग्रेजी भाषा के संयुक्त संकल्प की परिणाम वार्षिक पत्रिका ' उदयाचल ' निरंतर नव-सृजनशीलता की किरणें दसों दिशाओं में बिखेरती रहे , इसी आशा के साथ इस अंक के सभी प्रतिभावान युवा प्रयासों को अशेष शुभकामनाएँ।

इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना अतुलनीय योगदान देने वाले सभी साथियों का भी बहुत-बहुत आभार ।

EDITORIAL ADDRESS

As we approach the end of the academic year, it's a fitting time to contemplate the experiences that have shaped our journey at Udayachal 2024. From the bonds of friendship formed to the invaluable lessons learned, our time at Udayachal College has been truly transformative. Reflecting on the past year, we're struck by the remarkable perseverance exhibited by our students, faculty, and staff. Despite the obstacles encountered, we've united to cultivate a thriving community of learners and leaders. Udayachal College has always been a center of intellectual curiosity and creative expression, and this year has been no different. We've witnessed students pushing the boundaries of possibility across various fields, from the arts to the sciences. Notably, numerous research and innovative projects have deepened our understanding of the world around us. Yet, beyond these individual achievements, there has been a broader dedication to social justice, equity, and inclusion. Udayachal 2024 embodies this commitment. Under the inspired guidance of Chairman Shri Pawan Jaggi and Principal Prof Gyantosh Kumar Jha, we've reached new levels of excellence, proudly emerging as the 6th top college in the country. The magazine serves as a testament to our successes and aspirations. Moreover, Udayachal 2024 has been marked by an exploration of the diverse cultures that enrich our country. Recognizing the importance of embracing cultural diversity, our college has organized various events and initiatives aimed at fostering greater understanding and appreciation of different cultural traditions. Through these endeavors, we've sought to create an inclusive and welcoming environment where every individual feels valued and respected. As we conclude another academic year, let's carry forward the lessons learned and the bonds formed, as we continue our journey of growth and discovery at Udayachal College.

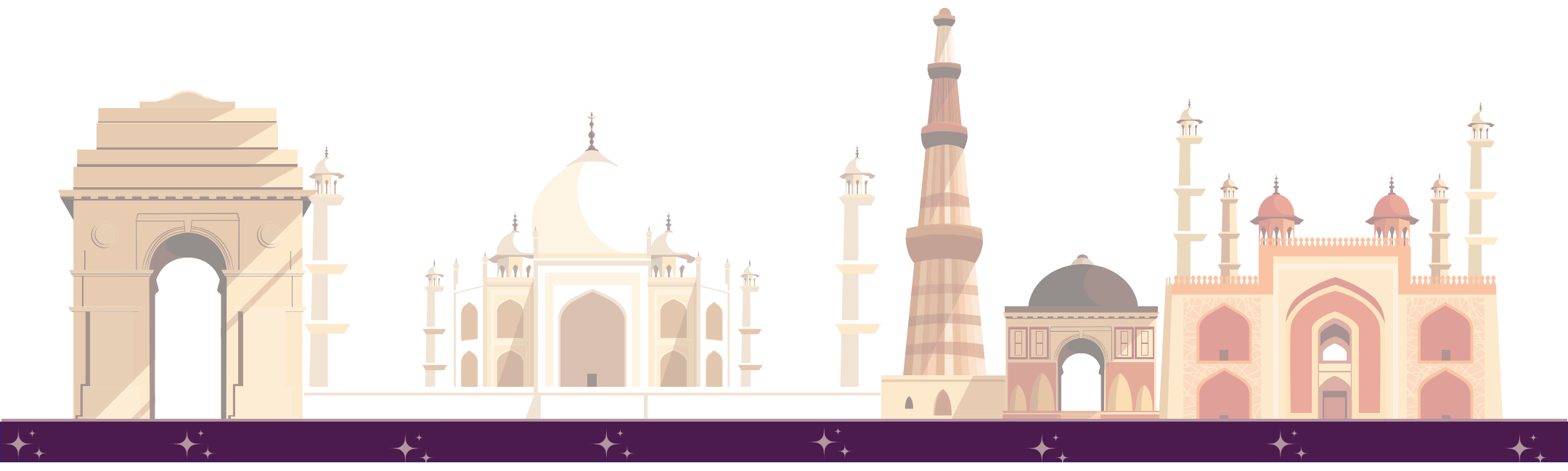

आत्मा राम सनातन धर्म महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) की वार्षिक पत्रिका ' उदयाचल ' नवीन एवं स्वतंत्र युवा विचारों की वह स्रोतस्विनी है जिसकी हर पावन धारा उन्नत सृजन व उन्मुक्त अभिव्यक्ति के साथ-साथ अद्भुत कलात्मकता की शीतल बूंदों से हमें सराबोर कर जाती हैं । यह पत्रिका मेरे उस आत्मविश्वास को बल प्रदान करती है कि हर नई रचना से पूर्व मैं स्वयं को उस हिमालय के रूप में स्थापित करते हुए एक अटल साधना में निरंतर समर्पित रहूँ ताकि मेरे अंतर्मन से जो प्रवाहित हो , उसमें भी माँ गंगा जितनी पवित्रता हो। इस अंक के मुख्य विषय ' हमारी संस्कृति : अनेकता में एकता ' के व्यापक परिदृश्य में यह पत्रिका उन सभी संस्कृतियों के भिन्न-भिन्न रंगों के साथ अभिन्न व अनन्य दृश्य प्रस्तुत करने में सफल प्रतीत होती है। इस अंक के अंतर्गत एक साथ कार्य करना हम सभी के लिए एक नए समन्वय का एक नया अध्याय रहा जो इस पत्रिका के रूप में गौरव व हर्ष की अनुभूति प्रदान कर रहा है । हमारी सौम्य संस्कृति की इस वीथिका से विचरण करते हुए अन्य विद्वत् चेतनाएं भी और अधिक पुष्पित व पल्लवित हो। हम जानते हैं कि प्रत्येक रचना में नवसृजन की असीम संभावनाएं सदा व्याप्त होती हैं और यह प्रक्रिया निरंतर जारी रहेगी। इसी आशा के साथ वार्षिक पत्रिका ' उदयाचल ' परिवार एवं सभी युवा प्रतिभाओं को अशेष शुभकामनाएं ।

अभ्युदय कुमार मिश्र
हिंदी विशेष (तृतीय वर्ष)

Being a member of the editing team for Udayachal 2024 fills me with an overwhelming sense of gratitude every day. This experience has been nothing short of transformative, allowing me to collaborate with a group of passionate individuals dedicated to preserving and showcasing the beauty of Indian culture. Our decision to center our efforts around the theme of "Indian Culture" stems from a collective desire to delve deep into the intricacies and richness of our heritage. Indian culture is a mosaic of traditions, languages, cuisines, arts, and religions, each contributing to its unparalleled diversity. Choosing this topic has not only enabled us to explore the depth and breadth of our cultural heritage but also provided a platform to educate and inspire others about its significance.

The journey of delving into Indian culture through the lens of Udayachal 2024 has been nothing short of amazing. From unraveling the ancient philosophies of yoga and Ayurveda to celebrating the vibrant festivals that adorn our calendars, each aspect of our culture is a treasure trove waiting to be discovered. Through meticulous research, thoughtful discussions, and creative expressions, our team has been able to capture the essence of Indian culture in all its splendor. It's truly remarkable how our collective efforts have come together to create a publication that not only educates but also fosters a sense of pride and connection to our roots among our readers.

Samridhi Dwivedi
English Honours (Third Year)

वल्लरी

संस्कृत विभाग

भारतीय राजनीतिकसंस्कृतिः

जिंकी शर्मा
बी. ए. प्रोग्राम (द्वितीय वर्ष)

कौटिल्यः यः प्रसिद्धः भारतीयराजनेता आसीत् सः मन्यते स्म यत् राज्यं जीववत् भवति ।तस्य सम्यक् कार्याय तस्य सर्वेषां अङ्गानाम् सम्यक् कार्यानुष्ठानम् आवश्यकम् अस्ति ।
ऐतिहासिकदर्शनस्य विविधसामाजिकपरिस्थितेः च सम्मुखे भारतीयराजनैतिकसंस्कृतिः सहस्रवर्षेभ्यः मार्गं कृतवती अस्ति । भारतस्य समृद्धेन ऐतिहासिकयात्रया सह अस्य राजनैतिकसंस्कृतेः अपि विकासः परिवर्तनम् च अभवत् । अस्य त्रिषु प्रमुखेषु चरणेषु विकासः अवगन्तुं शक्यते ।

1. प्राचीनकालम्

(सिन्धु - उपत्यकासभ्यतातः मौर्य साम्राज्यपर्यन्तम्, अनुमानितः 3300 ई.पू. तः 300 ई.पू. यावत्)

धर्म-कर्तव्य-आधारित-शासनम्

प्राचीनभारते राजा परमशक्तिः आसीत्। राज्यस्य कल्याणं सर्वोपरि मन्यते स्म । राजानां धार्मिकनैतिकमार्गदर्शने धर्मशास्त्राणां महती भूमिका आसीत् ।

ग्रामपरिषदाः स्वशासनस्य एककाः आसन्, येषु सामाजिकराजनैतिकविषयेषु निर्णयाः क्रियन्ते स्म ।
चाणक्य- शुक्राचार्य - इत्यादयः प्रमुखाः राजनैतिकचिन्तकाः राजनीति-शासनविषये स्वविचारं ग्रन्थेषु प्रस्तुतवन्तः।

उदाहरण

मौर्यसाम्राज्यकाले अशोकस्य धम्मशासनं, यस्मिन् अहिंसा, सह- अस्तित्वं च बलं दत्तम् आसीत् ।
सिन्धु - उपत्यका - सभ्यतायां विकसिता नगरनियोजनं जलप्रबन्धनव्यवस्था च, या सामाजिकसङ्गठनं प्रशासनिकक्षमतां च प्रतिबिम्बयति।

2. मध्ययुगीनकालः (गुप्तसाम्राज्यतः मुगलसाम्राज्यपर्यन्तं)

(प्रायेण ३०० ई.पू. तः १८५७ ई.पर्यन्तम्)

एष कालः विविधतायाः, द्वन्द्वस्य च कालः अस्ति। अस्मिन् काले विभिन्नानां वंशानां उदयः अभवत्, येषु स्वकीयानां शासनशैल्याः, राजनैतिकविचारधाराणां च विकासः अभवत् । राजनीतिषु धर्मस्य महती भूमिका आसीत् । हिन्दुधर्मस्य, इस्लामधर्मस्य च उदयेन राजनैतिकं प्रवर्तनं जातम् ।
जागीरदारीपंचायतेत्यादयः स्थानीयशासनव्यवस्थाः अधिकप्रमुखाः अभवन् ।
दक्षिणभारते चोलसाम्राज्यस्य नौसेना-जलव्यवस्थापनव्यवस्था सुदृढा आसीत् ।

3.आधुनिककालः

(ब्रिटिशराजतः स्वातन्त्र्योत्तरपर्यन्तं, १८५७ ई.तः वर्तमानपर्यन्तम्, लोकतन्त्रस्य संघवादस्य च युगम्)

ब्रिटिशराजविरुद्धं स्वतन्त्रतासङ्घर्षेण राष्ट्रवादस्य भावः सुदृढः अभवत्, लोकतान्त्रिकमूल्यानां च प्रचारः अभवत् । १९५० तमे वर्षे भारतीयसंविधानस्य स्वीकरणानन्तरं भारतं लोकतान्त्रिकगणराज्यं जातम् । बहुदलीयनिर्वाचनव्यवस्था कार्यान्विता। संविधानेन मौलिकानाम् अधिकाराणाम् कर्तव्यानां च गारण्टीति कृता । भारतं समाजवादस्य मार्गम् अनुसृत्य दरिद्रतानिवारणे सामाजिकन्याये च बलं दत्तवान् ।

पश्चात् मिश्रित-अर्थव्यवस्थायाः प्रति परिवर्तनम् अभवत् ।आधुनिकभारते क्षेत्रीयं जातिराजनीतिः च महत्त्वपूर्णकारकः जातम्। अधिकारानां संसाधनानाञ्च विषये विभिन्नेषु प्रदेशेषु समुदायेषु च स्पर्धा वर्तते ।

उदाहरणम्

१९९१ तमे वर्षे आर्थिक-उदारीकरणस्य नीतयः, येन भारतं वैश्विक-अर्थव्यवस्थायां समाकलितम् ।

निष्कर्षः

भारतीयराजनैतिकसंस्कृतेः यात्रा सहस्रवर्षेभ्यः प्रचलति। प्राचीनराज्यकेन्द्रितसंरचनाभ्यः आरभ्य आधुनिकप्रजातन्त्रपर्यन्तं अस्याम् संस्कृतौ अनेकपरिवर्तनानि जातानि। धर्मः, सामाजिकसंरचना, आर्थिककारकाः, वैश्विकप्रभावाः च अत्र निरन्तरं आकारं दत्तवन्तः । भारतीयराजनैतिकसंस्कृतिः भविष्ये कस्याम् दिशि गमिष्यति इति द्रष्टव्यम् अस्ति, परन्तु तस्याः अतीतः समृद्धः जटिलः च अस्ति ।

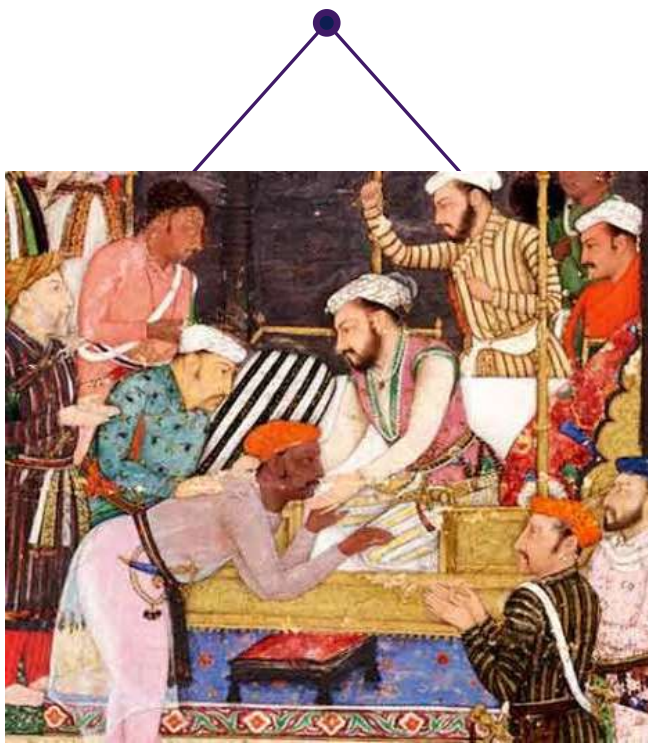

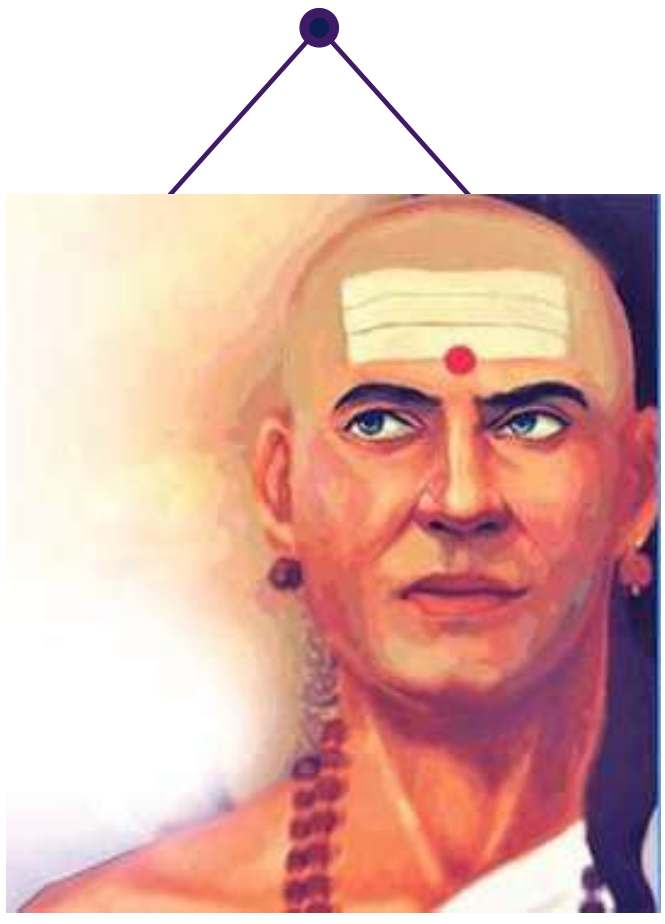

मौर्यकालस्य कलाकृतयः

मुकुल शर्मा
हिन्दी विशेष (द्वितीय वर्ष)

1."मौर्यकला" इति पदं मौर्यसाम्राज्यस्य शासनकाले 322 तः 185 ई.पू.पर्यन्तं, निर्मितानाम् कलाकृतीनां अभिप्रायं ददाति । मौर्यसाम्राज्येन महतीः कलाकृतयः वास्तुकला च निर्मिताः ये अद्यत्वे अपि सौन्दर्यमूल्येन ऐतिहासिकसान्दर्भिकतायाः च कारणेन प्रसिद्धाः सन्ति । भारतीयकलायां काष्ठात् पाषाणपर्यन्तं महत्त्वपूर्णं परिवर्तनं जातम् । अशोकः अस्य राजकलारूपाय आश्रयं दत्तवान् । अशोककाले वास्तुकलायां पराकाष्ठा दृष्टा, या दरबारकलावर्गे अन्तर्भवति स्म । अशोकस्य बौद्धधर्मम् प्रति प्रतिबद्धतायाः अनन्तरं बृहत्प्रमाणेन बौद्धमिशनरीप्रयासानां कारणेन अद्वितीयमूर्तिकला-वास्तु-रूपानां विकासः अभवत् । गुहाः, स्तूपाः, स्तम्भाः च अत्र उल्लेखनीयाः अवशेषाः सन्ति । प्राचीनभारतस्य इतिहासः मौर्यकलाभिः, वास्तुकलाभिः च बहु प्रभावितः अस्ति । मौर्यसाम्राज्यस्य कला दूरं गत्वा महत्त्वपूर्णं ध्यानं आकर्षितवती यतः साम्राज्यस्य एतावत् विशालं भौगोलिकक्षेत्रं आच्छादितम् आसीत् ।

2.अशोकस्तम्भः भारते निर्मितः । "अशोकस्य स्तम्भाः" तृतीयेन मौर्यसम्राजा अशोकमहानेन सम्पूर्णे भारतीय उपमहाद्वीपे निर्मिताः एकलस्तम्भाः सन्ति। अशोकः 268 तः 232 ई.पू.यावत् शासनं कृतवान् । ते अशोकस्तंभाः अत्यन्तं स्निग्धवालुकाशिलाभिः निर्मिताः भवन्ति स्म । स्तम्भानां बाह्यरूपं बौद्धदर्शनस्य उपरि बलं ददाति । अधिकांशस्तम्भेषु पशुमूर्तयः स्थापिताः आसन् । बौद्धधर्मस्य प्रसिद्धतमं प्रतीकं विपर्यस्तं कमलपुष्पमपि प्रत्येकं स्तम्भे स्थापितं भवति । स्तम्भस्य शिखरे तस्य उपरि पुष्पाणि पशवः च समाविष्टाः सन्ति । अधिकांशस्तम्भानां शिखरे सिंहः वृषभः वा उपविष्टः स्थितः वा भवति । एकस्मात् शिलाखण्डात् उत्कीर्णाः पशवः प्रायः वृत्ताकाराः भवन्ति । एते "धर्मस्तम्भाः" अथवा अशोकेन वर्णिताः धर्मस्तम्भाः आसन् । सिंहवृषादिपशूनां उत्तमशिल्पैः सह बहवः विशालाः वालुकाशिलास्तम्भाः अद्यत्वे अपि तिष्ठन्ति ।

3. प्रसिद्धस्य मौर्यशिल्पस्य अन्यत् उत्तमं उदाहरणं पटना-राज्यस्य दीदारगञ्जस्य यक्षशिल्पम् अस्ति । चौरीवाहकः इति अपि प्रसिद्धः । "दीदारगञ्जयक्षी" प्राचीनभारतस्य उत्तमशिल्पेषु अन्यतमः अस्ति । बौद्धकलातत्त्वानां, प्रतीयमानमौर्यसौन्दर्यमानकानां च सुन्दरः मिश्रणः अयं शिल्पः विभिन्नक्षेत्रेभ्यः रुचिं जनयति इदं उच्छ्रितं, सुन्दरं, स्वतन्त्रं शिल्पं वालुकाशिलानिर्मितं अस्ति ।परवर्तीशिल्पेषु अपि अयं दृश्यते, आकारस्य, अलङ्कारस्य च विश्लेषणेन सामान्यतया द्वितीयशताब्द्याः ई. इत्यस्य दीदारगञ्जयक्षी अद्यत्वे अन्यैः समानसौन्दर्यस्य शिल्पैः सह दृश्यते, यथा लोहानीपुरस्य सिंहाशोकस्तम्भः, रामपुरवावृषभराजधानी च, एतानि सर्वाणि "मौर्य" शिल्पस्य उत्तमाः उदाहरणानि मन्यन्ते। मौर्यशिल्पानां लक्षणं भवति यत् बालुकाप्रस्तरस्य उच्चपॉलिशकरणम् कृत्वा प्राकृतिकविषयाणां चित्रणे विस्तरेण ध्यानं दीयते। शिल्पानां स्मारकीयतायाः उपरि अपि ध्यानं दीयते यतो वंशीयवर्गाणां तात्पर्यं भवेत् । यतो हि सर्वा कला राजनैतिकशासकस्य समर्थनेन निर्मीयते अतः इति क्रियते। अतः अद्यत्वे भारतीयकलाविद्वांसः प्रायः कलाकृतीनां कृते "मौर्य" इत्यादीनां वंशानां प्रयोगं कुर्वन्ति।

भारतीयसंस्कृतौ विवाहः

विवेक कुमार यादव
बी. ए. प्रोग्राम (तृतीय वर्ष)

विवाहः एकः अनुष्ठानः यस्मिन् द्वयोः जनानां जीवनस्य नूतनः अध्यायः आरभ्यते । अत्र परिवारद्वयोः सम्बन्धनिर्माणम् भवति।सम्बन्धनिर्माणम् इत्यर्थः प्रेम, सम्मानः, सहकारः चास्ति ।

अस्य इतिहासः अतीव प्राचीनः अस्ति, भारतीयसभ्यतायाः महत्त्वपूर्णः भागः इति मन्यते । प्राचीनकाले विवाहः समाजे स्थिरतायाः, सामञ्जस्यस्य च साधनम् आसीत् ।

सामाजिक-आर्थिक-धार्मिक-महत्त्वस्य अतिरिक्तं विवाहः पारम्परिक-प्रक्रिया अपि अस्ति, या विवाहे सुरक्षां, सामञ्जस्यं च निर्वाहयितुं साहाय्यं करोति।

विवाहसमारोहे विविधाः संस्कृतयः, परम्पराः, रीतयः च सन्ति । एष समारोहः भिन्न-भिन्न-भूमिकाभिः कार्यक्रमैः च आचर्यते, यः विवाहित-परिवारस्य सदस्यानां मध्ये नूतन-सम्बन्धः स्थापयितुं साहाय्यं भवति।

सनातनधर्मे विवाहाः अष्टविधाः सन्ति-

(१) ब्रह्मविवाहः -

सद्रीतिस्वभावयुक्तायाः सुकुलनाम्नायाः च कन्यायाः सम्मत्या विवाहः वैदिकब्रह्मविवाहः इति उच्यते । अस्मिन् सूत्रबद्ध-संस्कार-प्रयोगेन करणेन बाध्यता न भवति, एषः विवाहः कुलगोत्रयोः विशेषतया ध्यानं दत्त्वा शुभसमये क्रियते।

(२) दैव विवाह :-

भविष्यपुराणे जगतपिताब्रह्मानुसारेण विवाहस्य अष्टप्रकारा भवन्ति यत्र यज्ञे सम्यक्प्रकारेण कर्म कुर्वन् ऋत्विजं अलंकृत्वा कन्यादानं क्रियते तद्दैव विवाहः उच्यते।

(3) आर्ष विवाह :-

यत्र वरात् एकं वा द्वौ वा गोवृषभौ गृहीत्वा धर्मार्थं पूर्णविधिना कन्यायाः समर्पणम् क्रियते स आर्षविवाहः इति कथ्यते।

(४) प्रजापत्य विवाह :-

प्रजापत्यविवाहे कन्यायाः सहमतिं बिना तस्याः विवाहः अभिजात्यवर्गस्य वरेण सह क्रियते । यथा कृष्णजाम्बवतीविवाह : , कृष्णसत्यभामाविवाहः ।

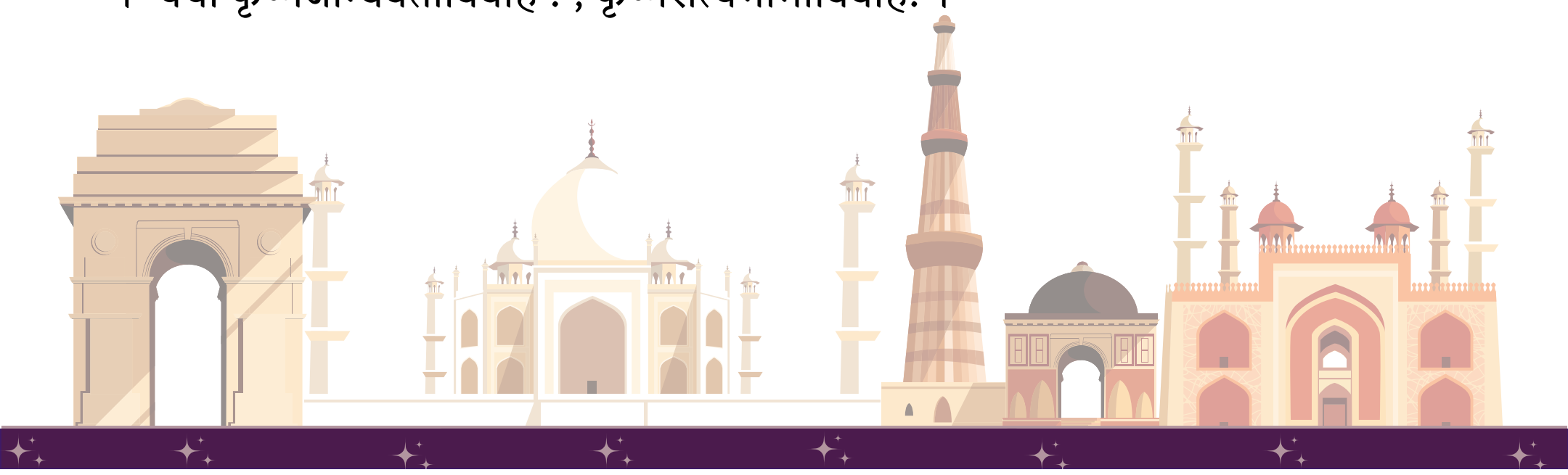

(5) गान्धर्वविवाह :-

अस्मिन् प्रकारे विवाहे वरकन्ययोः विवाहः केवलं पारस्परिकसहमत्या एव भवति।

(6) राक्षसविवाह :-

कन्यायाः शारीरिकताडनं कृत्वा, रूदन्तीम् कन्यां अपहृत्य तया सह विवाहकरणम् "राक्षस - विवाह" इत्युच्यते।

(७) पैशाचविवाह :-

सुप्तायाः व्यसने निमग्नायाः मानसिकरूपेण ऊनायाः कन्यायाः परिस्थितेः लाभं नीत्वा पुनश्च तया सह शारीरिकसंबंधम् स्थाप्य विवाहकरणम् पैशाचविवाहः उच्यते।

(८) आसुरविवाहः-

अस्मिन् प्रकारे विवाहे बालिकायाः कुटुम्बकाय दहेजरूपेण अतिधनं दीयते । अनेन प्रकारेण कन्यायाः क्रयम् कृत्वा तस्या इच्छामुपेक्ष्य तस्याः विवाहः क्रियते ।

अधुना आधुनिकतायाः व्यावसायिकीकरणस्य च अस्मिन् युगे विवाहपरम्परायां बहवः परिवर्तनाः अभवन्, येन जनाः स्वस्य प्राचीनविवाहसंस्कृतेः विस्मरणं कुर्वन्ति । अतः अस्माकं सर्वेषां दायित्वम् अस्ति यत् एकीभूत्वा युवासमाजः अस्माभिः अस्माकं भारतीयसंस्कृतेः विषये अवगतः करणीयः।

अस्माकं संस्कृतिः विविधतायां एकता

आयुष पाण्डेय
बी. ए. प्रोग्राम (तृतीय वर्ष)

संस्कृतिः कस्यचित् देशस्य, जातेः, समुदायस्य च आत्मा अस्ति। संस्कृतिः कस्यचित् देशस्य, जातेः, समुदायस्य वा सर्वाणि मूल्यानि प्रकाशयति येषां आधारेण जनाः स्वादर्शान्, जीवनमूल्यानि इत्यादीनि च निर्धारयन्ति।

अत एव व्यक्तेः तादात्म्यं तस्य संस्कृतौ भवति तथा च अत्र संस्कृतिषु मनुष्यस्य स्वभावः, भोजनाभ्यासः, वस्त्रं, श्रद्धा, गीतानि, भाषा इत्यादयः तत्त्वानि समाविष्टानि भवन्ति।

आचार्यनरेन्द्रदेवस्य मते - "संस्कृतिः मानवचित्तस्य संवर्धनम् करोति। मानवमनसः निरन्तरं संवर्धनं संस्कृतेः मूलम्।"

अस्माकं भारतीयसंस्कृतिः अतीव विशिष्टा अस्ति यतो हि अस्माकं संस्कृतिः प्राचीनतमा शाश्वती च अस्ति ।

प्राचीनत्वात् अतिरिच्य अनेकाः भाषाः, धर्माः, समाजाः, अन्नं, वस्त्रं, साहित्यं, प्रदर्शनकला, दृश्यकला, मनोरञ्जनं, क्रीडाः च सन्ति, परन्तु एषा विविधता अस्माकं दुर्बलता भवितुं नार्हति अपि तु बलमेव ददाति।

अत एव वयं अस्माकं विविधतायाः कारणात् अधिकं शक्तिशालिनः भवेम।अस्माकं संस्कृतिः सूत्रवत् अस्ति या अस्माकं विविधतारूपमौक्तिकान् मालारूपेण धारयित्वा अस्मान् बध्नाति अर्थात् विविधतायां एकतायाः भावः सृजति।

विविधतायाः कारणम्

भारतस्य भौगोलिकं स्थानं, जलवायुः, तस्य अर्थव्यवस्थायाः क्षेत्रीयलक्षणं च एतस्य विविधतां जनयन्ति ।

अत एव एकस्यैव भारतस्य नाना प्रादेशिकभौगोलिकस्थितेः कारणात् भिन्नाः आहारव्यवहाराः, वस्त्राणि च जातम् । यस्मात् कारणात् अस्माकं संस्कृतिः निर्मितवती।बाह्यसंस्कृतेः आगमनेन अनेकानि नवीनसंस्कृतयः जाताः येन समये समये अस्माकं सांस्कृतिकतत्त्वेषु परिवर्तनं जातम्। प्राचीनकालात् "वसुधैव कुटुम्बकम्", "अतिथि देवो भव" इत्यादयः भावनाः अस्माकं भारतीयसंस्कृतेः अभिन्नः भागः अस्ति, यस्य परिणामेण अस्माकं देशे बहव्यः संस्कृतयः आगताः।

परन्तु अन्ततः अस्माकं संस्कृतिषु मिश्रणम् जातम्, अतः एव इकबाल महोदयेन उक्तं - "एकं वस्तु अस्ति यतः अस्माकं अस्तित्वं क्षीणं न भवति। अस्माकं शत्रवः शताब्दितः परितः भ्रमन्ति।"

विविधतायां एकता अर्थम्

विविधतायां एकताशब्दस्य वास्तविकः अर्थः स्थायिभेदानाम् भावेऽपि एकतायाः अथवा अखण्डतायाः अवस्थां भवति ।

संविधानस्य सन्दर्भे विविधतायां एकता

यथा अस्माकं संस्कृतिः अस्मान् नैतिकसत्यमार्गं अनुसरणं कर्तुं प्रेरयति तथा अस्माकं संविधानम् अपि नैतिकतायाः भावम् यच्छति।
एवं संविधानस्य भारतीयसंस्कृतेः च सम्बन्धः अस्ति तथा च अस्मिन् संविधाने अस्माकं विविधतायां एकता वर्तते।

भारतीयसमाजस्य सन्दर्भे विविधतायां एकता

अत्र विभिन्नधर्मस्य, विविधसांस्कृतिकमूलस्य च जनाः निवसन्ति । भारतं धर्मनिरपेक्षदेशत्वात् ते यत्किमपि विश्वासं कुर्वन्ति तदेव अनुसरन्ति । अत्र जनाः परस्परं प्रशंसन्ति, विविधसंस्कृतीनां, भाषाणां, विश्वासानां च भावेऽपि प्रेम्णः भ्रातृत्वस्य च वातावरणे जीवन्ति । देशस्य असंख्यसमुदायस्य कृते प्रतिवर्षं त्रिंशत्तः अधिकाः नूतनाः उत्सवाः आयोजिता भवन्ति । एतासां विषमतानां भावेऽपि भारतीयजनाः एकतायाः यथार्थभावनाम् प्रदर्शयन्ति ।

समस्या एवं समाधानम्

अद्यत्वे अस्माकं समाजे मनुष्यः स्वसंस्कृतेः विस्मरणं करोति, यस्मात् कारणात् केनचित् असामाजिकव्यवहारेण लघुविषयेषु भ्रातृणां मध्ये दूरी भवति।
अतः अद्यकाले अस्माभिः भ्रमः परिहर्तव्यः येन युवानः सामञ्जस्यस्य वातावरणं निर्वाहयितुं शक्नुवन्ति तथा ।एतत् तदा एव सम्भवति यदा वयं सर्वे मिलित्वा सामाजिकैकतायाः कृते प्रयत्नशीलाः भवेम।

भारतीयसंस्कृतौ विवाहपद्धतिः

आयुष मौर्य
बी. ए. प्रोग्राम (तृतीय वर्ष)

भारतीयसंस्कृतिः भारतीयानां जीवनपद्धतिः । भारतीयसंस्कृतौ विवाहः एकः संस्कारः अस्ति यः मानवजीवनं परस्परं जीवितुं, सार्धम् गन्तुं, सार्धम् भोजनं कर्तुं, सार्धम् जीवितुं च शिक्षयति। सनातनधर्मे विवाहः षोडशसंस्कारेषु अन्यतमः इति मन्यते । विवाहः शब्दस्य शाब्दिकः अर्थः विशेषदायित्ववहनं भवति। भारतीयसंस्कृतेः अनुसारेण विवाहः केवलं शारीरिकः सामाजिकः वा अनुबन्धः न भवति अपि तु पतिपत्नीयोः आध्यात्मिकोन्नतेः कारकम् भवति।

उक्तम् च

'धन्यो गृहस्थाश्रमः'

अतः सनातनविवाहे शारीरिकसम्बन्धापेक्षया पतिपत्नीमध्ये आध्यात्मिकसम्बन्धः अधिकः भवति अतः अयं सम्बन्धः अतीव पवित्रः इति मन्यते ।

विवाहः नियमानाम् आचारः निर्दिशति यत् कः व्यक्तिः केन सह विवाहं करिष्यति, केन प्रकारेण विवाहः भविष्यति, विवाहः कस्मिन् परिस्थितौ भविष्यति इति निर्धारयति | सनातनसमाजस्य विवाहिता महिला अत्यन्तं आदरपूर्वकं दृश्यते ।

सनातनधर्मे चत्वारः पुरुषार्थाः अर्थात् धर्मः, अर्थः, कामः, मोक्षः च विहिताः सन्ति । विवाहानुष्ठानस्य उद्देश्यं 'कामस्य' प्रयासं सम्पन्नं कृत्वा ततः क्रमेण 'मोक्षम्' प्रति गमनम् ।

भारते विभिन्नेषु सामाजिकसांस्कृतिकसमूहेषु विवाहसम्बद्धाः भिन्नाः पारम्परिकाः अवधारणाः, मूल्यानि, रीतिरिवाजाः, व्यवहाराः च सन्ति । तेषु महत्त्वपूर्णं सनातनधर्मे विवाहस्य वर्णनं एवमस्ति :-

सनातनधर्मे विवाहसंबद्धाः अनेके रीतयः, संस्काराः च सन्ति । भारतीयपरम्परायां मूलभूता एषा प्रथा विभिन्नक्षेत्रेषु अधिकांशतः समानम् एव। केवलं तेषां निष्पादनस्य मार्गः भिन्नः अस्ति। सनातनविवाहस्य केचन रीतियः सन्ति तेषां प्रत्यक्षम् अनुभवं अहम् स्वकीयं अग्रजस्य विवाहे कृतवान्।

यथा :-

लग्नपत्रिका

यदा वरवधूकुटुम्बिनः सम्मता भवन्ति तदा ते परस्परं लग्नपत्रिकां ददति यस्मिन् विवाहस्य तिथयः विशेषसमयः च भवति ।

हवनकर्म (कंकन - डोरे)

विवाहात् कतिपयदिनानि पूर्वं एषः संस्कारः क्रियते ।

अस्मिन् वरवध्वोः हस्तेषु पवित्रसूत्रबंधनम् भवति। अनेन कर्मणा विवाहसमारोहे विघ्नाः न भविष्यन्ति इति विश्वासः क्रियते ।

* हरिद्रालेपनम्*

अस्मिन् कर्मकांडे विवाहसंस्कारे वरवधूभ्यां हरिद्रातैले समर्प्येते ।

मदयन्तिका (मेहंदी)

विवाहात् पूर्वं आयोजिते मदयन्तिकासमारोहे परिजनाः सौभाग्यस्य चिह्नरूपेण हस्तेषु मदयन्तिकाम् रचयन्ति।

संगीत कार्यक्रमः

संगीतसमारोहे वरवधूपरिवारः गीतानि समर्पयन् नृत्यति। संगीतसमारोहस्य उद्देश्यं सम्पूर्णतया आनन्दाय एव भवति।

विवाह -शोभायात्रा

विवाहयात्रायां वरः विवाहाय समूहेन परिवारेण,सम्बन्धिभिः मित्रैः सह च गच्छति, यत्र बहवः संस्काराः क्रियन्ते ।अस्मिन् काले वरवध्वोः कुटुम्बके अपि मिलतः । वरः द्वारं प्राप्तमात्रेण वधूपरिवारेण तस्य हार्दिकं स्वागतं भवति, तदनन्तरं अन्ये विवाहविधयः अपि भवन्ति ।

कन्यादानम्

कन्यादानं विवाहे महत्त्वपूर्णः संस्कारः अस्ति।अस्मिन् संस्कारे कन्यायाः पिता तस्याः हस्तं वरस्य हस्ते स्थापयति। एषः संस्कारः नूतनजीवने प्रवेशस्य संकेतं ददाति ।

सप्तपदी

मण्डपे अग्निकुण्डे अग्निं प्रज्वाल्य वधूवधूः अस्याग्नेः सप्तपरिक्रमणं गृह्णन्ति, एतेषां सप्तपरिक्रमणानां सह सप्तप्रतिज्ञाः अपि परस्परं ददति।

एवं प्रकारेण भारतीयसंस्कृतौ सनातन धर्मे विवाहस्य पद्धतिः महत्त्वपूर्णं स्थानं वर्तते यस्मिन् प्रत्येकस्य संस्कारस्य स्वकीयं महत्त्वम् अस्ति ।

भारतीया संस्कृतिः

महिमा
बी. ए. प्रोग्राम (प्रथम वर्ष)

'भारतीयसंस्कृतिः' विश्वस्य प्राचीनतमा समृद्धा च संस्कृतिः । विश्वस्य सर्वसंस्कृतीनां जननी इति कथ्यते। जीवनकला भवतु, विज्ञानस्य राजनीतिक्षेत्रं च भवतु, भारतीयसंस्कृतेः सर्वदा विशिष्टं स्थानम् वर्तते । अन्यदेशानां संस्कृतिः कालप्रवाहेन नष्टाः भूताः, परं भारतस्य संस्कृतिः प्राचीनकालात् एव पारम्परिकसत्त्वेन अमरः एव अस्ति |

भौगोलिकदृष्ट्या भारतदेशः विविधतायाः देशः अस्ति तथापि सांस्कृतिकदृष्ट्या प्राचीनकालात्, एकत्ररूपेण विद्यमानः अस्ति । भौगोलिकविविधतायाः अतिरिक्तं आर्थिकी-समाजिकी-विविधता अपि अस्मिन् देशे विद्यते।

वस्तुतः एतेषां वैविध्यकारणात् भारते बहवः सांस्कृतिक्यः उपधाराः विकसिताः, प्रफुल्लिताः च अभवन् । भारते अद्वितीयसांस्कृतिकप्रभुत्वं वर्तते ।

वृद्धानां प्रति आदरः, श्रद्धा, आध्यात्मिकता च भारतीयसंस्कृतेः महत्वपूर्णाः सिद्धान्ताः सन्ति। वृद्धानां आगमनसमये स्थानं त्यक्त्वा, प्रथमं तेषां कृते स्थानं भोजनं च पृच्छन्तु इत्यादीनि क्रियाकलापाः प्रायः अस्माकं दैनन्दिनकार्यक्रमे दृश्यन्ते, ये अस्माकं संस्कृतेः अभिन्नाः भागा : सन्ति ।

वयं सर्वेषां वृद्धानां, महापुरुषाणां, च पादौ स्पृशामः तेषां आशीर्वादं प्राप्नुमः। मनसि, शरीरे, वाक्ये, विचारे, वचने, कर्मणि च शुद्धिः अस्माकं कृते महत्वपूर्णा वर्तते । शून्यस्य अवधारणां ओम् इत्यस्य मौलिकध्वनिं च भारतेन जगति प्रसारिता ।

अस्माभिः कदापि कठोरभाषायाः अपशब्दस्य वा प्रयोगं न करणीयम्। वामहस्तेन परेषां द्रव्यदानं अपमानरूपं स्मृतम् । न जिघ्रयेत् पुष्पाणि देवदेवीनिवेदनार्थम् । भारतीयसंस्कृतिः स्थिरा अद्वितीया च अस्ति, तस्याः संरक्षणस्य दायित्वं वर्तमाने सर्वेषामेव अस्ति । राष्ट्रस्य संस्कृतिः तस्य जनानां हृदये आत्मान्येव निवसति ।

भारतीयसंस्कृतेः निम्नलिखितगुणाः सन्ति-

- निरन्तरता - भारतीयसंस्कृतेः एक महत्वपूर्ण वैशिष्ट्यं तस्याः निरन्तरता अस्ति।

-प्राचीनता- विश्वस्य प्राचीनतमासु संस्कृतिषु अन्यतमा इति मन्यते अद्यत्वेऽपि भारतस्य संस्कृतिः, भारतीयसंस्कृतेः प्राचीनता, वेदानां प्रामाणिकता; महावीरस्वामी-गौतमबुद्धयोः अहिंसा-शान्ति-देवताः, समाजः, संस्काराः इत्यादयः भारतीयसंस्कृतौ दृश्यन्ते ।

वेद-उपनिषद-पुराण, इत्यादीनि साहित्यानि महत्वपूर्ण मन्यते।

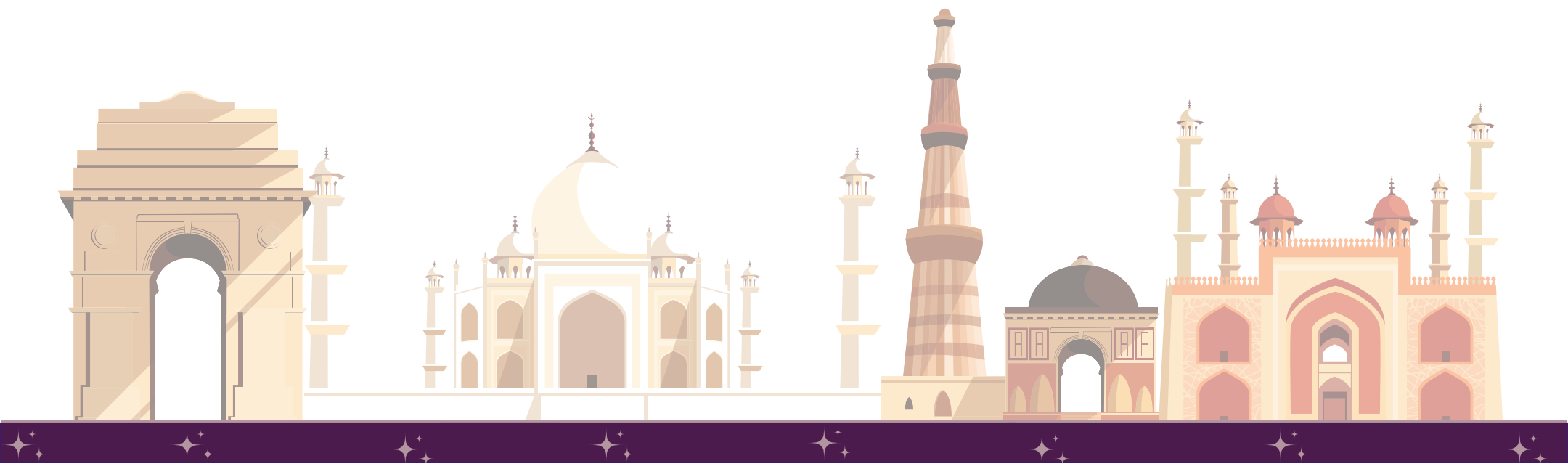

• धर्मस्य प्रधानता

भारतीय संस्कृतेः धर्मस्य प्रधानता महत्वपूर् । भारते प्राचीनकालात् धर्म : प्रमुख : अस्ति प्रत्येकं क्षेत्रं धर्मेण सह सम्बद्ध भवति, भवेत, जातिव्यवस्था वा आश्रमव्यवस्था, विवाहसंस्कास्यु कृते विश्वास: अस्ति न केवलम अपितु ईश्वरस्य गृठे एव भवति ।

सहिष्णुता

भारते सर्वेवा समुदायानाम् जना : मिलित्वा कार्यः कुर्वन्ति ।स्वीकृत सहिष्णुताया : सुंदर उदारहणं अशोकस्य द्वादश आज्ञापत्रे आप दृश्यते ।

"जनाः केवलं स्वसमुदायस्य आदरं कुर्वन्तु, अन्य समुदायस्य अकारणात आलोचनां न कुर्वन्तु । यः व्यक्तिः तत् करोति, सः स्वसमुदायस्य हानिं करोति ।' समुदायः अपि "

कर्मवादः

भारतीय आर्यसंस्कृत्या विश्वसंस्कृतेः कृते कर्मवादस्य मूलमन्त्रः दत्तः अस्ति ।श्रीकृष्णः श्रीमद्भगवद्गीतायां उक्तवान् अस्ति यत् कार्यं कुर्वन् एव तिष्ठन्तु न तु परिणामस्य इच्छां कुर्मः ।

सांस्कृतिक- एकता अत्र सांस्कृतिकैकता भिन्नजातीय- धर्माणाम् मध्ये स्पष्टतया दृश्यते। आस्मां उत्सवाः जीवनशैली वस्त्राणि भोजनानि आभूषणानि कलाः इत्यादयः सर्वे भारतस्य सांस्कृतिकैकतायाः विषये वदन्ति ।

भारतीया भाषासंस्कृतिः

अशोक कुमार मीणा
बी. ए. प्रोग्राम, (प्रथम वर्ष)

भाषाप्रान्तेषु विभक्तं भारतदेशः कश्मीरतः कन्याकुमारीपर्यन्तं एकः अस्ति । अस्य एकतायाः सुदृढीकरणे क्षेत्रीयसंस्कृतीनां महती भूमिका अस्ति । विभिन्नभाषाभाषीणां पटात् निर्मितः प्रादेशिकसंस्कृतेः पृष्ठभागः समानः एव । एतत् विविधतायां एकतां वदति।भौगोलिकस्थितेः, भाषाणां विविधतायाः कारणात् यद्यपि राज्यस्य जनानां वस्त्र-आहार-संस्कृतौ किञ्चित् भेदं पश्यामः, परन्तु समग्रतया एताः बोलीः भाषाः च स्वसांस्कृतिकमूल्यानि दृढतया धारितवन्तः—तथा च मुगलानाम् आक्रमणं वा आङ्ग्लानां दासत्वं वा, वयं प्रत्येकस्मिन् प्रतिकूलपरिस्थितौ अस्माकं सांस्कृतिकविरासतां रक्षितवन्तः, अस्माकं सांस्कृतिककिरणानाम् उज्ज्वलधाराभिः निराशायाः अन्धकारं छिन्नं कृतवन्तः।

संस्कृतिः किम्, भाषायाः संस्कृत्या सह कः सम्बन्धः ? संस्कृतिः अतीव विस्तृतः शब्दः अस्ति यस्य प्रयोगः अनेकेषु भिन्नेषु च अर्थेषु कृतः अस्ति। सरलशब्देषु संस्कृतिः चिन्तनस्य, व्यवहारस्य, आचरणस्य च शैली अस्ति या अभ्यासद्वारा प्रकृतिः भवति । अस्माकं सामाजिकविश्वासाः, रीतिरिवाजाः, परम्पराः, धार्मिकाः विश्वासाः च सर्वे तत्र समाविष्टाः सन्ति । लोकभाषायां वयं एतान् संस्कारान् वदामः। संस्काराः संस्कृतिं कुर्वन्ति। एतानि मूल्यानि अस्मान् निजभाषातः प्राप्नुवन्ति तथा च भाषा गृहात्, परिवारात्, समाजात्, पर्यावरणात् च निर्मितं भवति। यदि आदर-सम्मान-वाचकाः शब्दाः सन्ति तर्हि तां भाषाभाषीणां परेषां प्रति आदरः, व्यवहारे विनयः च भविष्यति ।

भाषायाः कार्यं मनुष्यं तर्कशीलं ज्ञानी च कर्तुं भवति। मानवः, देशभक्तः, देशभक्तः वा स्वपरिवारस्य गौरवम् आनयन् व्यक्तिः तदा एव कुलदीपकः भवति यदा सः स्वस्य वाक्-आचरणयोः संस्कृतः भवति । अन्येषु शब्देषु, कस्यापि समाजस्य राष्ट्रस्य वा मूल्यानां वा संस्कृतेः वा बलं प्रभावशीलता च भाषायाः महत्त्वपूर्णा भूमिका भवति ।यदि अद्यपर्यन्तं भारतीयसंस्कृतिः अक्षुण्णः, प्रबलः, प्रभावशालिनः च अस्ति तर्हि तस्य मूलं अस्माकं वैदिक-भारतीयभाषाः सन्ति, येषु 'सर्वे सुखिनः भवन्तु' इत्यस्य इच्छा, आत्ममुक्तिभावनाः च निहिताः सन्ति। भारतीयभाषासु लिखितं साहित्यम् अपि एतेषां भावनानां इच्छानां च अभिव्यक्तिः अस्ति, यस्य पठनं ज्ञानं च अस्मान् प्रकाशयति। अत एव विश्वस्य जनाः भारतीयसंस्कृत्या अभिभूताः सन्ति ।

दर्शनक्षेत्रे महावीर-गौतम-सदृशानां धर्मगुरुणां, सांस्कृतिकक्षेत्रे विवेकानन्द-गान्धी-सदृशानां महापुरुषाणां चरित्राणि संस्कृतेः न्यासः सन्ति। अद्य वयं आयातितसंस्कृतेः भाषायाश्च प्रभावे भवामः, अस्माकं युवावर्गः आङ्ग्लभाषायाः माध्यमेन एकां संस्कृतिं स्वीकुर्वन् मोहितः भवति यस्याः आधारः भौतिकवादः अस्ति। तस्य परिणामस्य भयानकतायाः भयभीताः च पाश्चात्त्यदेशाः स्वकीयं आध्यात्मिक-उत्थानार्थं पूर्वदिशि पश्यन्ति । वयं च तस्य आकर्षणे आधुनिकतायाः नामधेयेन गर्वेण ताम् एवं स्वीकुर्मः |

विदेशीभाषायाः अध्ययनं अध्ययनक्षेत्रविशेषे निपुणतां प्राप्तुं कर्तव्यं न तु स्वस्य महिमामण्डनाय । ज्ञानप्राप्तेः उद्देश्यं सामाजिकरूपेण उपयोगी भवति व्यक्तित्वस्य च सम्पूर्णविकासः भवति।

अतः देशस्य भविष्यनिर्माता युवावर्गः स्वसंस्कृतेः भाषायाः च समृद्धीकरणाय विदेशीयभाषायाः ज्ञानं प्राप्नुवन्तु।एवम् कस्यापि संस्कृतिविकासे भाषाणां महत्त्वपूर्णा भूमिका भवति यतोहि भाषा मनुष्यस्य द्वितीया माता भवति । इति।

भारतीयविज्ञानं प्रौद्योगिकीच

तृप्ति सिंह
बी. ए. प्रोग्राम (द्वितीय वर्ष)

विज्ञानं प्रौद्योगिकी च भारतीयसंस्कृतेः अभिन्नं भागं सर्वदा एव अस्ति । तेषु प्राचीनकाले प्राकृतिकदर्शनं यथा कथ्यते स्म, तत् उच्चशिक्षणसंस्थासु कठोररूपेण अनुसृतं भवति स्म । १९०० तमे वर्षे प्रारम्भे अस्माकं स्वतन्त्रतासङ्घर्षेण सह संयोगेन भारतीयपुनर्जागरणकाले भारतीयवैज्ञानिकानां महती उन्नतिः अभवत् । विज्ञाने रचनात्मकरूपेण प्रदर्शनं कर्तुं एषा सहजक्षमता १९४७ तमे वर्षे देशस्य स्वातन्त्र्यानन्तरं संस्थागतव्यवस्थापनेन, दृढराज्यसमर्थनेन च समर्थिता आसीत् ।

भारते ज्योतिषशास्त्रे,बीजगणिते,वनस्पतिशास्त्रे,चिकित्साशास्त्रे महती प्रगतिः अभवत्।शून्यस्य आविष्कारः भारतस्य पिङ्गलार्यचन्द्रशास्त्रेण २०० ईसापूर्वं कृतम्, एतत् प्रथमं पुस्तकं प्रतीयते यस्मिन् शून्यं प्रयुक्तम् अस्ति। ताराणां नक्षत्राणि चन्द्रग्रहाणां गतेः मूलपक्षेषु ज्ञानम् चन्द्रसूर्यग्रहणानां घटनायाः अवधिः च भारतीयशास्त्रेषु वर्णितम्। स्वस्थशरीरस्य लक्षणानि चरकसंहितायां वर्णितानि सन्ति।भारतीय चिकित्साव्यवस्था आयुर्वेदस्य- चरकसंहिता ,अष्टङ्गहृदयचिकित्सा च मुक्तशल्यक्रियाविषये सुश्रुतसंहिता- इत्यादीनां कृतीनां परामर्शः अद्यापि भारतीयचिकित्सकैः क्रियते। भारते श्रीलङ्कादेशे च आयुर्वेदस्य सक्रियरूपेण अभ्यासः भवति तथा च आयुर्वेदस्य विषये अद्यतने रुचिः अभवत्।

पश्चिमे लौह- जस्ता-ताम्र-मिश्रधातुनां च धातुविज्ञाने प्राचीनभारतीयानां योगदानं सौन्दर्यशास्त्रस्य, तान्त्रिककौशलस्य च मिश्रणेन सम्पूर्णे विश्वे स्वीकृतम् अस्ति यत् पीतल-कांस्यनिर्मितकलावस्तुषु प्रतिबिम्बितम् अस्ति।जलनिकासीव्यवस्थाः, नगरनियोजनं, मार्ग-सेतु-मार्ग-बन्दरगाह-निर्माणं सम्बद्धं वास्तुकला , सिञ्चन-कृषि-क्षेत्रे सुविकसित-प्रथाः च समाविष्टाः भव्य-मन्दिर-वास्तुकला अस्माकं प्राचीन-ग्रन्थेषु उल्लिखिताः सन्ति। जहाजनिर्माणस्य, नौकायानस्य च क्षेत्रेषु उत्तमविशेषज्ञता आसीत् । अपि च दक्षिणपूर्व -एशियादेशैः सह सक्रियः समुद्रीयव्यापारः आसीत् । कपास-रेशम-वस्त्रेषु प्राचीन-भारतीय-विशेषज्ञतां, वर्चस्वं च अस्माकं पाश्चात्य-देशेषु विश्वे अपि स्वीकृतम् अस्ति |

स्वातन्त्र्यानन्तरं भारतस्य प्रथमः प्रधानमन्त्री जवाहरलाल नेहरू भारते उच्चशिक्षां विज्ञानं प्रौद्योगिक्यं च प्रवर्धयितुं संशोधनम् कारितवान् ।तकनीकीशिक्षायाः प्रवर्धनार्थं विद्वांसः उद्यमिनः च सदस्यसमित्या भारतीयप्रौद्योगिक्याः संस्थानस्य (IIT) गठनं कृतम् पश्चिमबङ्गस्य खड़गपुरे १९५१ तमे वर्षे अगस्तमासस्य १८ दिनाङ्के शिक्षामन्त्री मौलाना अबुलकलाम आजादेन उद्घाटितः ।

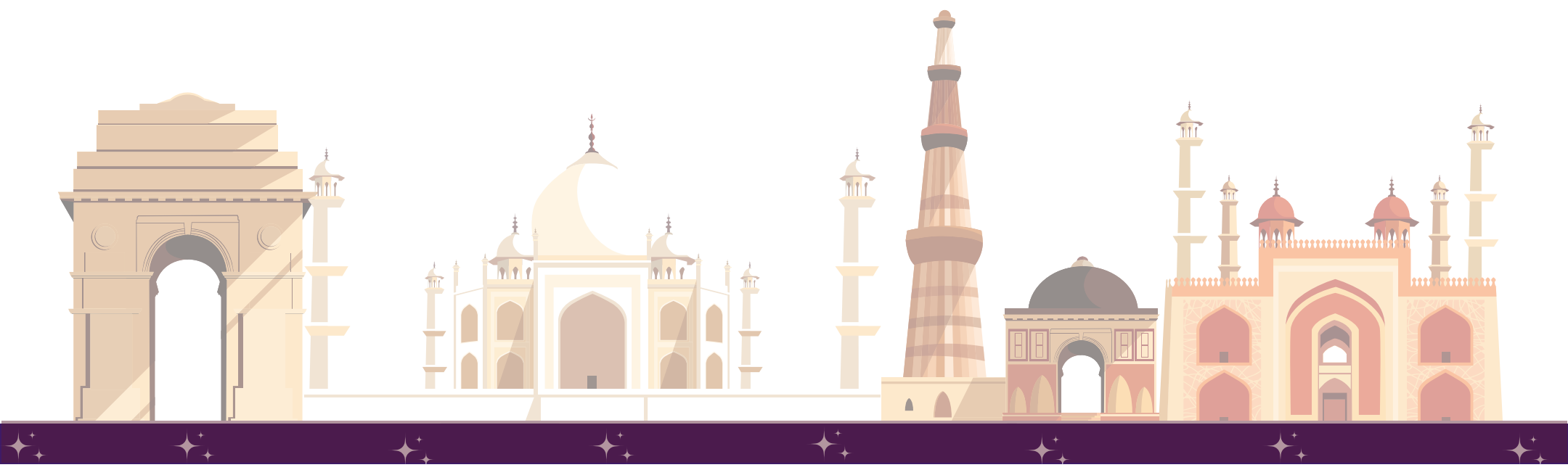

१९६० तमे वर्षे सोवियतसङ्घेन सह निकटसम्बन्धेन भारतीय-अन्तरिक्ष-अनुसन्धान-सङ्गठनेन भारतीय-अन्तरिक्ष-कार्यक्रमस्य तीव्रगत्या विकासः, भारते परमाणु-ऊर्जायाः अनुसरणं च कर्तुं शक्यते स्म, १९७४ तमे वर्षे मे-मासस्य १८ दिनाङ्के पोखरण-नगरे भारतेन प्रथम-परमाणुपरीक्षण-विस्फोटस्य अनन्तरम् अपि सक्षमः कृतः।"मङ्गल्यान्" इति नाम्ना अपि ज्ञायते मंगलस्य कक्षायाः मिशनं भारतीय-अन्तरिक्ष-अनुसन्धान-सङ्गठनेन (ISRO) ५ नवम्बर् २०१३ दिनाङ्के प्रक्षेपितम् । एतत् भारतस्य प्रथमं ग्रहान्तरमिशनम् अस्ति[चन्द्रायणकार्यक्रमेण भारतस्य चन्द्रे स्थलगतं उपस्थितिः,
भारतस्य अन्तरिक्ष-क्षेपणास्त्र-प्रौद्योगिकी-कार्यक्रमेषु महत्त्वपूर्णं योगदानस्य कारणेन डॉ. ए.पी.जे. गगन्यान् भारतीय-अन्तरिक्षयात्रिकान् अन्तरिक्षे प्रेषयितुं भविष्यस्य योजनाकृतं, "विकासे" अन्तरिक्ष-मॉड्यूलम् अस्ति। सूचना प्रौद्योगिकी- भारतं सूचनाप्रौद्योगिक्यां (IT) वैश्विकं अग्रणी अस्ति तथा च TCS, Infosys इत्यादीनि अनेकानि IT कम्पन्यः सन्ति । भारतीय अर्थव्यवस्थायां सूचनाप्रौद्योगिकी-उद्योगस्य प्रमुखा भूमिका अस्ति।
जैव प्रौद्योगिकी - भारते जैवप्रौद्योगिकी-उद्योगः वर्धमानः अस्ति, सः जीनोमिक्स, प्रोटीओमिक्स, औषध-आविष्कारः इत्यादिषु क्षेत्रेषु शोधं कुर्वन् अस्ति ।
• नवीकरणीय ऊर्जा - भारतं सौर-पवन-जलशक्ति इत्यादिषु नवीकरणीय ऊर्जास्रोतेषु निवेशं कुर्वन् अस्ति ।

आव्हानानि भविष्यस्य सम्भावनाश्च

विज्ञानस्य प्रौद्योगिक्याः च क्षेत्रे भारतस्य समक्षं बहवः आव्हानाः सन्ति, यथा- १.
- अपर्याप्तवित्तपोषणम् : अन्येषां बहूनां विकसितविकासशीलदेशानां तुलनायां भारतस्य अनुसन्धानविकासयोः (R&D) व्ययः न्यूनः अस्ति ।

- मस्तिष्कस्य निष्कासनम् : अनेके प्रतिभाशालिनः भारतीयवैज्ञानिकाः अभियन्ताः च उत्तमानाम् अवसराणां अन्वेषणार्थं अन्यदेशान् गच्छन्ति।

- अकुशलसंशोधनमूलसंरचना : विश्वस्तरीयसंशोधनसमर्थनार्थं भारतस्य शोधसंरचनासंशोधनस्यआवश्यकता वर्तते।

- एतासां आव्हानानां अभावेऽपि भारतस्य विज्ञानप्रौद्योगिक्यां वैश्विकनेतृत्वस्य सामर्थ्यम् अस्ति । देशे प्रतिभाशालिनः वैज्ञानिकानां अभियंतानां च संख्याबलम् अस्ति। सर्वकारः अनुसन्धानविकासयोः महत् निवेशं कुर्वन् अस्ति । निरन्तरनिवेशेन संशोधनैः च भारतं आगामिषु वर्षेषु विज्ञानप्रौद्योगिक्यां महत्त्वपूर्णं योगदानं दातुं शक्नोति।

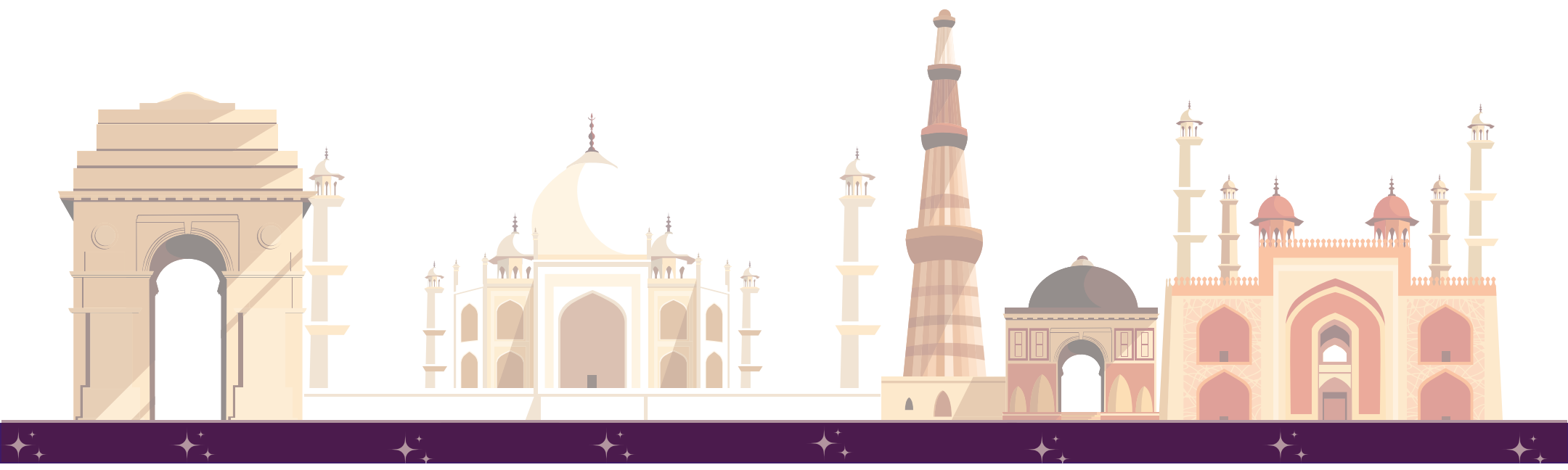

भारतीयसाहित्यं संस्कृतिश्च

आदित्य सिंह कुशवाहा
बी. ए. प्रोग्राम (प्रथम वर्ष)

"वसुधैव कुटुम्बकम्" (समस्त मानव एक परिवार है)।

भारतीयसाहित्यस्य संस्कृतेः च विस्तरेण गहनतया च अध्ययनं क्रियते। भारतीयसाहित्यं हिन्दी-संस्कृत-तमिल- तेलुगु-कन्नड-उर्दू-बङ्गला-गुजराती-मराठी इत्यादिषु भाषासु लिख्यते । संस्कृतसाहित्याध्ययनस्य आरम्भः विश्वसाहित्यस्य प्रथमपुस्तकेन ऋग्वेदेन, तस्य अध्ययनेन च भवति यः भारतीयसंस्कृतेः अभिन्नः भागः अस्ति। गूढ़ार्थस्यअवगमने सहायकः भवति। संस्कृतसाहित्यं प्रायः अधार्मिकं लौकिकं च प्रकृतं भवति, यत्र वैज्ञानिकं आयुर्वेदिकं भाषाविज्ञानं तर्कशास्त्रं दर्शनशास्त्रं, गणितशास्त्रं च इत्यादयः विषयाः सन्ति । भारतीयसाहित्यस्य संस्कृतेः च अध्ययनेन तेषां ऐतिहासिकं, सांस्कृतिकं, भाषावैज्ञानिकं च विकासं अवगन्तुं साहाय्यं भवति ।

संस्कृतसाहित्यस्य उत्पत्तिः अतीव प्राचीनकाले एव अभवत् । अस्य उत्पत्तिः वेदेभ्यः भवति, ये भारतीय उपमहाद्वीपे १५०० ई.पू. ब्राह्मण-उपनिषद-रामायण-महाभारत-पुराण-काव्य-नाट्य-वेदान्त-आदिषु भारतीय-इतिहासस्य विभिन्नेषु कालेषु संस्कृत-साहित्यस्य विकासः अभवत् । संस्कृतसाहित्यस्य एषः विस्तृतः विकासः भारतीयसांस्कृतिकविरासतां महत्त्वपूर्णः भागः अस्ति, येन विश्वसाहित्यम् अपि प्रभावितः अभवत् ।

संस्कृतसाहित्यस्य लक्षणानि अतीव महत्त्वपूर्णानि विस्तृतानि च सन्ति । संस्कृतसाहित्यस्य इतिहासः अतीव प्राचीनः अस्ति तथा च अत्र विविधाः शैल्याः काव्याः च सन्ति ये भारतीयसाहित्यस्य कृते अत्यन्तं महत्त्वपूर्णाः सन्ति। तस्य उन्नतभाषा-व्याकरण-विचारधारायाः च संस्कृतसाहित्यस्य लक्षणेषु महत्त्वपूर्णं योगदानम् अस्ति । एतदतिरिक्तं वेद-उपनिषद-महाभारत-रामायण-पुराण- इत्यादयः अपि संस्कृतसाहित्यस्य विशेषतासु अन्तर्भवन्ति।अपि च, संस्कृतसाहित्ये धार्मिक-दार्शनिक-काव्य-वैज्ञानिक-विचारानाम् समृद्धः भण्डारः अस्ति येन सः विशिष्टः भवति।

वेदाः प्राचीनतमेषु पवित्रग्रन्थेषु अन्यतमाः सन्ति, चतुर्धा विभक्ताः सन्ति – ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः च । वेदानां उत्पत्तिविषये एकः प्रत्ययः अस्ति यत् ऋषयः तपद्वारा ईश्वरस्य वाणीं श्रुत्वा वेदं रचयन्ति स्म । वेदस्य अर्थः 'ज्ञानम्' इति तत्र मनुष्याणां समाजस्य च हिताय ज्ञानम् अस्ति ।वेदाः ब्रह्मणा विरचिताः स चतुर्ऋषिभ्यः एतत् ज्ञानं दत्तवान् ।

अतः अस्माकं भारतीयसाहित्यस्य सौन्दर्यस्य लोकप्रियतायाः च कारणम् अस्ति यत् अस्माकं लेखकाः जीवनस्य गूढ़ार्थम् अपि सहजतया सरलशब्दैः लौकिकप्रयोगमाध्यमेन स्पष्टीकुर्वन्ति।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः।।

(मात्र इच्छा रखने भर से कोई कार्य पूरा नहीं होता, बल्कि उसके लिए उद्यम अर्थात् मेहनत करना जरूरी होता है। ठीक उसी तरह जैसे शेर के मुंह में सोते हुए हिरण खुद-ब-खुद नहीं आ जाता, बल्कि उसे शिकार करने के लिए परिश्रम करना होता है।)

संस्कृतभाषायुताध्येयवाक्येषु प्रतिबिम्बिता भारतीयसंस्कृतिः

दिमित्री मजूमदार , बी.एससी.
संगणक विज्ञान विशेष, और
जगदीश , बी.एससी.
फिजिकल साइंस , इलैक्ट्रोनिक्स (द्वितीय वर्ष)

पश्चिमी संस्कृति और राजनीतिक विचारधारा के लगातार और सर्वव्यापी प्रभाव के मध्य हम अपनी पारंपरिक भारतीय संस्कृति से दूर हो रहे हैं। गहन अवलोकन से एक अलग तथ्य हमारे समक्ष आता है।प्राचीन संस्कृत भाषा, विशेषकर शैक्षिक और कॉर्पोरेट क्षेत्रों में, अभी भी प्रबल रूप से भारतीय संस्कृति को अनुप्राणित कर रही है।भारत के अनेक विश्वविद्यालयों, कॉलेजों और कंपनियों के आदर्श वाक्यों में इसकी निरंतरता सुनिश्चित करती है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं--

आत्मा राम सनातन धर्म कॉलेज

सबसे पहले, हमारे अपने कॉलेज का आदर्श वाक्य, "तेजस्वि नावधीतमस्तु" (Tejasvi Navadhitamastu), एक सामान्य संस्कृत आशीर्वाद है, जो शिक्षा के माध्यम से प्रज्ञान और प्रतिभा की खोज करता है। यह विद्यार्थियों के मन को प्रकाशित करने वाली शैक्षणिक खोज की इच्छा को दर्शाता है, जिससे उन्हें तेजस्वी और ऊर्जावान् ज्ञान प्राप्त हो। इस आदर्श वाक्य का सीधा अर्थ है "हमारी विद्या तेजोमय हो।" यह तैत्तिरीय उपनिषद् से प्रेरित है जो ब्रह्मांड की अंतिम सत्यता (ब्रह्मन), आत्मा (आत्मन्) और सभी प्राणियों की अंतर्संबंधिता की विस्तृत खोज के लिए जाना जाता है। यह शिक्षा और नैतिकता पर महत्वपूर्ण जोर देता है जो एक सुव्यवस्थित समाज की नींव है।

राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान (NIT) त्रिची

NIT त्रिची का आदर्श वाक्य, "तमसो मा ज्योतिर्गमय" (Tamaso Ma Jyotirgamaya), एक गहन वैदिक प्रार्थना को आमंत्रित करता है। यह वाक्य, ज्ञान और प्रज्ञान की खोज करता है, संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है जो अपने छात्रों को अज्ञानता से प्रज्ञान तक मार्गदर्शन करता है। इसका अनुवाद है "अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो।" यह बृहदारण्यक उपनिषद् से प्राप्त है, जो सबसे पुराने उपनिषदों में से एक है, जो वास्तविकता और आत्मा की प्रकृति की खोज करता है। यह मंत्र ज्ञान और प्रज्ञान की विश्वव्यापी खोज को दर्शाता है, ज्ञान और खोज के मार्ग पर प्रकाश डालने पर संस्थान के ध्यान को रेखांकित करता है।

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (AIIMS)

AIIMS का आदर्श वाक्य, "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" (Shariram Adyam Khalu Dharmasadhanam), एक संस्कृत उक्ति है जिसका अर्थ है "शरीर ही धर्म को प्राप्त करने का प्राथमिक साधन है।" यह संस्थान के दर्शन को समेटे हुए है कि शारीरिक स्वयं का रख-रखाव और उपचार अपने कर्तव्यों और नैतिक दायित्वों को पूरा करने के लिए अनिवार्य है। यह उक्ति महाकवि कालिदास के कुमारसम्भव में मिलती है। यह स्वास्थ्य और कल्याण के महत्व को दर्शाता है जो किसी के कर्तव्यों और नैतिक दायित्वों को पूरा करने के लिए आवश्यक है।

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) खड़गपुर

IIT खड़गपुर का मार्गदर्शक सिद्धांत, "योगः कर्मसु कौशलम्" (Yogah Karmasu Kaushalam), का अर्थ है "कर्म में कुशलता ही योग है।" यह आदर्श वाक्य अपने कर्तव्यों को कौशल और समर्पण के साथ पूरा करने के महत्व को उजागर करता है, जो भारतीय दर्शन में गहराई से निहित एक अवधारणा है और शिक्षा और कार्य में एक समग्र दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करता है। यह भगवद गीता से प्राप्त है, विशेष रूप से उस अवधारणा से जो कहती है कि अपने कर्तव्य को उत्कृष्टता के साथ और परिणामों के प्रति आसक्ति के बिना पूरा करना एक प्रकार का आध्यात्मिक अभ्यास और अनुशासन है।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU)

BHU का आदर्श वाक्य, "विद्ययाऽमृतमश्नुते" (Vidyayā'mṛtamaśnute), शिक्षा की परिवर्तनकारी शक्ति को उजागर करता है । यह संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है जो न केवल बौद्धिक विकास को बढ़ावा देता है बल्कि आध्यात्मिक विकास को भी पोषित करता है। इस आदर्श वाक्य का स्पष्टअर्थ है "विद्या द्वारा अमरता प्राप्त की जाती है।" यह ईशावास्योपनिषद् से प्राप्त है, जो यह उल्लेख करता है कि सच्चा ज्ञान आत्मा और अनंत के साक्षात्कार की ओर ले जाता है।

भारतीय जीवन बीमा निगम (LIC)

LIC, का आदर्श वाक्य "योगक्षेमं वहाम्यहम्" (Yogakshemam Vahamyaham) जिसका अनुवाद है "आपका कल्याण हमारी ज़िम्मेदारी है।" यह आदर्श वाक्य भगवद गीता से प्रेरित है, जहाँ भगवान कृष्ण उनके प्रति समर्पित लोगों के कल्याण और सुरक्षा का आश्वासन देते हैं, यह LIC की प्रतिबद्धता को दर्शाता है जो अपने पॉलिसीधारकों के वित्तीय भविष्य और कल्याण को सुरक्षित करने के लिए है। यह संगठन की प्रतिबद्धता को उजागर करता है जो अपने ग्राहकों के हितों और कल्याण की रक्षा करता है।

भारतीय सुप्रीम कोर्ट

भारतीय सुप्रीम कोर्ट का आदर्श वाक्य, "यतो धर्मस्ततो जयः" (Yato Dharmastato Jayah) है। यह सिद्धांत न्याय, सत्य और नैतिक धार्मिकता को बनाए रखने में न्यायपालिका की भूमिका को उजागर करता है, जो भारतीय कानूनी व्यवस्था और समाजिक मूल्यों का आधार है। इस आदर्श वाक्य का अर्थ है "जहाँ धर्म है, वहाँ जीत है।" यह महाभारत से प्राप्त है, भारत के महान महाकाव्य ग्रंथों में से एक, जो अन्याय और अधर्म के खिलाफ न्याय और नैतिकता की विजय को उजागर करता है।

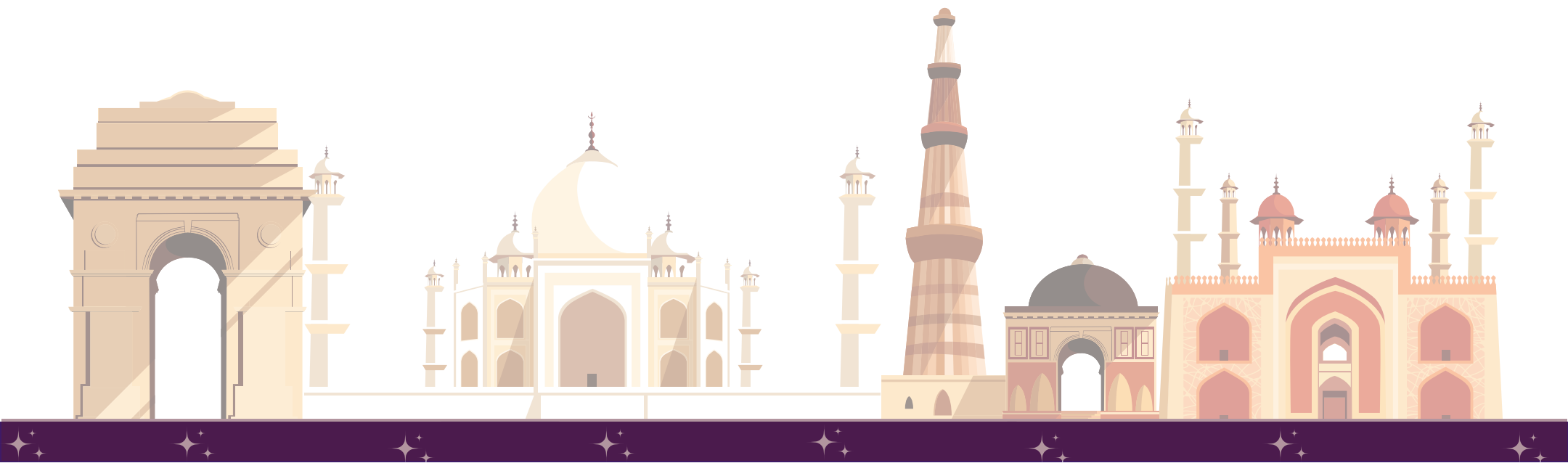

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास (आईआईटी मद्रास) का ध्येय वाक्य है: "सिद्धिर्भवति कर्मजा", जो भगवदगीता से लिया गया है।
"काङ्क्षन्तः कर्मणां सिद्धिं यजन्त इह देवताः।
क्षिप्रं हि मानुषे लोके सिद्धिर्भवति कर्मजा।।"
अर्थात् "यहाँ मनुष्य लोक में जल्दी सिद्धि प्राप्त करने वाले कर्म के द्वारा वे देवताओं को पूजते हैं, क्योंकि सिद्धि कर्म से ही होती है।"

नौसेना का ध्येय वाक्य है- "शं नो वरुणः"
अर्थात् " वरुणदेवता हमें समृद्धि प्रदान करें, "
तैत्तिरीय उपनिषद् में शांति मंत्र के रूप में उपलब्ध है। यह मंत्र समुद्र के देवता वरुण से आशीर्वाद और शांति की प्रार्थना करता है। यह भारतीय नौसेना के शौर्य, सदैव तैयार रहने, और समुद्री सुरक्षा की प्रेरणा को दर्शाता है।

ये संस्थान, शिक्षा, न्यायपालिका, रक्षा, कृषि, और अंतरिक्ष अन्वेषण के क्षेत्रों से, अपने संस्कृत आदर्श वाक्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति की समृद्ध विरासत को दर्शाते हैं। प्रत्येक आदर्श वाक्य एक मार्गदर्शक प्रकाश की तरह काम करता है, संस्थान के मिशन को निर्देशित करता है और भारतीय दर्शन के स्थायी मूल्यों और ज्ञान को प्रतिबिंबित करता है। इस प्रकार, प्राचीन संस्कृत भाषा के ध्येयवाक्यों के माध्यम से भारतीय संस्कृति का प्रकाश एक सतत विकसित होती दुनिया को आलोकित करता है।

भारतीयमन्दिरवास्तुकलायाः वैशिष्ट्यम्

आदर्शकुमार
बी.ए. प्रोग्राम (प्रथम वर्ष)

"प्रत्येकं मन्दिरं इतिहासस्य, संस्कृतेः, आध्यात्मिकतायाश्च अद्वितीयकथां कथयति"।
भारतीयमन्दिरवास्तुकला विविधतायाः सौन्दर्यशास्त्रस्य च विश्ववास्तुकलाक्षेत्रे अद्वितीयं स्थानं धारयति । भारतीयोपमहाद्वीपस्य विभिन्नेषु प्रदेशेषु परिपालिता इयं कला धार्मिकाश्रद्धायाः, कलायाः, संस्कृतेः, इतिहासस्य च सङ्गमस्थानमस्ति । अस्मिन् लेखे वयं भारतीयमन्दिरवास्तुकलायाः मूलभूततत्त्वानां, तस्याः नैकशैल्याः, ऐतिहासिकविकासक्रमस्य च अवलोकनं करिष्यामः ।
भारतीयमन्दिरवास्तुकलायां मुख्यतया गर्भगृहं, मण्डपं, शिखरं च इति त्रीणि मूलभूततत्त्वानि सन्ति । गर्भगृहं मन्दिरस्य पवित्रतमो भागो भवति, यत्र मुख्यदेवता स्थाप्यते । मण्डपमेकं वा अनेकं वा सभागाररूपेण भवति, यत्र भक्तानां प्रार्थना, अनुष्ठानानि च कर्माणि सम्पादितानि भवन्ति । शिखरं मन्दिरस्य उच्चतमो भागो भवति यत् प्रायः आकित्या कोणीयः भवति । इदमेव स्थानं देवस्य दिव्यशक्तेः प्रतीकं मन्यते ।

शैलीवैविध्यम्

भारतीयमन्दिरवास्तुकलाशैली मुख्यतया नागरद्राविडवेसर इति त्रिधा विभक्तुं शक्यते -
1. नागरशैली : उत्तरभारते एषा शैली प्रचुरतया प्राप्यते । अस्याः वैशिष्ट्यं मन्दिरस्य शङ्क्वाकारम् उच्चशिखरं स्वीक्रियते । अस्याः शैल्याः मन्दिरे मण्डपानि अपि भवन्ति, यानि गर्भगृहस्य पुरतः स्थितानि दृष्यन्ते ।
2. द्राविडशैली : एषा शैली मुख्यतया दक्षिणभारते दृश्यते । अस्याः पिरामिडरूपाणि शिखराणि 'विमान' इत्यभिधानेन उच्यन्ते । 'गोपुरम्' इति आख्यानि विशालानि प्रवेशद्वाराणि द्राविडशैल्याः मन्दिराणां वैशिष्ट्यम् सुप्रसिद्धमस्ति ।
3. वेसरशैली : दाक्षिणात्यभारते मध्यभारते च एषा शैली प्रौढत्वं गता । नागरद्राविडशैल्योः मिश्रणम् एषा वास्तुकलाशैली । वेसरशैल्याः मन्दिरेषु उभयोः शैल्योः विशेषताः दृश्यन्ते ।

भारतीयमन्दिरवास्तुकलाविकासयात्रा

भारतीयमन्दिरवास्तुकलानां विकासः वैदिककालात् आरभ्य मध्यकालपर्यन्तं प्रसृतः । अस्याः वास्तुकलायाः विकासाय गुप्तकालः (चतुर्थशताब्दीतः षष्ठशताब्दीं यावत्) स्वर्णयुगं मन्यते । अस्मिन् काले मन्दिराणां परिकल्पना-निर्माण-विधिषु महती उन्नतिः अभवत् । तदनन्तरं चोल-पल्लव-होयसल-इत्यादयः राजवंशाः द्राविडशैलीं अग्रेसारयितुं प्रयत्नानि कृतवन्तः । उत्तरभारते राजपूतवंशाः नागरशैल्याः विकासे प्रशंसनीयं योगदानं दत्तवन्तः । भारतीयमन्दिरवास्तुकला भारतीयसंस्कृतेः विविधतायाः आर्थिकवैभवस्य धार्मिकपरम्परायाश्च मूर्तिमानं रूपं वर्तते । इयं न केवलं श्रद्धाभक्तिकेन्द्रम् अस्ति, अपितु वास्तुकलायाः महत्त्वपूर्णः निधिः अपि अस्ति, यः विश्वधरोहरस्य महत्त्वपूर्णो भागः अस्ति ।

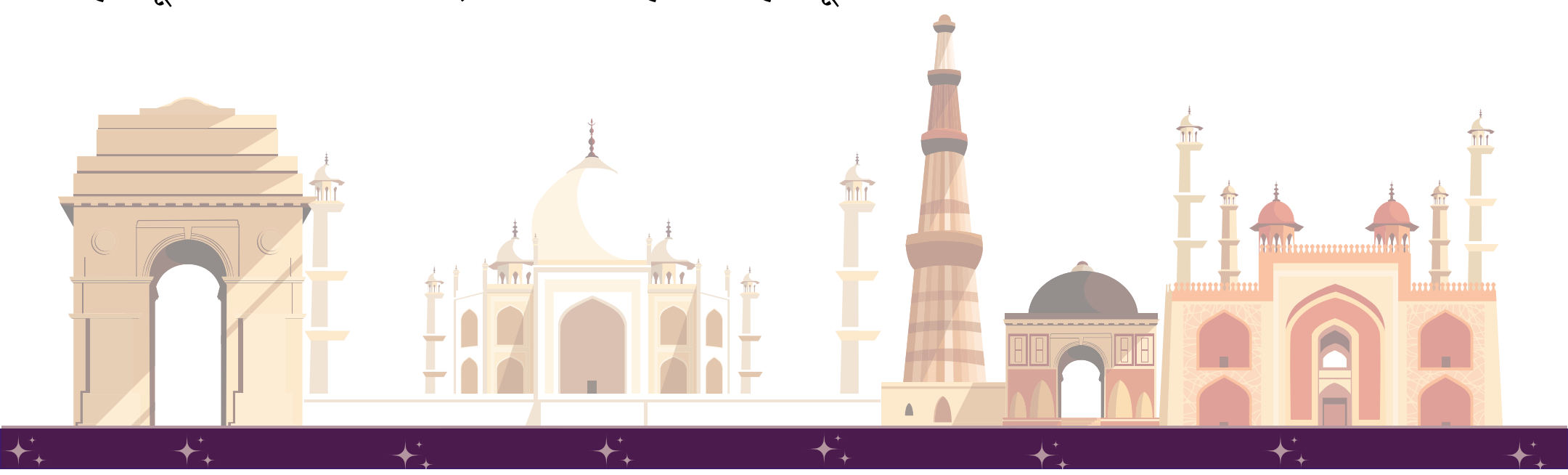

सामाजिकी असमानता

आरुषि
बी. ए. प्रोग्राम (तृतीय वर्ष)

किमपि दोषः इति अवगच्छन्तु,
यदा अङ्कुराः पुष्पीकरणात् पूर्वं शुष्कताम् आरभन्ते।
यदा लघुः शिशुः जगति आगमनात् पूर्वमपि
भीतः भवितुं आरभते।
स्मितं स्मितं कर्तुं अपि पूर्वं
यदा स्मितं निवारितं भवति तदा
किमपि दोषः भवति इति अवगच्छन्तु।

खड्गधारे यदा अश्रुबिन्दवः निःशब्दं भवन्ति।
यदा बालः मातुः पृष्ठतः निगूढः भवितुं आरभते तदा किमपि दोषः इति अवगच्छन्तु।
यदा सम्बन्धाः सुवर्णतुलासु तौल्यन्ते।
यदा कस्यचित् जीवनस्य स्वतन्त्रता
कस्यचित् हस्ते धारिता भवति तदा
किमपि दोषं भवति इति अवगच्छन्तु।

यदा मानवस्वतन्त्रता लिङ्गनामेन मुद्रिता भवति।
शरीरस्य पुरतः पर्दा यदा तस्य अभयस्य प्रमाणं मन्यते तदा किमपि दोषः इति अवगच्छन्तु ।

यदा निर्दोषबालस्य वयः अपि परस्परविग्रहे न गृह्यते।
किमपि दोषः इति अवगच्छन्तु |

यदा जगतः महत्तमं बलं महत्तमं दुर्बलं मन्यते।
तदा किमपि दोषः इति अवगच्छन्तु।

कालम् व्यर्थम् मा करु।

अभिषेक कुमार
बी. ए. प्रोग्राम (तृतीय वर्ष)

श्वः किं भविष्यति को जानाति?कः जीविष्यति ?
कदापि आत्मानं न निवर्तयतु।
सर्वेषां एकस्मिन् दिने मरणम् भविष्यति ।

अमरः असि इति मा मन्यस्व।
कालम् व्यर्थम् मा करु।
ये स्वप्नाः त्वया दृष्टाः
अद्यैव तान् सम्पूर्णं कुरु।
श्वः केन दृष्टः ?

जीवनस्य परं क्षणं यावत्,
अद्भुतं ग्रीष्मकालमिदं जीवनम्,
कालम् व्यर्थम् मा करु।
कालम् व्यर्थम् मा करु।

स्वयमेव अग्रे गच्छतु,
यत्किमपि भवति मा निवर्तयतु,
यत् ते हृदयं कामयति,
अद्यैव सम्पूर्णं कुरु,
कालम् व्यर्थम् मा करु।
कालम् व्यर्थम् मा करु।

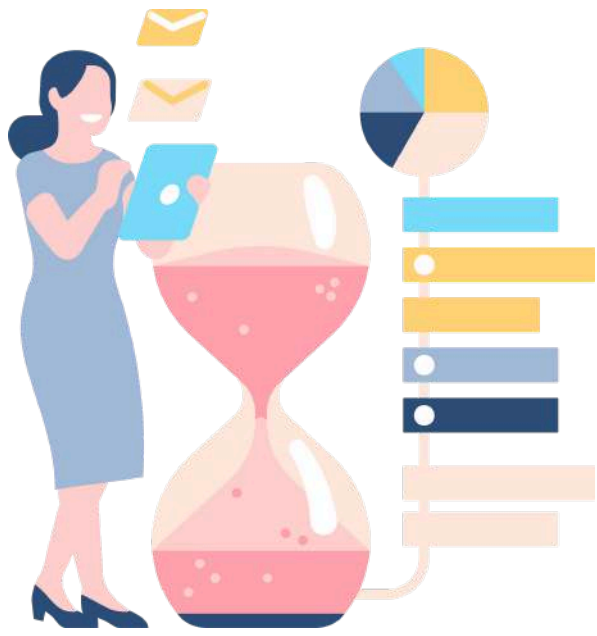

इदं जीवनं प्रहेलिका,
वर्धमानानां जीवनम् मित्रम्,
यदि त्वं निवर्तयसि
तर्हि पश्चातापं करिष्यसि,
प्रतिक्षणं कष्टेन युद्धं कुरु
कालम् व्यर्थम् मा करु।
कालम् व्यर्थम् मा करु।

यः कदापि विश्रामं न कृतवान्,
सः जीवने नाम कृतवान्,
त्व अपि दृढधारा भव,
जीवने संघर्षम् कुरु
कालम् व्यर्थम् मा करु।
कालम् व्यर्थम् मा करु।

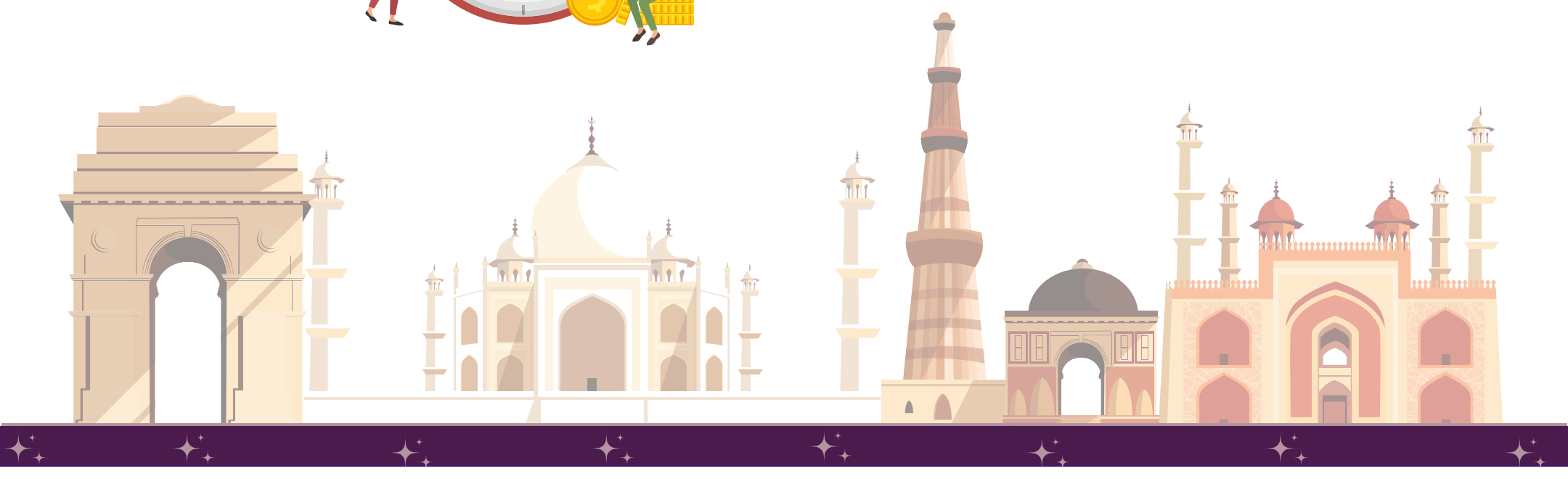

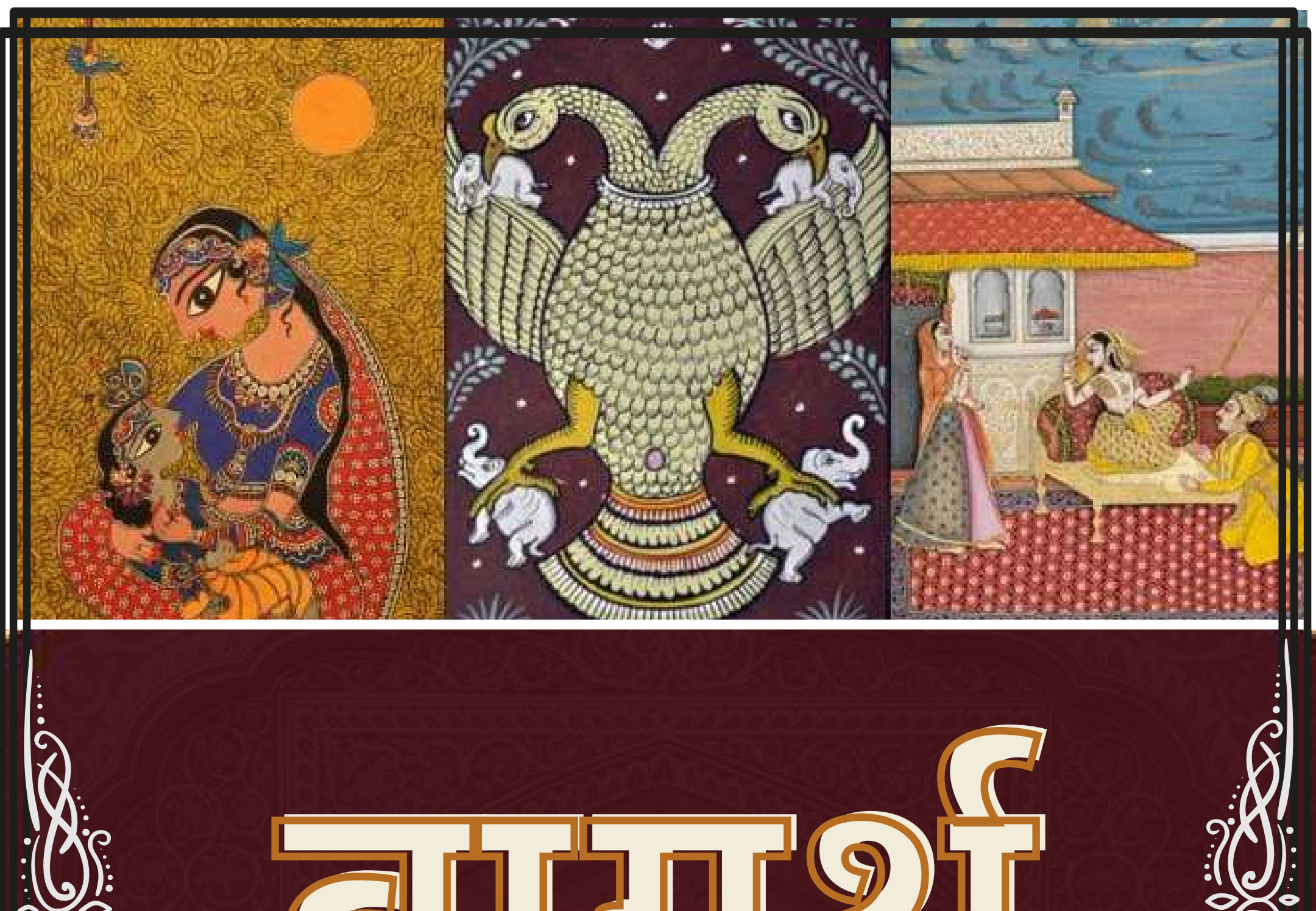

वागर्थ

हिन्दी विभाग

सरयू

अम्बुज प्रताप सिंह
कम्प्यूटर साईनस (तृतीय वर्ष)

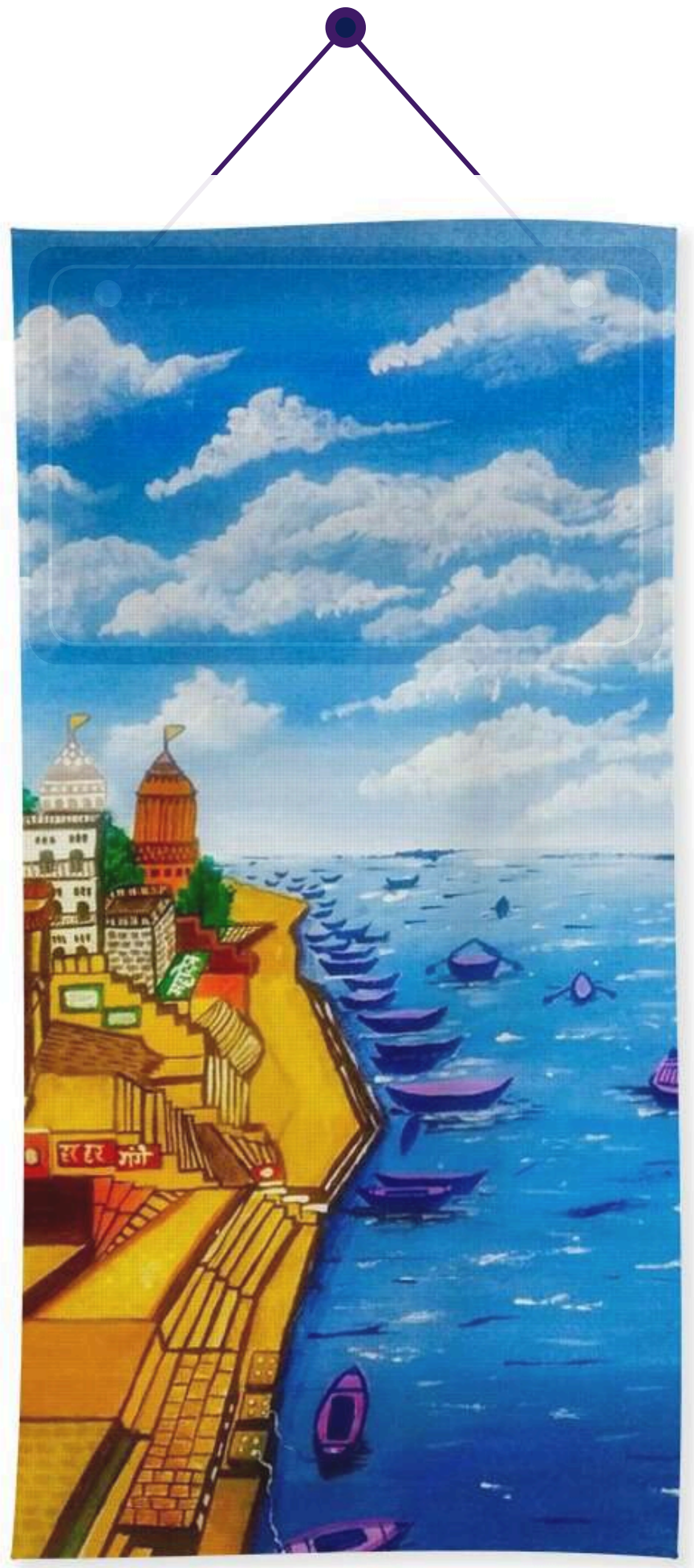

प्रचंड लू के थपेड़ों के बाद!
जैसे पुरवाई हवा बहती है।
वैसे ही शीतलता मिलती है,
सरयू की स्मृति से ।
इसीलिए नेत्रजा कहलाती है
राम के नेत्रों की करुणा से प्रकट हुई,
और वशिष्ठ के संकल्प से अवध में आई
इसीलिए उन्मुक्त वाशिष्ठी सी इठलाती हैं
योध्या की हृदय को विदीर्ण करती हुई,
सरयू का प्रवाह ऐसा लगता है
मानो रघुनंदन का समर्थन कर रहे हों हे निष्पापे।
तुम्हारी निर्मलता को देखकर लगता है !
मानो साक्षात राम ही तुम में बह रहे,
सहस्त्री श्वेत कमल एक साथ।
जिस परम तत्व का वेद भी पार नहीं
पाते हैं वह पुण्य धाम तुम में नहाते हैं
तुम्हारी कल कल कल्लोल वंतिनी
धाराओं ने इस जग को दिखाया है.
कि सब को शांति प्रदान करने वाले
रघुनंदन ने अंततोगत्वा तुम ही में विश्राम पाया है।
हे सरयू !
तुम कितनी करुणामई हो
आज भी निरंतर चल कर मानवता की प्यास बुझाती हो
मृत होने पर जिसको यह संसार भी त्याग देता है
उनको भी तुम हृदय से लगाती हो
वैसे तो तुम्हारा पुत्र हूं
पर मां तुम्हें काला टीका लगाना चाहता हूं
तुम्हें हर बुरी नजर से बचाना चाहता हूँ
तुम्हें बचाना चाहता हूं
उद्द्योगपतियों की शोषण युक्त निगाहों से तुम्हें बचाना चाहता हूं
सरकारी स्याही से हर उस अधमाई ,
जो तुम्हारी अस्मिता के साथ खेलना चाहे
रघुनंदन से मेरी विनती है तुम सदा राममय बनी रहो
हे निष्पापे, तुम यूं ही निर्मल बनी रहो..

भारत का एक हिस्सा यहां भी जीता है

अनुभव सिंह
बी. ए. प्रोग्राम (द्वितीय वर्ष)

सिग्नल पर जब आज मैंने देखा
दो छोटी बच्चियों को
जिनकी उम्र लगभग कुछ 10-12 वर्ष रही होगी
वो दोनों किसी अमीरदार घराने की गाड़ियों पर चढ़कर
एक कपड़े से उनके शीशे पोंछ रही थीं
उस समय आने को तो मेरे मन में हज़ारों ख्याल आ सकते थे
जैसे, ये इस उम्र में स्कूल जाने की जगह यहां क्यूं
इनके मां-बाप कहां हैं, क्या वो भी इन्हीं की तरह कहीं...
कहीं ये अनाथ तो नहीं
लेकिन इन सबको छोड़कर मेरे मन में पहला ख्याल था
कि कहीं सिग्नल पर जल रही बत्ती लाल से हरी ना हो जाए
और गाड़ी में बैठे इनके मालिक
कहीं अपनी गाड़ी को चालू कर आगे ना बढ़ जाएं
तो ये बच्चियां इनके पीछे कहां तक दौड़ेगीं
क्या वे अपनी मेहनत का हक
इनसे वसूल पाएंगी या नहीं...
जब मैं देखता हूं
किसी वृद्ध महिला को
किसी किन्नर को,
देखता हूं जब मैं
उस मां को जो अपने
दो साल के बच्चे को
सीने से चिपकाए हुए
किसी कार के शीशे को
अपने हाथों से खटखटा रही है
तो ऐसा लगता है कि
कोई मेरे सीने पर हथौड़े से वार कर रहा है
और अखबार वाले इन चित्रों का वर्णन करते हुए लिखते हैं
कि देश की छवि बिगाड़ते सड़को पर घूमते भिखारी
असल में देश की छवि को घूसखोर नेताओं से ज्यादा
तो ये मीडिया और अखबार वाले ही बिगाड़ रहे हैं
शरीर को मुरझा देने वाली
इस कड़ाकेदार ठंड में
जब मैं देखता हूं
सिग्नल किनारे

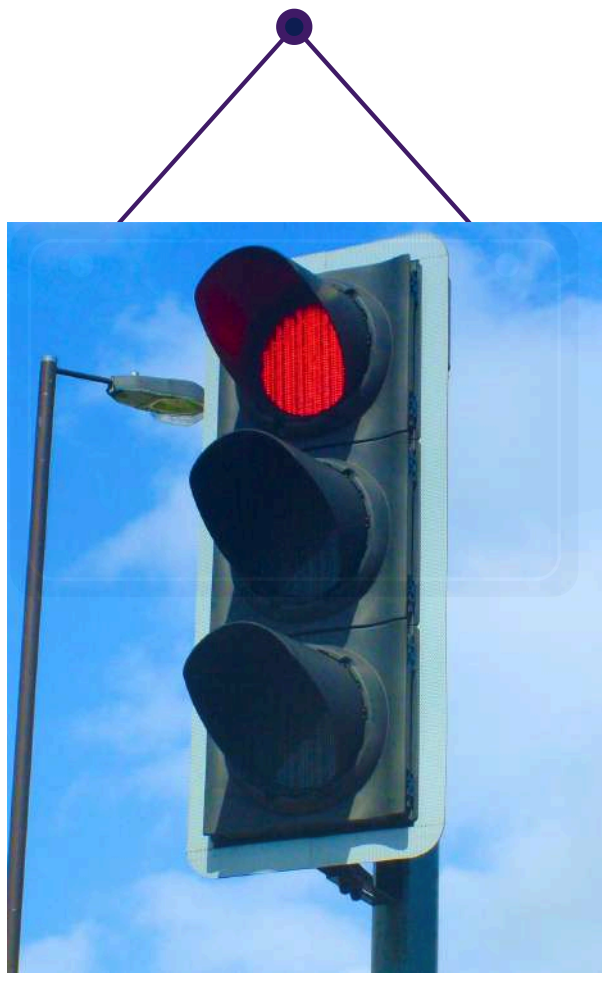

किसी ओवरब्रिज के नीचे
बसे उन परिवारों को
जिनके पास खुद की छत नहीं है
तब मुझे नेताओं के
वो खोखले वादे याद आते हैं
क्या फायदा देश की
इतनी ऊंचाईयों पर जाती अर्थव्यवस्था का
जहां पर लोग कचरे के ढेर से
अन्न के कुछ टुकड़े बटोर कर खाते हैं
यह देखते हुए मेरी रूह कांप जाती है
तब मैं उस भगवान से सवाल करता हूं
कि वो तुम ही हो

मोहभंग

दीपाली मिश्रा
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

जो खुद की पत्थर की मूर्ति के लिए
इतना बड़ा मंदिर बनवा रहे हो
और इन भटकते लोगों को
खाने के लिए रोटी
पहनने के लिए कपड़े
और रहने के लिए छत भी
मुकम्मल ना हो
अगर तुम ये सच में चाहते हो
तो मैं मानता हूं
कि तुम भगवान नहीं हो
सिग्नल पर इनमें से
कोई भी मुझे छूता है
तो मैं सिहर जाता हूँ
दिल की धड़कने थम जाती हैं।
एक अजीब सी टीस मेरे मन को घेर लेती है
लगता है जैसे कि लाखों चींटियाँ
मेरे नंगे तन पर चल रही हैं।
मुझ में बिजलियाँ कड़क रही हैं।
मैं महसूस करता हूं
कि मैं अंदर ही अंदर जल रहा हूं।

इंद्रधनुष अपने रंग उडेलता नहीं
स्वयं को उजास करने के लिए
परिसीमाएं गढ़ता है,
प्रकाश तो काँच के लैम्प के भीतरी
दिये से भी वातावरण में फैल जाता है,
जहाँ प्रकाश और आकाश मिलते हैं
वहीं मोह जन्म लेता है।
अनुरक्ति केवल क्षितिज पर है
मोह अनुरक्ति नहीं है,
मोह सामर्थ्यता की दहलीज लांघ सकता है,
काँच की दीवारों को फांद सकता है,
किंतु आकाश के सफ़ेद होने पर मोह नहीं,
अनुक्ति शेष रहती है।
सफ़ेद चादर ओढ़े आकाश
काले बादलों की प्रतिक्षा करता है
वह जानता है काला रंग कालुष्यता का मानिंद है
बरस जाने पर फिर अवकाश छोड़ जाएगा,
आकाश का भीतरी कोरापन कभी भरता नहीं
और अवकाशों का बनना कभी रुकता नहीं।
एक आकाश का अवकाश बनना
अनुरक्ति का संकेत है।
यदि अवकाश बनने रुक जाए,
तो क्या आकाश की विस्मृत स्मृति ही...
अवकाशों को रात बनाती है!
आकाश सदा आकाश रहे।
अनुरक्ति, विरक्ति बन जाएगी?
विरक्ति तो, मोह का विस्मृत स्वरूप है।
और रात ही मोह का,
अनुरक्ति का,
विरक्ति का,
"मोहभंग" है।
जिसमें अभी भी कुछ
मोह शेष है।

मेरा पहाड़

हेमन्त सिंह जीना
बी.एससी. इंडस्ट्रियल केमिस्ट्री, द्वितीय वर्ष

अपने पहाड़ के बारे में क्या ही कहूं ?
जब सोचता हूं अपने पहाड़ के बारे में,
तो आँखों से आंसू बहने लगते हैं।
जब आया हूं अपने पहाड़ से दूर तो,
आभास होता है कि,कितना अच्छा है मेरा पहाड़!
जितने टेढ़े यहाँ के रास्ते, उतने ही सीधे यहाँ के लोग हैं।
अपने सरल जीवन में रमे रहते हैं,
इन्हें नहीं मतलब, इन शहरों की भाग दौड़ से।
जितनी प्यारी संस्कृति मेरे पहाड़ की, उतनी प्यारी बोली,
कहते हैं देवभूमि इसे, सभी को है यह प्यारी।
क्या कहूं अपने पहाड़ के बारे में,
ऐसा ही है मेरा पहाड़।
जितनी प्यारी वादियाँ यहाँ की,
उतने ही खूबसूरत है रीति-रिवाज,
सभी लोग मिल-जुलकर रहते,
हर काम में बटाते एक दूसरे का हाथ।
बोली की अगर बात कहूँ तो,
वो प्यारी कुमाऊँनी, गढ़वाली के राग!
महिलाओं का परिधान सुशोभित होता इतना अच्छा,
वो रंगीली पिछौडी, जिसके बिना कोई शुभ काम नहीं होता,
वो गले का गलोबंद,वो गढ़वाली नथ की अनवार,
अगर सच बोलूँ, अपने पहाड़ के बारे में,
तो लोग यह न समझे कि कर रहा हूं मैं बखान!
किंतु क्या ही बताऊँ,
यह बखान करना भी मुझे स्वीकार है,
क्योंकि इतना सुंदर जो है मेरा पहाड़।
इसकी हसीन वादियाँ,
वो नदियाँ, वो झरने,
जहाँ धरा पर आते हैं बादल,
स्वयं मानव से वार्तालाप करने!
मानो धरती पर वह स्वर्ग समाया है,
जब से जन्म लिया मैंने अपने पहाड़ में,
स्वयं को धन्य पाया हैं।
इसके वाद्य यंत्रों में ढोल-दमोऊ की थाप,
तो नृत्य में छोलियार व झ्वड़ा समाया है।
ऐपण यहाँ की प्रमुख कला,
जिसका रूप हर पहाड़ी के घर में समाया हैं।
मेरे पहाड़ की महिलाएँ,
इतनी कर्मठ और साहसी है,
इनसे ही तो मिलती प्रेरणा,
यही तो पहाड़ी घरों की आधार है।
क्या कहूं अपने पहाड़ के बारे में,
ऐसा ही है मेरा पहाड़।
इसकी जब सड़कों से गुज़रूं तो,
हर मोड़ पर मंदिर है,
जब पैदल चलूं तो,
इसकी हर धार में मंदिर है,
ऐसा पहाड़ है मेरा,
इसके तो पर्वत के आकार में भी मंदिर है।
पंचबद्री, पंचकेदार, पंचप्रयाग से
मेरा पहाड़ सुसज्जित है,
यही तो कारण है मेरे पहाड़ के लोगों के,
देवताओं पर श्रद्धा और उस विश्वास का।
गाढ़-गधेरो पर लगने वाले,
मसाण को जागर द्वारा पूजने का!
क्योंकि स्वयं देवी-देवता देने
आते जहां दर्शन है,
वही तो है मेरा पहाड़,
ऐसा ही है मेरा पहाड़।

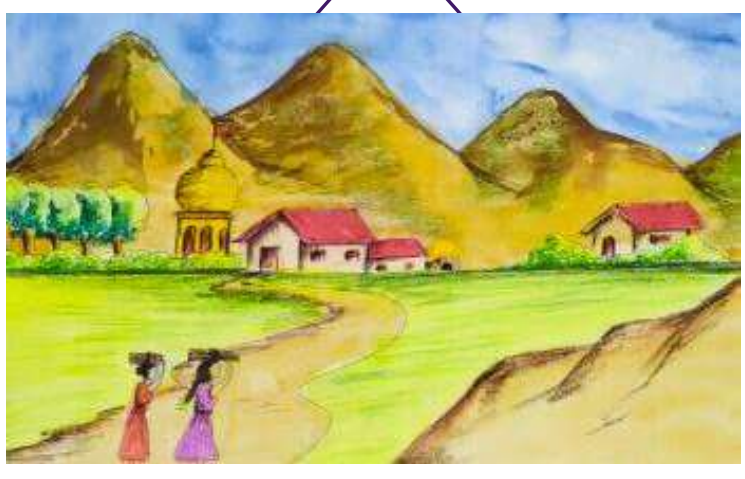

जब लेता हूँ, इस शहर में श्वास तो
मुझे अपने पहाड़ की वह
निर्मल-स्वच्छ हवा याद आती है,

मेरे पहाड़ की वह सादगी याद आती है।
जो आ गया अब अपने पहाड़ से इतना दूर तो,
माँ के हाथों की चूल्हे की रोटी,
और अपनी वो बाखली याद आती है।
कहने को तो बहुत कुछ है,
इस हृदय में समाहित,
किंतु इस कलम के माध्यम से इस कागज़ में,
नहीं समा सकता मेरा पहाड़,
इतना विशालकाय जो है मेरा पहाड़!
ऐसा ही है मेरा पहाड़।

निर्वस्त्र

तनु पाठक
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

मुकुट उतार वस्त्रों को धारे पाण्डव
सर्वप्रथम अपने पुरुषार्थ को हार जाते है,
निर्लज्जता से फिर द्रौपदी पर दाव लगाते हैं,
विवेक मर्यादा सब उतार बैठे हैं,
बिना युद्ध ही सब कुछ हार बैठे है,
अपनी चुप्पी से दुर्योधन को नाद देते पाण्डव,
बंधे हाथों से दुशासन का साथ देते पाण्डव,
पाण्डवों में बाटी गई अर्जुन की जीती द्रौपदी,
सभा में गई घसीटी दुर्योधन की जीती द्रौपदी,
अग्नि से निकली द्रौपदी आज अग्नि-सी जलती थी,
ललकार सभा को वो सभी से प्रश्न करती थी,
जो स्वयं को हारे उनका मुझपर क्या अधिकार ?
क्या कुरुवंश मर्यादा करती है कुल वधु पर अत्याचार ?
राज सिंहासन या कुल मर्यादा यहाँ सुरक्षित कौन ?
ज्ञान, विवेक, अस्त्र - शस्त्र सभी क्यों पड़े हैं मौन ?

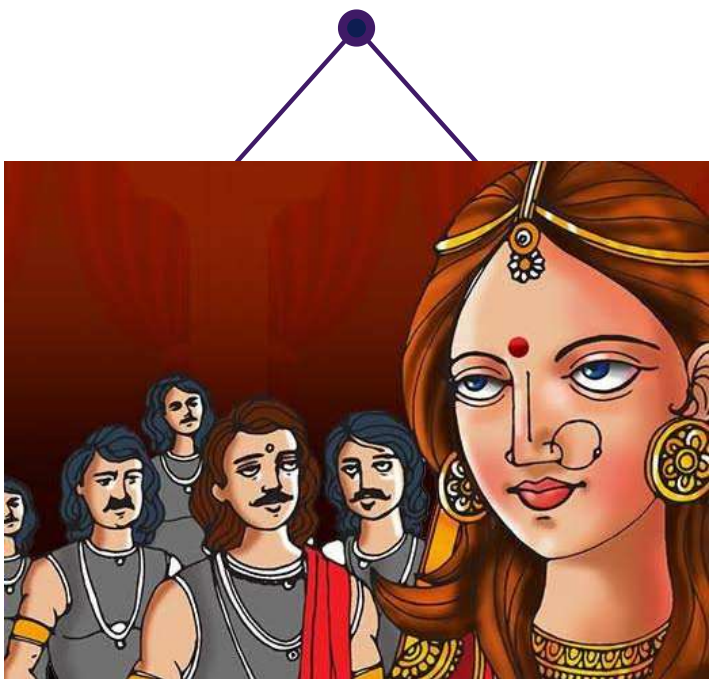

भरी सभा में थे सभी निष्प्राण पड़े,
अपनी उन्हें सुध नहीं उसका क्या कोई ध्यान करें,
अंधी थी सभी मर्यादायें संपूर्ण सभा बहरी थी,
संबंध थे मौन सभी धर्म नीति कंठ तक आ ठहरी थी,
अपनी आखों को मूँदे सभी कुल का अपमान देखते थे,
द्रौपदी के तन से उतरते वस्त्र सभा के वस्त्र उधेडते थे,
सभा के मौन ने दुशासन का हाथ थामा था,
आज सभी ने स्वयं को निर्वस्त्र करना ठाना था,
द्रौपदी का चीर चीखता था,
समस्त कुरु वंश आखें मीचता था,
अपना आंचल पकड़ स्वयं को बचाती द्रौपदी,
बचाने अपनी लाज माधव को बुलाती द्रौपदी,
पांडवों की वीरता उसकी आखों से आंसु बन बहती थी,
छोड़ सभी से आस अब वो माधव से पीड़ा कहती थी,
माधव ने अपनी सखी का चीर बचाया,
दुशासन ने उसके आंचल का कहीं अंत ना पाया,
बची द्रौपदी की लाज संपूर्ण सभा निर्वस्त्र हुई,
कुरुवंश की उज्जवल जोत उसी सभा में अस्त हुई।
थे सभी वीर अभेद अस्त्र पाण्डव,
आज हैं सभा में सभी निर्वस्त्र पाण्डव।

काशी

हृषिकेश उपाध्याय
राजनीति विज्ञान ऑनर्स ,(तृतीय वर्ष)

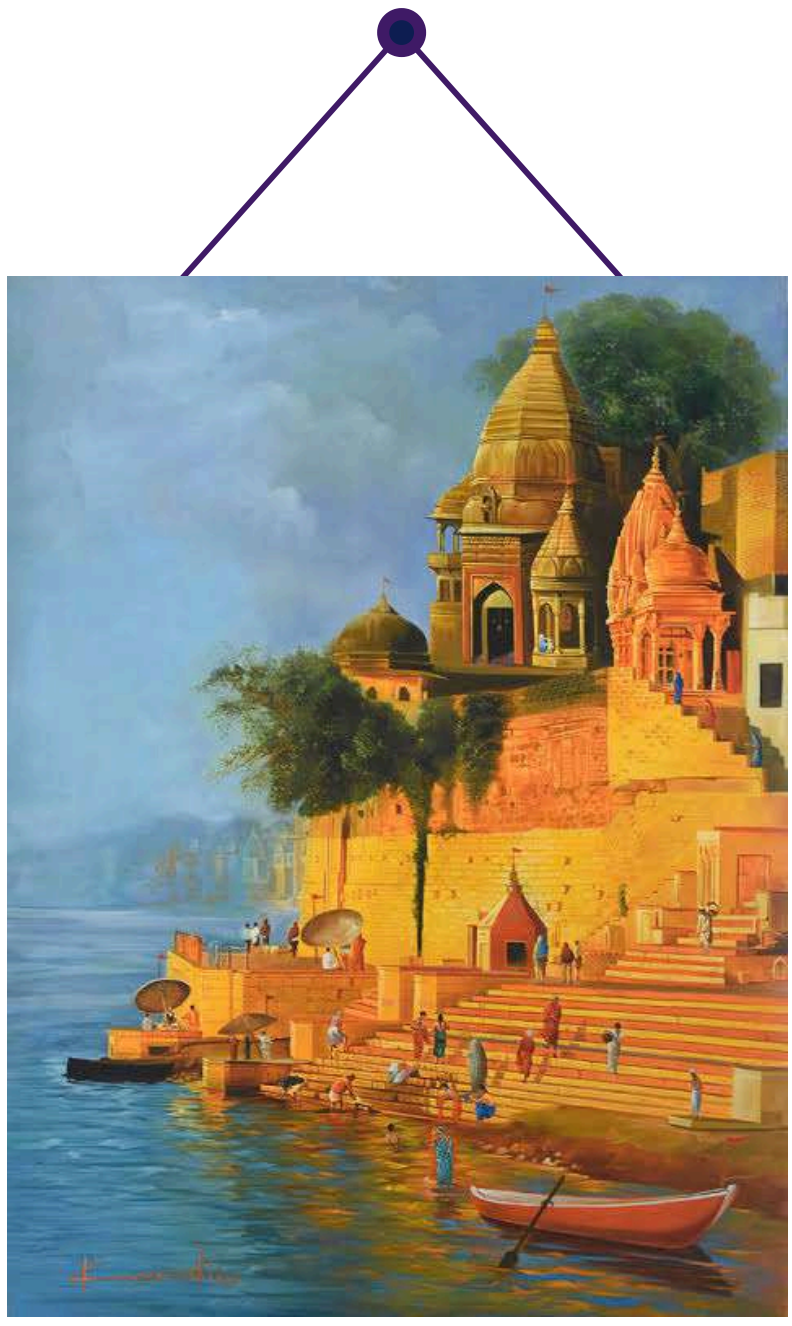

काशी नगरी ऐसी अद्भुत तीन लोक से न्यारी।
महादेव शिवशंकर को यह सबसे ज्यादा प्यारी ।।
अन्नकूट श्रृंगार यहाँ का दुनिया में मशहूर ।
तन-मन को आलोकित करके तमस भगाये दूर ।।
भाँग घोंट कर बम-बम करते काशी के सब पंडे।
चलते नहीं यहाँ पर जल्दी यमदूतों के डंडे ।।
नंदी भी आनन्द करें और जहाँ तहाँ वे घूमें।
सैर-सपाटा सड़कों पर और गलियों में भी झूमें।।
गली-मोहल्ला सब इनका है रहते मस्त मिज़ाज।
नमन करो नित नंदीजी को सिद्ध करो सब काज ।।
धरे रूप संकट मोचन का बने रुद्र बजरंगी।
कृपा बरसती भक्तों पर मिट जाती सबकी तंगी ।।
कलिमल नाशक पवनपुत्र हैं मर्कट रूप निराला ।
अतुलित बलशाली तेजस्वी रामभक्त मतवाला।।
मंगल-शनि विशेष तिथियाँ हैं भक्तों का विश्वास ।
संकट मोचन में दर्शन कर पूरी करते आस ।।
मिटते कलह-कलेश सभी के आञ्जनेय की दया।
हे रघुवर के दूत पवन के पूत हरो सब माया ।।
सात दिवस तक सप्तसुरों में डूबे सकल जहान ।
नारद की वीणा भी बोले जय-जय-जय हनुमान ।।
है त्रिदेव मंदिर मनमोहक रूप विलक्षण सजता।
पूजा यहाँ अहर्निश होती रह-रह घंटा बजता ।।
वीरभद्रजी इसके अगुआ काशी के थे रत्न ।
मंदिर के निर्माण हेतु था इनका अथक प्रयत्न ।।
वीरभद्र के पिता पखावज-प्रेमी करुणानाथ।
अमरनाथजी महासन्त थे सबको किया सनाथ ।।
उठतीं जो संगीत लहरियाँ संकटमोचन प्रांगण में।
पृष्ठभूमि में अमरनाथजी लाये मंदिर आँगन में।।
भवनाशक दुःखमोचनी बसती दुर्गाकुण्ड ।
दर्शनार्थ है भीड़ भगत की लसे माथ तिरपुण्ड ।।
कर स्नान सरोवर में सब करते माँ की पूजा।
माँ के सदृश नहीं कोई भी दयावान है दूजा ।।
नरियर चुनरी से ही खुश हो जाती दुर्गे अंबा।
भक्तों के दुःख-दर्द मिटाती शिवारूप जगदंबा ।।

सबसे दक्षिण सब घाटों के बैठा बिल्कुल शान्त।
अस्सी शान्त तपस्वी जैसा चित्त नहीं उद्भ्रान्त ।।
नाले के समान ही वह चालीस फीट थी चौड़ी।
अस्सी मिलने गंगाजी से खुद ही आई दौड़ी।।
जैसे मिलकर जीव ब्रह्म से धन्य धन्य हो जाता है।
मुक्त भाव से जीवन तजकर ब्रह्मरूप हो जाता है।।
सुबह बनारस की मधुरिम आभा दिखलाता अस्सी घाट ।
घाटों में अतिश्रेष्ठ घाट का मत पूछो भैय्या कुछ ठाट ।।
काशी की प्राचीन धरोहर का उज्ज्वल इतिहास रहा है।
मंदाकिनी अंक में स्थित घाट बहुत यह खास रहा है।।
वरुणा, अस्सी दो नदियों की सुंदर सुखद कहानी है।
वाराणसी नाम अति मंजुल संस्कृति की रजधानी है।।
माघ महीना कृष्ण पक्ष की षष्ठी पहुँचो घाट।
संगम पर स्नान-दान फिर कर लो पूजा-पाठ ।।
पिण्डदान भी करते जाओ पितर रहेंगे तृप्त।
सतत् सनातन धर्म जहाँ पिण्डोदक क्रिया न लुप्त ।।
वरुणा का कछार अस्सी का संगम यही बनारस है।
भक्ति-भाव से हुलसित काशी दिल में बसा प्रेमरस है।।
दुर्ग सरिस निर्मित भवन लगता है छविमान ।
चेतसिंह के घाट सन्निकट है हयग्रीव महान।।
काशिराज के इसी घाट को जानो घाट शिवाला।
स्वप्नेश्वर शिवलिंग के दर्शन दिल में करे उजाला ।।

अति सुरम्य पाँचों घाटों में परम मनोहर घाट।
चित्त चुराये भक्तों के दश अश्वमेघ का घाट ।।
दशासुमेध घाट अति पावन, पावन गंगा नीर।
सुर-सरिता की आरती हरती मन की पीर ।।
महाकाल के स्वागतार्थ ब्रह्मा ने था बनवाया।
वैश्वानर के सम्मुख खुद ही बैठ यज्ञ करवाया।।
बारह मासा यहाँ दिवाली दृश्य अलौकिक बाँधे।
जटाजूट बाँधे संन्यासी तप से मन को साधे ।।
माघमास स्नान करो फिर मन हो जाये शुद्ध।
यहाँ प्रयागतीर्थ मंडित है यहीं सरोवर रुद्र ।।
विश्वनाथ मंदिर से ही आसन्न समझ लो घाट।
चारो ओर घाट के घूमो व्यस्त मिलेंगे हाट।।
इसी घाट से सबसे ज्यादा होती नाव-सवारी ।
स्वर्ण-रश्मियाँ जल पर बिखरी लगती हैं अति प्यारी
पर्यटकों को भर नौकाएँ आर-पार ले जायें।
लहरों के हैं मध्य झूमते गीत खुशी के गायें।।
गंगाजी की सांध्य आरती विश्वविदित मनभावन है।
आकर्षण का महाकेन्द्र यह तीनों ताप नसावन है।।
महाघाट मणिकर्णिका जिसके आशुतोष हैं नायक ।
महाकाल की लीलाओं के सभी अमर हैं गायक।।
शीर्ष भाग पर घाट के है मणिकणिका कुण्ड।
नीचे ढेर शवों के सजते जलते हैं नरमुण्ड ।।
पाँच मंदिरों के शिखरों पर स्वर्ण-कलश है सज्जित ।
मंदिर से पूरव ओसार में नन्दी भी हैं स्थित ।।
चहुँदिशि मंदिर के निर्मित चौखंभों का दालान ।
सभी दिशाओं में मंदिर के आँगन बगल मकान।।
मृत्यु यहाँ पर मुँह फैलाये करती सबका भक्षण।
सत्यम शिवम सुन्दरम् के भावों से होगा रक्षण।।
श्मशान की भूमि नहीं मणिकणिका तप का स्थल है।
महाकाल शिव की नित-क्रीड़ा भूमि तथा योगस्थल है।।
यहाँ चिताओं के भस्मों से लोग खेलते होली हैं।
तन्त्र-साधना करने वाले बाबाओं की टोली है।।

दिन-रात शवों के जलने पर भी कोई गंध नहीं उठती।
अर्धदग्ध शव के समीप भी बदबू कभी नहीं रहती ।।
मणिकणिका केवल घाट नहीं यह तीरथ बड़ा महान।
स्नान-दान और श्राद्ध कर्म से चट होता कल्याण ।।
महाप्रभु शंकराचार्य से जुड़ते कई प्रसंग।
डोमराज की प्रभुता देखो और जीवन के रंग।।
जीवन का है सत्य मृत्यु यह घाट हमें बतलाता।
परे मोह-माया से कुछ क्षण लोगों को ले जाता।।
जीव-जगत सब नश्वर है यह भाव यहाँ भर जाता।
देख शवों की देरी को वैराग्य-बोध हो जाता।।
मृतक-देह की दाह-क्रिया कर हुए घाट से दूर।
नश्वरता, वैराग्य भाव निज सैन्य संग काफूर ।।
पानी पीते, पान चबाते खाते सभी मिठाई।
हँसी-ठिठोली करते निज-निज गृह जाते हैं भाई।।
यही सृष्टि का आकर्षण और माया का है राग।
क्षणिक भाव क्षणभंगुरता का मरघटिया वैराग।।
मणिकणिका से उत्तर देखो सटा सिंधिया
रानी बैजाबाई निर्मित कितना सुन्दर पाट।।
अग्नि देव का जन्म यहीं पर कहते हैं सब लोग।
योग यहाँ सब नियमित करते और भगाते रोग ।।
जलशायी शिवलिंग पुराना यहीं पड़ा है पानी में।
अद्भुत और अलौकिक चीजें घटती हैं रजधानी में ।।
आमेरराज ने भक्तों के हित एक घाट बनवाया था।
मानसिंह का घाट मानमंदिर आगे कहलाया था।।
सेतुबन्ध रामेश्वर शिवलिंग के दर्शन प्रख्यात ।
वाराही और दन्त विनायक दर्शन करो हठात् ।।
मानमहल छत्ते के ऊपर बनी बेधशाला को देखो।
ग्रह-नक्षत्र भेदक यंत्रों से अंबर की लीला भी देखो ।।
हँसता शहर बनारस सारी दुनिया है काशी की दासी ।
सप्त-द्वीप से गले लगाने दौड़े आते सभी प्रवासी ।।
भोले बाबा के डर से यमराज काँपते काशी में।
वैभव देख बनारस का कुबेर ललचते काशी में ।।
गली-गली से गली देखने दुनिया आती काशी में।
नंगे नागाओं की टोली यात्रा करती काशी में ।।
वैदिक मंत्रों की ध्वनियाँ गुंजायमान हैं काशी में।
विश्वनाथ के चरणों में सच्चा सुख मिलता काशी में ।।
देव माँगते मन्नत बाबा हमें बुलाओ काशी में।
चौदह भुवनों के सारे सुख सतत सुलभ हैं काशी में ।।
काशी की महिमा अपार माँ गिरा नहीं कह पायें।
कवि अपनी अति मलिन बुद्धि से कैसे खुद समझाये ।।
बुद्धि-शुद्धि के यज्ञ हेतु मैंने यह गाथा गाई है।
शिव की करुणा के प्रसाद से कुछ बातें बतलाई हैं ।।

जीवन अभी अधूरा है

आदर्श पांडेय
गणित ऑनर्स (तृतीय वर्ष)

कुछ अधूरापन सा क्यूं है
सब कुछ तो पूरा है ,
उन पूर्ण हुए सब कामों में
जीवन ही एक अधूरा है।
जीवन की शैय्या पर सारे देवव्रत से पड़े हुए
जिसके जितने घाव हैं समझो
वो उतना ही लड़े हुए
करबद्ध प्रार्थना करके तो,
कुछ ने मृत्यु ललकारा है
पर मृत्यु हठ करके कहती कि जीवन अभी तुम्हारा है
कर्मभूमि के समरांगण में तेरा दायित्व अधूरा है...
हाँ, पूर्ण हुए सब कामों में
जीवन ही एक अधूरा है।

सब हैं मृत्यु के अधीन ,
कुकर्मों के हैं पराधीन
मार्ग खोजते हैं सारे मृत्यु से बचने के नवीन
पर मृत्यु है वो सत्य जो नित नव अभिनय करता है
और स्वयं सिद्ध करने के खातिर अगनित भेष बदलता है
अंत जकड़ देता है सबको मृत्यु पाश की जकड़न से
वो पाश अलग करता है जीवन को अंत मरण से
पर यदि मृत्यु ही सत्य तो जीवन का क्या पर्याय है ?
यदि लिख दी जाती है रेखा तो कर्म का क्या अभिप्राय है?

सब प्रश्न झिंझोड़ते हैं मुझको
क्योंकि उत्तर अभी अधूरा है
हाँ पूर्ण हुए सब कामों में
जीवन भी अभी अधूरा है ।

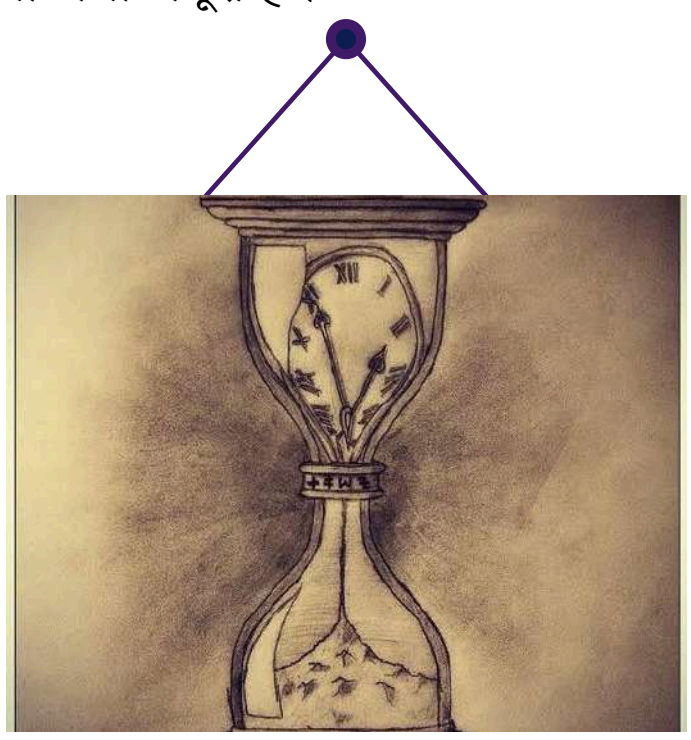

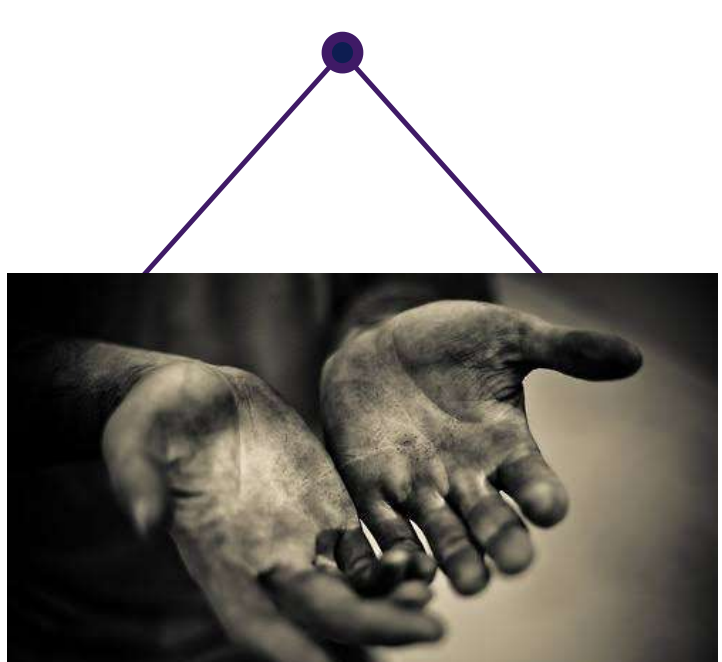

भूख

आस्था मिश्रा
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

अरे सुनो .... !
क्या तुमने भूख देखी है?
वो नहीं जो तुम्हें निरंतर सुबह शाम लगती है
भूख अभाव की.....
अरे!सुनो मैं ने देखी है
मंदिर में बज रही
उन घंटियों की झंकार में
वहीं सीढ़ियों पर बैठे
एक छोटे बच्चे की पुकार में
कुछ खाने को मिलेगा दीदी?
वही मंदिर के कोने में
खड़ी दादी के ठेले पर रखे उन फूलों में...
भूख अभाव की....
रिक्शा खींच रहे
बूढ़े बाबा के पेरो के छालों में
भूख एक सवारी के इंतज़ार की....
कच्ची बस्तियों में दोड़ रहे
उन बच्चों के स्कूल के थैले में
भूख अभाव की...
तुम कहते हो, मुझे भूख लगी है
अरे सुनो ! कम से कम
इस भूख से तो बचे हो तुम .....

इतिहास

विद्या सिंह
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

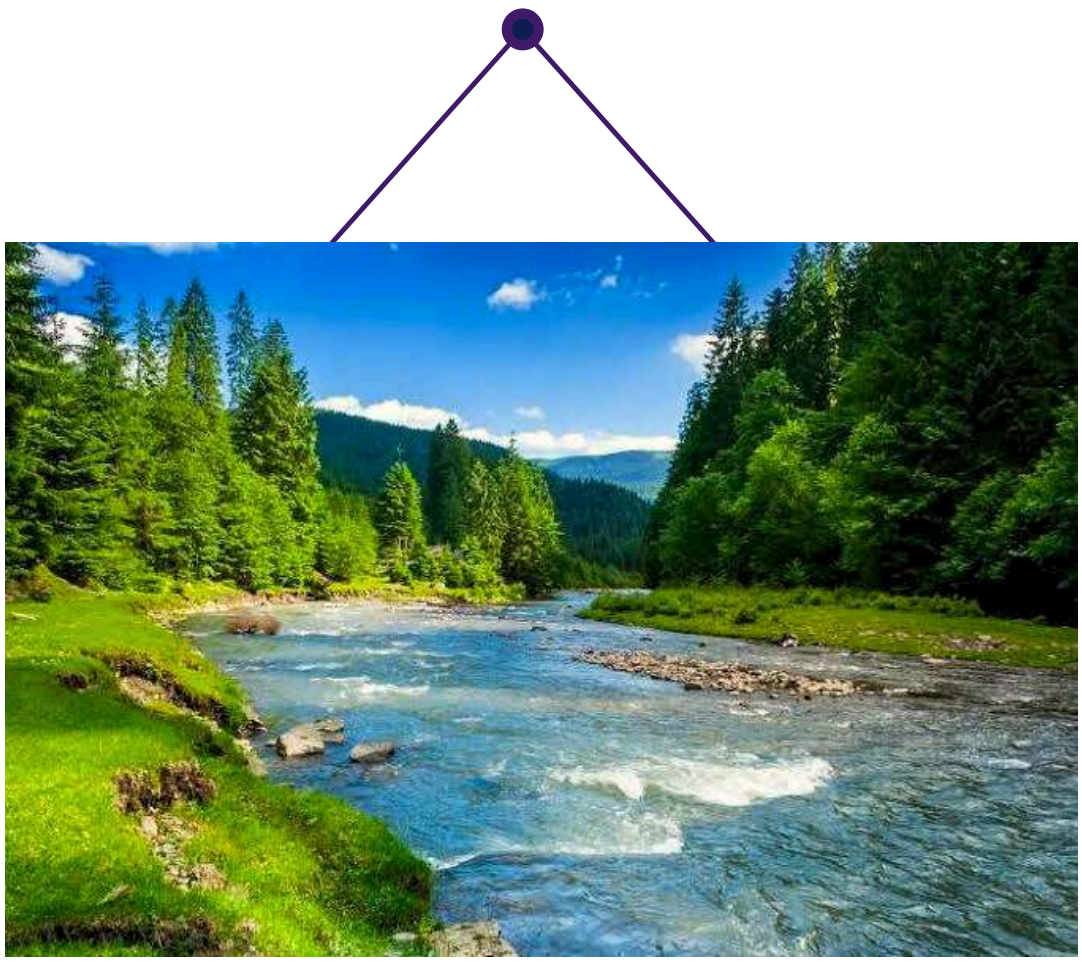

इतिहास लिप्त है,
हर ओर युद्धों और संघर्षों से,
युद्ध पराक्रम का प्रशासन से,
संघर्ष प्रेम का समाज से,
युद्ध विद्वानों का विवादों से,
संघर्ष विचारों का रुढियों से,
संघर्ष संस्कृति का आडंबर से,
युद्ध क्रांति का बंधन से,
युद्ध परोपकार का आघात से,
संघर्ष उजियारे का अंधकार से,
हर पल घिरा हुआ है इतिहास,
संघर्षों और युद्धों के हथियारों से,
इतिहास लिख गया वर्तमान,
मन के कई विवादों से,
वर्तमान लिख रहा है भविष्य,
लहू लिप्त अंगारों से,
फुट पड़े अब प्रेम धारा,
पाषाण हृदय दीवारों से,
बुझा दे संघर्ष अग्नि,
और मन छूट जाए हथियारों से ..

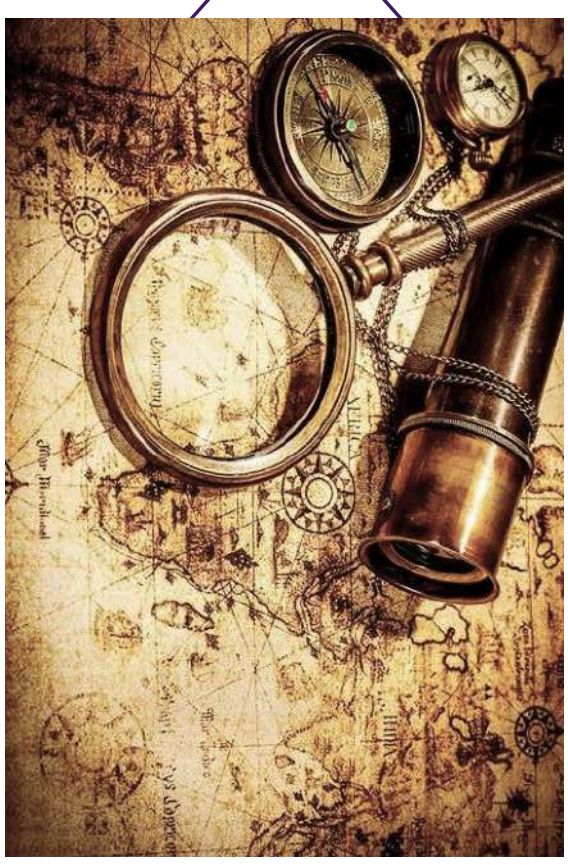

वैतरणी

वैभव मिश्र
रासायनिक विज्ञान विशेष (द्वितीय वर्ष)

अधरो पर पड़ती प्रथम किरण,
ये केश तुम्हारे है या भ्रम?
हाथों में उपन्यास का श्रम,
इतना श्रम क्यों करती हो तुम?
मेरी तो वैतरणी हो तुम!
यह असहजता है या है भय,
करता है सुखद क्षणों का क्षय,
इस भांति मेरी हो सदा विजय,
आ विजयमाल पहना दो तुम।
मेरी तो वैतरणी हो तुम!
हृदयगति करती मंद स्पंदन,
कर दिया समर्पित यह जीवन,
संप्रेषण को आतुर अंतर्मन,
यह शांत प्रकृति भड़का दो तुम।
मेरी तो वैतरिणी हो तुम!

कविता क्या है?

मुकुल शर्मा
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

क्या वह कटोरे में कुन्हाती-
आधुनिक 'फुल क्रीम मिल्क' की
'मलाई' है?
जिसे बिल्ली जगत की हर बिल्ली,
अपना अधिकार समझ चाट सकती है !...
क्या वह शादी के घर में,
भट्टी के उप्पर टंगा तिरपाल है?
जिसपर मेघ गरजने पर,
बादल जगत की, हर बारिश की बूँद
अपना अधिकार जता पसर सकती है !...
क्या वह देवी देवताओं के उपर पड़ा-
दूध व मुँह पर लिपटी मिठाई है?
जिस पर हर कुत्ते जगत का हर कुत्ता-
ललचाकर जीभ फिरा सकता है?...
क्या वह घर आती हुई-
मौसी फूफियों के हाथ में लटका;
मौसा फूफा की पुरानी पेंट से बना झोला है?
जिसमे रखे नारंगी संतरों हरे अंगूरों व सफ़ेद बर्फी पर,
हर मरियल बच्चे का अधिकार है !...
क्या वह किसी उच्च विश्वगुरु देश की,
निम्न राजनीति है?
जिसमे हर रेहड़ी-पटरी, खोखा - ठेले वाले को,
उच्चस्तरीय नेता बनने की आज़ादी है!...
क्या वह सडक पर सरपट दौड़ती,
नीली-नारंगी बस है?
जिसमें, उसमे बैठे हर यात्री का -
छेड़खानी करने का अधिकार है !...
क्या वह दूध के लिए
मिमियता छः वर्षीय बालक है,
जो खाली दूधी बोतल की हवा को भी
गाय का कोमल क्षीर समझ पीता है।...
क्या वह किसी
मुखिया के घर का चूल्हा है?
जिसपर हमेशा पूरी भाजी खीर के
रस - छंद - अलंकार रूपी पकवान ही पकेंगे?...
क्या वह किसी होरी का फटा 'पयजामा' है?
जिसके छिद्रों में घुसने का,
हर महाजन रूप के -
कीट-पतंगे, मक्खी-मच्छर को
सर्टिफिकेट प्राप्त है !...
क्या वह चित्रपट पर,
अप्रत्यक्ष रूप से नाचती नटी है?
जिसे देख कोई भी,
आज का प्रत्यक्ष नवयुवक
सीटी मार सकता है?...
नहीं, कविता यह नहीं।
कविता उस कटोरे की मलाई को
खाने वाली बिल्ली है।
जो उसे खा, प्रत्येक घर की छत पर
मंडरा कर,
हर व्यक्ति के जीवन-रस का
अस्वादन करती है।...
वह सूरदास का जला झौपड़ा है,
जिसकी उड़ती कालिख,
हर उस लेखनी का सुरमा तैयार करती है।
जो 'सूरदास का झौपड़ा'
कविता लिखती है।...
वह उस बस में बैठा
संचालक परिसंचालक है।
जो उस बस में
सभी सामाजिक कुरुतियों को भर,
एक फेन के तालाब में डाल आता है।
जहाँ वे घिस घिस कर साफ की जाती हैं।...
वह उस महाजन के घर के,
चूल्हे के भीतर के खुर्दरेपन को भरने वाली मिट्टी है
जिसपर छंद अलंकार रहित
रस, व आत्मानुभूति रुपी प्रतिभा पकती है।...
वह मिमियता छः वर्षीय बालक नहीं,
अपितु उस दूध की बोतल में
हवा भर उसे ठगता हुआ कवि है।
जो प्रत्येक पाठक को क्षीर की जगह
समीर पिला कर संतुस्ट करता है।...
संक्षेप में कहूँ तो,
कविता 'प्लेटो' की आकाशवाणी है।
जिसमे वह 'लेखक पर'
जन्म से किसी दैवीय शक्ति का,
आशीर्वाद है।

धुंधला आसमान

रिषव शर्मा
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

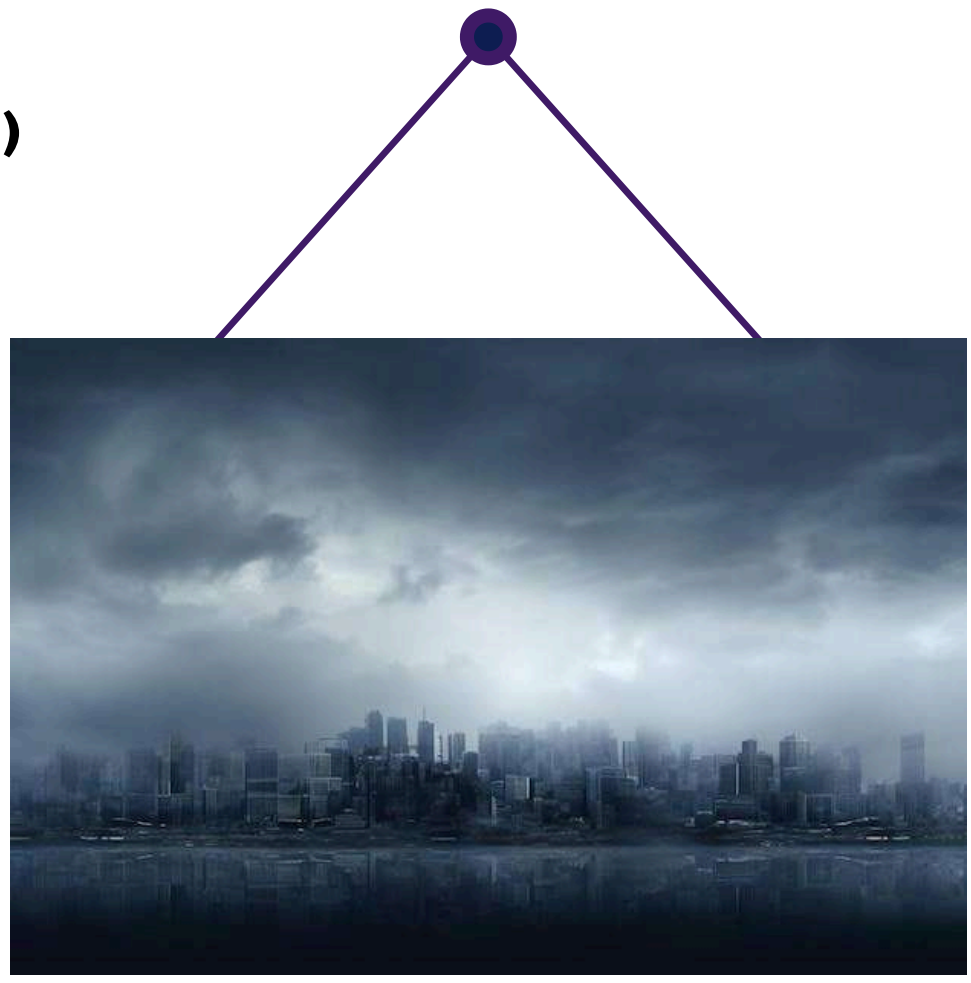

धुंधला आसमान
विश्व गुरु के नगर में आसमान धुंधला रहा
चूंकि पहर भर छाए थे धार्मिक बादल
हवाओं में झूलता रहा निर्जीव हड्डियों का ढांचा
जब अंधे को पंगु बना टप्पे गाए जाते रहे
और ताल मिलाती भीड़ में दफन किया गया
प्रजातंत्र
वहां ....
उस अधनंगी भीड़ में कई बुद्धिजीवी मूक रहे
जहां अमूमन प्रजा चीखती थी ...

गुलाबी बसंत

कुसुम कुमारी
हिंदी विशेष (द्वितीय वर्ष)

साल का वही
अंतिम अहसास जो गुलाबी है
जिसके ठीक बाद
प्रेमियों का वसंत होगा
खैर...
यह प्रत्येक के लिए गुलाबी नहीं
अपितु नीति विरुद्ध है
सड़क पर सोते अपरिचित जिन्हें
खुली सड़क पर रात में थपेड़े मारती हवा
इस अहसास को नीति विरुद्ध बना देती है
उन्हें फिर उसी चादर को आलिंगन में भरना होता है
जिसमे छोटे छिद्र है और यह भी इस सभ्यता का अंग है
यह वही गुलाबी अहसास है
जो दुनिया की काली कमीज पहने हैं
वही अहसास जिससे आप परिचित हैं
और नजरअंदाज करते है ये गुलाबी अहसास ..

जनरल डिब्बा

वैभव मिश्र
रासायनिक विज्ञान विशेष (द्वितीय वर्ष)

प्रिय आकाश भाई को समर्पित..

विश्वविद्यालय में दीपावली की छुट्टियां घोषित होते ही घर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। शाम की अंतिम क्लास लेकर मित्रों के साथ अपने कमरे पर पहुंचा। चूंकि हम लड़कों के समाज में एक दूसरे के लिए भावुक होने को ज्यादा अच्छा नहीं समझा जाता और यह कहना और उचित होगा कि हम सब इन कार्यों में निपुण नहीं है । अतः हम सबसे बस इतना सधता है कि जब हम लंबे समय के लिए अलग हो रहे होते हैं तो बस एक छोटा सा मिलन समारोह रख लिया जाता है। कमरे पर पहुंच कर ज्यादा तैयारी तो नहीं करनी पड़ी। कुछ बर्तन साफ करके यथा स्थान रख दिए, गिनती के कुछ कपड़े अपने बैग में रख लिए और इस बैग के किसी कोने में रख ली वह सारी कल्पनाएं जो गांव में अपने लोगों के साथ त्यौहार मना कर ही पूरी हो सकती थी। एक अनजान शहर में अपने स्व-नियोजित घर को, जो वैसे तो एक बड़े से घर का एक कमरा मात्र है, ताला लगाकर अपने एक मित्र के साथ निकल पड़ा वहां से मेट्रो पड़कर हम आनंद विहार रेलवे स्टेशन की तरफ रवाना हो गए। हमारे साथी मित्र को आधे रास्ते से अपने घर के लिए रवाना होना था तो हमने उनसे विदा ली। मैं आनंद विहार रेलवे स्टेशन पहुंच गया। मेरी ट्रेन लगभग 9:30 बजे आने वाली थी और मैं वहां तकरीबन डेढ़ घंटे पहले पहुंच चुका था। मैं इस उद्देश्य से जल्दी नहीं आया था की ट्रेन ना छूट जाए अपितु मेरी उत्सुकता मुझे उसे कमरे से जल्दी से जल्दी निकलने की प्रेरणा दे रही थी।

अत्यधिक उत्सुकता में आपके साथ दो चीज़े होती हैं पहला कि समय जम सा जाता है। जिस तरीके से कोई भ्रष्ट अफसर रिश्वत खाकर अपने कर्तव्यों से पीछे हट जाता है या उसमें ढील देता है उसी प्रकार उस दिन घड़ी की सुइयां भी न जाने किससे रिश्वत ले बैठी थी। दूसरी गलती जो ज्यादा उत्सुकता में होती है वह है गलती का होना। मुझसे भी एक ऐसी ही गलती हो चुकी थी। मैं जिस ट्रेन की प्रतीक्षा में था वह आनंद विहार जंक्शन की जगह नई दिल्ली जंक्शन पर आने वाली थी। उसके रवाना होने का समय 9:40 पूर्व निर्धारित था और यह सब मुझे 8:40 पर आनंद विहार में खड़े होकर पता चलता है, जिसकी नई दिल्ली जंक्शन से दूरी लगभग 45-50 मिनट थी। जिस प्रकार किसी सुंदर स्वप्न के टूट जाने से एक गहरी निराशा होती है, वैसी ही निराशा ने मेरे हाथ पांव ढीले कर दिए। घर पर त्यौहार मनाने का सपना मुझे टूटता दिखा। परंतु जिस प्रकार हम सुंदर स्वप्न को पूरा करने के लिए उन्हीं तथ्यो को याद करके सोने का प्रयास करते है ताकि उस स्वप्न की पुनरावृत्ति हो सके। यद्यपि हमें पता रहता है कि यह प्रयास संभवत निरर्थक ही होगा। इसी प्रकार का एक प्रयास मैने किया और बिना एक क्षण गंवाए मै दिल्ली जंक्शन की तरफ भागा। यह प्रयास निरर्थक था या कि सार्थक, वह तो आगे ही पता चल पायेगा। गलतियाँ होने के क्रम में मुझसे एक और गलती हुई। गाँव के कुछ पुराने दोस्तो का वीडियो कॉल आ गया और उनसे बाते करने में मैं ऐसा मग्न हुआ कि पूर्व निर्धारित मेट्रो स्टेशन पर उतरने के बजाय मैं आगे निकल गया। जैसे ही वीडियो कॉल खतम हुआ और मैंने खुद को एक अलग मेट्रो स्टेशन पर पाया तो मैं हक्का-बक्का रह गया। मैं घबरा गया और धड़कने भी बढ़ गईं थी। पता नही उस दिन क्या हो रहा था कि बार-बार कोई अदृश्य शक्ति मुझे लाख बाधाएं आने पर भी ऐसी प्रेरणा दे रही थी कि मानो मुझसे कह रही हो की “तुम अंततः ट्रेन पा ही जाओगे।“ इस प्रेरणा के आगे मुझे समय की सारी सीमाएं बांझ लगने लगी। मै लगातार इधर से उधर भाग ही रहा था। जब मैं गंतव्य मेट्रो स्ट्रेशन पर उतरा तो मेरे पास तकरीबन 5-10 मिनट ही थे। मैं बहुत जोर से रेलवे स्टेशन की तरफ भागा। गलतियों के सिलसिलेवार क्रम में एक और घटना जुड़ गई और मैं स्टेशन के उस दरवाजे से घुसा जो बंद था। मेरे पास के वो कुछ चंद मिनट भी समाप्त हुए और अब 9:40 हो रहा था जोकि गाड़ी छूटने का समय था। मैं जैसे ही प्लेटफार्म पर पहुंचा, तो वहां खड़ी गाड़ी के रवाना होने की ही एनाउसमेंट हो रही थी। गाडी के निश्चय के लिए मैने गाडी में बैठे एक आदमी से पूछा, "अरे, क्या यह गाडी जौनपुर जंक्शन जायेगी?" उसका एक शब्द का कठोर उत्तर था, "नही!" उसने और मेरे हाथ-पांव उखाड़ दिये, परन्तु उस अदृश्य प्रेरणा शक्ति ने मुझे उस ट्रेन में चढ़ा ही दिया। मैं ट्रेन में चढ़ तो गया पर बैठ नहीं पाया क्योंकि ट्रेन में इतनी ज्यादा भीड़ थी कि अगर ऊपर से सरसो के दाने डाले जाये तो नीचे नहीं मिलते। सो मैं खड़ा रहा।

जब हम पर भाँति-भाँति के कानून कायदे समाज और घर परिवार के द्वारा थोपे जाते है तो हम उनसे छुटकारा चाहते है और तथाकथित स्वतंत्रता के लिए उतावले रहते है। परन्तु हमे यह पता नहीं होता कि स्वतंत्रता का एक पर्याय होता है जिम्मेदारियां और जब आप अपने घर शहर से दूर होते है तो ये और विकराल हो जाती है। जब जिम्मेदारियां अपने विकराल रूप में होती है तब आप अपनी पूर्वकल्पित स्वतंत्रता का आस्वादन नहीं कर पाते। तब आपको मालूम होता है कि स्वतंत्रता की मरीचिका दिखाकर आपको परतंत्रता के गड्ढे में गिरा दिया गया है। उस क्षण आपको ठगा हुआ महसूस होता है। फिर आप अपने बचपन की दुहाई देते है जब आपको ट्रेन में खुद से सीट ढूंढने की जद्दोजहद नहीं करनी पड़ती थी। बचपन में ट्रेन के गेट के सामने खडे होकर चेहरे पर हवा के तेज थपेड़े खाने की आपकी अभिलाषा आपकी मजबूरी बन चुकी होती है।

चूंकि मैं जनरल डिब्बे में बैठा था और जनरल डिब्बे में लगभग आधी से ज्यादा भारत की विविधता देखने को मिल जाती है। पर मैं उस विविधता मे आसानी से घुल जाता हूं। इसे आप मेरा विशेष गुण समझ सकते है। एक बात मैं भूला जा रहा था सो अब आपको बताता चलूँ कि कितनी भी मुश्किल घड़ी हो, आप कही भी फंसे हो, आप अपनी सहूलियत की छोटी सी छोटी खबर भी अपने खास लोगो को बताना नहीं भूलते और तब तो और भी नहीं जब वो खास आपकी छोटी सी दुनिया बन गयी हो। उस भीड़ में जहाँ एक हाथ से दूसरे हाथ की कुहनी खुजलाना मुश्किल था, मैने अपना फोन निकाल कर मेरी छोटी-सी-दुनिया को मैसेज कर दिया कि मुझे ट्रेन मिल गई है। उसे बताना इस लिए भी महत्वपूर्ण हो गया था क्योकि जब मैं आपाधापी मे था तो फोन पर उससे बात करते हुए मैने उससे कहा था कि भगवान से प्रार्थना करो कि मुझे ट्रेन मिल जाए। भगवान ने कभी मेरी तो नहीं सुनी, उसकी सुन ली। जब कोई भय आपके दिमाग पर हावी होता है तो ज्यादा अवसरों में वह सत्य ही हो जाता है। मैं तीन बार लघुशंका के लिए ट्रेन से उतरा और तीनो बार लक्ष्य पूर्ति में असफल रहा। ट्रेन छूटने का भय इस कदर हावी था कि तीनो बार ट्रेन चल देती थी। अगर अभी तक आपने कहानी ध्यान से पढ़ी होगी तो आपको पता लगा होगा की मैने अभी तक ट्रेन यात्रा का टिकट तो खरीदा ही नहीं। मैं अपने विचारों में मग्न था कि जांच होने पर मैं खुद को कैसे छिपाऊंगा, पकडे जाने पर क्या होगा इत्यादि। तब तक वहाँ एक फेरीवाला आता है जिसके पास कुछ खाने की वस्तुएं थी और पानी। मैंने थोड़ी चिक्की (एक प्रकार की मिठाई) खरीदी और एक पानी की बोतल | बोतल पूरे 20 रुपए की थी और मेरे पास केवल 18 रुपए ही खुल्ले थे। मैने बस सहज रूप से अपने नेत्र उठाये और अपने सामने बैठे एक सहयात्री को देखा। हम दोनों में एक सांकेतिक संप्रेषण हुआ और प्रतिपुष्टि स्वरूप उसने 2 रुपए निकाल कर दे दिया। सहसा मेरे मन में यह भाव आया कि यदि एक अनजान व्यक्ति मेरे चेहरे के भाव पढ़ सकता है तो वह कैसे चूक सकती है। मुझे ज्ञात हुआ कि या तो वह सब जान लेती है या कुछ नहीं, या तो वह बहुत भोली है या फिर बहुत चालाक । खैर, मुझे तो बस इतना चाहिए था कि जिस तरह इस अंजान आदमी ने 2 रुपए देके मेरी जरूरत को पूरा कर दिया था, उसी तरह वो खुद को मुझे सौंपकर मेरी जिन्दगी की कमी को पूरा कर दे। शायद वो कर भी दे, परन्तु इस ब्रह्माण्ड में तो यहसम्भव

नहीं। मैने मन में सोचा था कि इस अंजान आदमी को उतरते वक्त ढेर सारी खाद्य सामग्री खरीद कर उपहार स्वरूप दूंगा, जिससे इसके द्वारा की गयी छोटी सी मदद यादगार हो जाए, इसी प्रकार यह भी सोचा था कि उसे खुद से स्वतंत्र करते हुए एक सुन्दर और यादगार अन्तिम विदाई ले लूँगा। परन्तु न तो मै उसे वो खाद्य साम्रगी दे पाया और न ही इसे एक यादगार अन्तिम विदाई। वो अंजान आदमी किसी अज्ञात स्टेशन पर उतर गया और ये भी.... खैर।

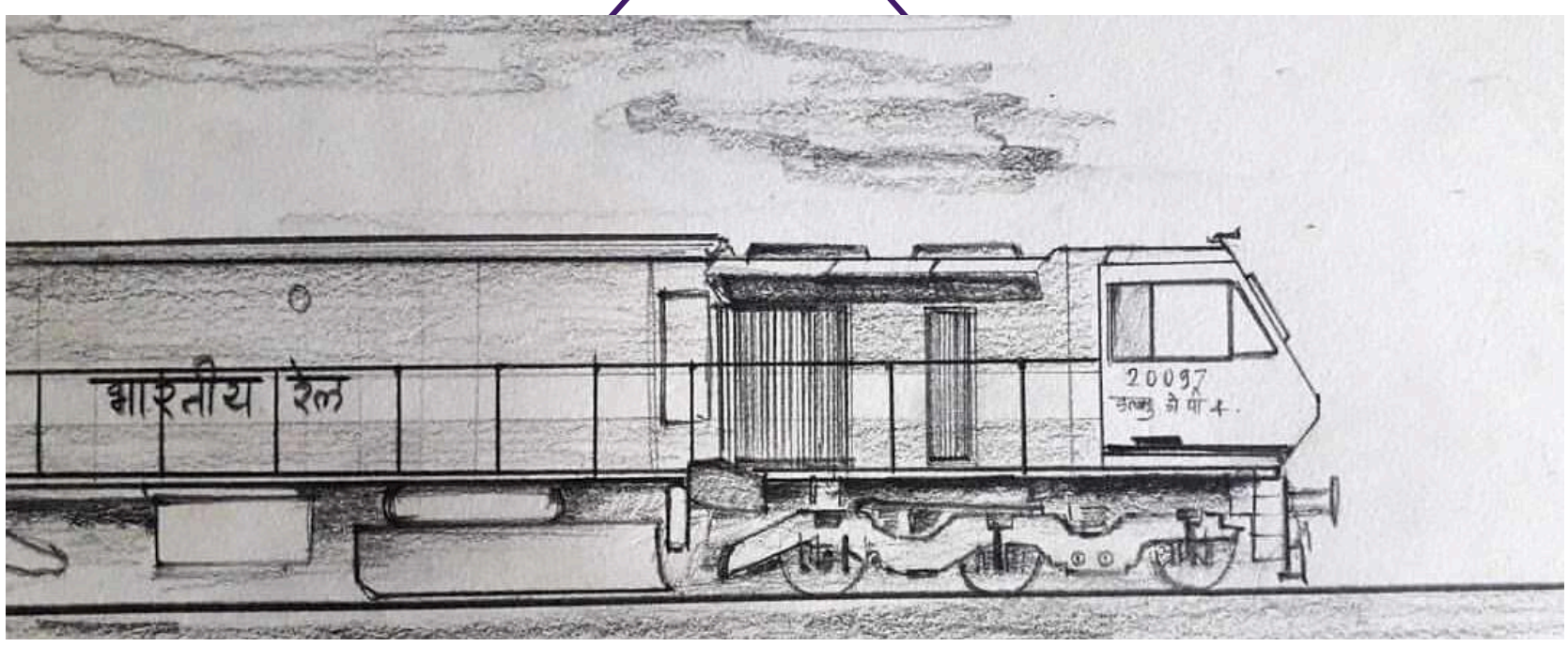

ट्रेन में एक अति-क्रियाशील नवयुवको के समूह से मित्रता स्थापित करने के उपरान्त मुझे लेटने की जगह मिल गयी और मैं सो गया। जब 7 बजे मेरी आँखे खुली और सामने से टीईटी को आते देखा तो आंखों के सामने अंधेरा छा गया। चूंकि आज से पूर्व में सदैव टिकट के साथ ही यात्रा करता था, सो टीईटी से बचने का अनुभव मेरे पास नही था परन्तु मैने अन्य लोगो को टीईटी से भागते हुए और बचते हुए देखा था सो मैने उसी का अनुसरण किया और भाग कर अपनी जान बचायी। इसके चक्कर में मैं पुन: गेट के पास आ चुका था और इस बार और भयावह स्थिति थी। बचपन में पिताजी के साथ बाइक पर आगे बैठ कर हवा के झोंको से जो मीठी नींद आती थी वैसी ही नींद आज आ रही थी। यद्यपि बाइक पर तो पिता जी बार-बार मुझे जगा देते थे पर यहाँ कोई न था। मैं उस गेट पर झपकियाँ लेते हुए कई बार बाल बाल बचा। उस वक्त मुझे मेरे पिता ने नहीं बल्कि हम सबके पिता ने बचाया। बड़ी मुश्किलो के बाद मैं अपने गंतव्य स्टेशन पर था। जो ट्रेन मुझे 1 बजे दोपहर यहाँ लाने वाली थी, उसने मुझे 4 बजे यहाँ पहुंचाया। अबतक की सबसे सामान्य और रोमांचकारी घटना मेरे साथ घट चुकी थी कि मेरा फोन डिस्चार्ज होने के कारण बंद हो गया था। सामान्य इस लहजे में ऐसे बड़े सफरों में अकसर ऐसा होता है और रोमांच-कारी इसलिए की इसके परिणाम काफी रोमांचक रहे। उस वक्त मैने वही स्टेशन पर किसी का फोन लेकर घर वालो को सूचित कर दिया कि मैं पहुँच चुका हूँ। इसके बाद में वहाँ से जेसिस चौराहे की तरफ निकल पडा। वहाँ के आगे नौपड़वा बाजार तक जाना था और फिर वहां से 2 किमी की दूरी पर मेरा अपना प्यारा घर था। मेरे एक परिचित जो कि मेरे ही गाँव के है, वही जेसिस चौराहे के पास एक कार्यालय में काम करते है। मैने सोचा कि इनसे सम्पर्क करके इन्ही के साथ आसानी से घर तक पहुँच सकता हूं । मैने टेम्पो में ही एक जन का फोन लेकर उन्हें कॉल किया। चूंकि मैं सुबह से भूखा था और खाली पेट मेरा दिमाग नहीं चल रहा था। मैंने उनसे पूछा, "अरे, जेसिस चौराहे से नौपडवा बाजार तक कैसे जाएं?" मैने ये शब्द कहे जबकि मेरा आशय था कि मैं उनके साथ ही घर जाना चाहता था। पर शायद वो इतना छुपा हुआ आशय समझ नही सके और रास्ता बता दिया। मैने भी फोन रख दिया और टेम्पो से उतर गया। मेरे उतरने के बाद उन्होंने फिर से फोन किया तो उन्हें पता लगा कि मैं उतर गया हूँ। उन्हें ये सब बहुत संदेहास्पद लगा क्योंकि पिछले 2 वर्षो से मैं जेसिस चौराहे पर ही रह रहा था। उन्होने फौरन मेरे पिताजी को अवगत कराया। पिताजी भी चकित और चिंतित हो गए। माताजी को पता चलते ही वह बहुत परेशान हो गयी। अनगिनत अशुभ कल्पनाओं ने उन्हे घेर लिया कि कहीं मेरे लाल पर किसी ने काला जादू करके उसकी मति तो न फेर दी, कहीं उसकी मानसिक स्थिति तो ना बिगड़ गयी इत्यादि। आनन-फानन में मेरे घर वालो ने मेरी खोज में मेरे बड़े भाई को नौपड़वा बाजार की तरफ भेज दिया और मैं इधर नौपड़वा बाजार से घर की तरफ पैदल ही निकल पडा। मेरे घर से नौपड़वा बाजार तक दो रास्ते है। दुर्भाग्यवश, मै जिस रास्ते से आ रहा था उस रास्ते पर मेरा भाई मुझे ढूँढता हुआ नही आया।अंधेरा भी होने को आया था।घर से करीबन 200 मी दूरी पर एक

नाई की दुकान थी। सहसा मेरे मन में एक तरंग उठी कि चलो अब घर तो पहुँच ही गये समझो तो यही बाल कटवा के ही चलते है। आपको भी लग रहा होगा और अब मुझे भी लग रहा है कि यह उस समय के हिसाब से बहुत बेतुकी बात थी पर उस दिन सब गड़बड़ ही हो रहा था तो एक और गड़बड़ हुई और अब अंधेरा भी हो चुका था।

जब मैं बाल कटवा के एकदम निश्चिंतता पूर्वक टहलता-घूमता घर पहुंचा तो मेरी माँ मुझे द्वार पर ही मिली। उनकी भाव-भंगिमा में गुस्से और मेरी कुशलता की चिंता इस प्रकार समावेशित थी कि मैं इस निष्कर्ष पर ना पहुंच सका कि अब मुझ पर क्रोध-की वर्षा होगी या करुणा की। उन्होने मुझे गुस्से से डाँटते हुए जब गले से लगाया तो मुझे अब किसी निष्कर्ष की आवश्यकता नहीं लगी। इस रोमांचकारी यात्रा की सारी थकावट माँ की गोद में भस्म हो गई।

भारतीय समाज पर पाश्चात्य संस्कृति

अभिलाषा भार्गव
हिंदी विशेष (प्रथम वर्ष)

मुगल काल से पूर्व की भारतीय संस्कृति पूर्णतया धार्मिक आध्यात्मिक परंपरावादी संग भाग्यवादी थी तथापि मुगलों के संपर्क में आकर प्रथम दृष्टया भारतीय जीवन का स्वरूप भी बहुत कुछ बदला। पूर्व की गुरुकुल परंपरा पर कुठाराघात कर मुगल बादशाहों ने शिष्य कुल परंपरा की शुरुआत की। द्वितीयतया अंग्रेजों के संपर्क में जब भारतीय समाज आया तो इन लोगों ने गुरुकुल संग शिष्य कुल यानी दोनों परंपराओं पर आघात करते हुए नारा दिया -न रहेगा गुरुकुल और ना ही रहेगा शिष्य कुल। अब रहेगा स्कूल । गुरुकुल में गुरु के पास वन में अवस्थित आश्रम में बच्चे पढ़ने जाते थे। शिष्य कुल में गुरु ही बच्चों के घर जाकर पढ़ाते थे और अंग्रेजों के स्कूल में बच्चे भी घर से निकले, शिक्षक भी घर से निकले, दोनों एक निश्चित स्थान पर एकत्रित हुए, पठन-पाठन का काम निर्धारित घंटे तक चला, फिर सभी अपने-अपने घर को प्रस्थान कर गए। स्कूल में गुरुकुल वाली त्यागमयता नहीं रही। पढ़ने वाले छात्र को शिक्षा प्राप्त करने के लिए शुल्क चुकाना पड़ता है; जिसके कारण शिक्षक के प्रति आदर का भाव घटा है। शिक्षा देने वाले शिक्षक भी पैसे के लिए पढा रहे हैं; जिससे बच्चों के प्रति स्नेह प्यार का भाव समाप्त होता जा रहा है। यूरोपीय विचारधारा से प्रभावित भावी भारतीय पीढ़ी का, परंपराओं से मोह भंग होता गया । नित - नूतन वैज्ञानिक दृष्टिकोण ने भाग्य वाद के प्रति अनास्था उत्पन्न करनी शुरू की, नतीजतन भारतीय संस्कृति के आंतरिक गुण-आदर्श, नैतिकता ,बुद्धि, विवेक प्रज्ञा में परिवर्तन दिखाई देने लगा । इन तत्वों पर पाश्चात्य शिक्षा का सर्वाधिक प्रभाव पडा।

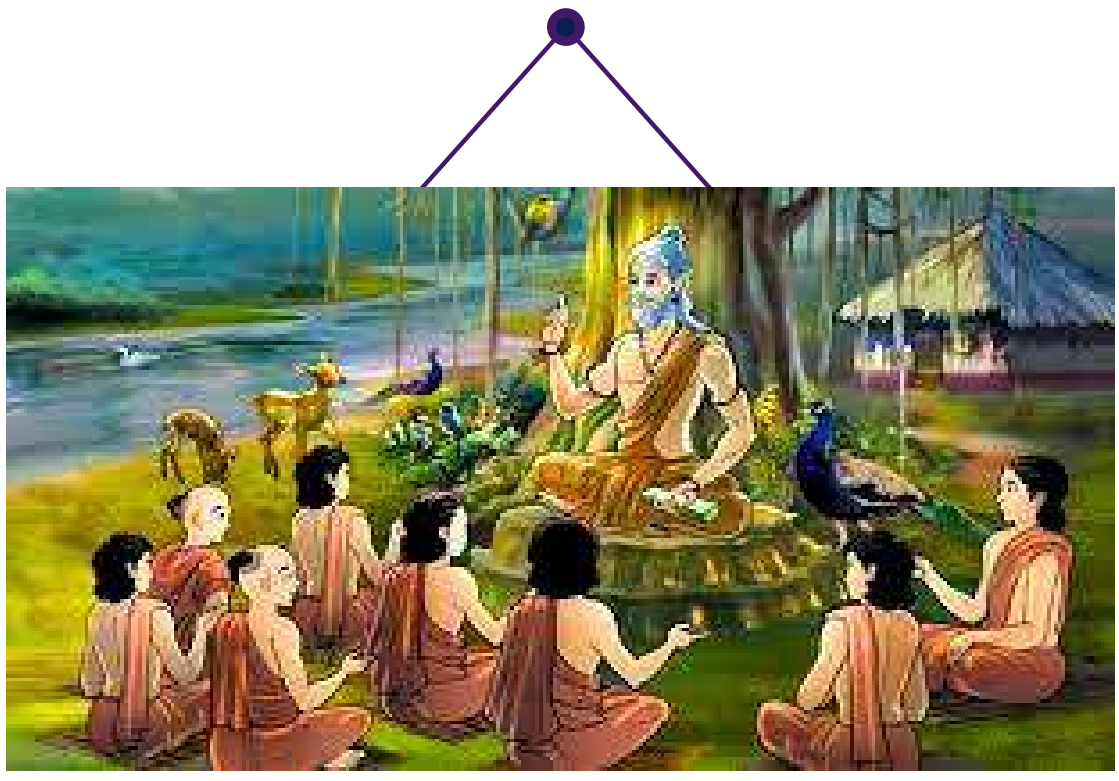

लॉर्ड मैकाले ने भारत में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार प्रसार कर, एक ऐसे वर्ग के सृजन की योजना को मूर्त रूप देना शुरू किया जो जन्म एवं रंग से भारतीय हो पर अन्य सभी दृष्टियों से अंग्रेज बन जाए।शुरुआती दौर में पश्चिमी संस्कृति की ओर झुकता हुआ प्रतीत होने वाले भारत में अनेक लोग ऐसे सक्रिय रूप से दृष्टिगत हुए जिनके लिए पाश्चात्य संस्कृति आदर्श बन गई थी। वह उसकी नकल करने लगे । खान-पान, बोल -चाल ,रहन-सहन, वेश-भूषा ,सब कुछ

बदला- बदला सा दिखाई देने लगा ।भारतीय समाज धर्म व दर्शन में उनको विश्वास नहीं था। ऐसा लगने लगा था कि संपूर्ण भारत इस पश्चिमी संस्कृति का शिकार हो जाएगा । पाश्चात्य संस्कृति का गहन अध्ययन करने वाले भारतीयों ने पश्चिम की ओर इस अंधे आकर्षण का विरोध किया। इन्होंने भारतीयों को अपनी संस्कृति और धर्म में विश्वास करने की प्रेरणा दी। इन शिक्षित सुधारवादी भारतीयों ने तर्क के आधार पर पाश्चात्य संस्कृति का परीक्षण आरंभ किया। उन्होंने अस्पृश्यता, पर्दा प्रथा, बहुविवाह, बाल विवाह, देवदासी प्रथा एवं निरक्षरता आदि सामाजिक कुप्रथाओं को जिन्हें विरासत में मुगलों ने हम भारतीयों पर थोप था और अंग्रेजों द्वारा जिसे संपोषित किया जा रहा था, को समाप्त करने का बीड़ा उठाया ; जिससे मध्यम वर्ग में सामाजिक चेतना जगी। धीरे-धीरे पाश्चात्य संस्कृति के भारतीय समाज के साथ संपर्क से प्राचीन भारतीय नैतिक विचार परिवर्तित होने लगे। फल स्वरुप पश्चात सभ्यता एवं संस्कृति ने जीवन एवं चरित्र को एक नया दृष्टिकोण प्रदान किया।

सामाजिक जीवन पर प्रभाव -

पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव ने भारतीय समाज में क्रांति पैदा कर दी। संत कबीर संग चैतन्य महाप्रभु तक ने इस बात का प्रयत्न किया था कि जाति प्रथा की कठोरता और छुआछूत के भेदभाव को दूर करके, समानता के आधार पर हिंदू समाज का पुनर्गठन किया जाए परंतु उनके प्रयत्न आशातीत परिणाम हस्तगत नहीं कर पाए। वहीं पाश्चात्य सभ्यता ने हमारी जाति प्रथा पर प्रहार किया। पाश्चात्य कला में जाति प्रथा अपने समस्त नियमों के साथ सर्वग्राह्य तरीके से हिंदू जीवन में पूर्णतया समाहित हो चुकी थी, परंतु अंग्रेजी शासन काल में कुछ इस प्रकार के कारकों का विकास हुआ जिसके कारण जाति प्रथा के संरचनात्मक तथा संस्थात्मक दोनों ही पहलुओं में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। यातायात के साधन के विकास के फलस्वरूप नगरों एवं गांवों के बीच दूरियां समाप्त हो गई । इससे विचारों का आदान-प्रदान हुआ; जिससे गांव में जात-पात के प्रति अत्यधिक कट्टरता में कमी आनी शुरू हुई। हिंदू समाज ने सन् 1925 से ही एकजुट होने का यत्न करना शुरू किया । नवयुवकों को एकजुट कर खेल कूद संग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से प्राच्य संस्कार को पाश्चात्य के साथ समन्वय स्थापित कर, जन मानस में रोपित करने का अभिनव प्रयोग शुरू किया गया। भौतिकवादी समाज में यह प्रयोग अमृत सदृश्य प्रभाव दिखाना शुरू किया। इस जागरूकता को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आर्य समाज, ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन, संग गांधी जी ने भी सक्रिय किया। हमारे भारतीय संविधान में भी अनुच्छेद 17 में अस्पृश्यता को भेदभाव मानते हुए पूरी तरह निर्मूल करने की बात कही गई है।

धार्मिक जीवन पर प्रभाव -

भारत में पश्चिमी संस्कृति के प्रचार प्रसार के पूर्व धर्म एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता था। मुगलों के शासनकाल में जातिगत भेदभाव , सती प्रथा, पर्दा प्रथा, बाल विवाह, विधवाओं पर अत्याचार, धार्मिक कर्मकांडों, पाप निवारण के नाम पर , प्रत्येक धर्म संप्रदाय से जुड़े अराजक लोगों ने तथाकथित महिमा मंडित , शीर्ष वर्गों के द्वारा शोषण आदि अनेकानेक रूढ़ियों एवं अंधविश्वासों से, आम जन जीवन को ,राहु के समान ग्रसित किए हुए था ।

पाश्चात्य शिक्षा ने हर आम व खास को धर्म ,पंथ, संप्रदाय तथा आदर्शों एवं मूल्यों के मूल्यांकन का अवसर प्रदान किया। अंधविश्वास एवं अंध श्रद्धा का स्थान बुद्धि, विवेक, प्रज्ञा और तर्क ने ले लिया। कट्टरता की जगह उदारता संग तथ्य सम्मत विचारों ने स्थान बनाना शुरू किया। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से अनेक लोग ईसाई दृष्टिकोण, रहन-सहन, खान-पान की ओर झुके। भारतीय दर्शन के स्थान पर पश्चात दर्शन और बाइबिल का गहन अध्ययन किया गया। सौभाग्य से इस प्रवृत्ति के विरुद्ध प्रतिक्रिया प्रारंभ हुई । स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद और अरविंद घोष जैसे महापुरुषों ने धार्मिक और सामाजिक सुधार आंदोलन से इस प्रवृत्ति का अंत किया।

महर्षि देवेंद्र नाथ ठाकुर, केशव चंद्र सेन, स्वामी दयानंद सरस्वती, डॉक्टर केशव बलिराम हेडगेवार तथा स्वामी विवेकानंद के द्वारा क्रमागत रूप से आम भारतीयों के मध्य समानता, प्रेम और भ्रातृ भाव का जो पाठ पढ़ाया गया वह भारतीय समाज को, जो पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति से प्रभावित दिखाई पड़ रहा था, एक नई दिशा प्रदान किया। भारतीयों के मध्य आत्मविश्वास तथा अपनी गौरवमय परंपराओं के प्रति समादर संग श्रद्धा का भाव उत्पन्न किया , नतीजतन देश में राष्ट्रीय चेतना का नवसंचार हुआ।

आर्थिक क्षेत्र में प्रभाव -

पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति ने हमारे देश की अर्थव्यवस्था पर जितना जबरदस्त प्रभाव डाला, उतना किसी अन्य क्षेत्र पर नहीं पड़ा । अपनी राज सत्ता का लाभ उठाकर अंग्रेजों ने पूरे देश में व्यापार को बढ़ावा दे, अत्यधिक लाभ कमाने के नित्य नूतन प्रयोग करने शुरू किया। भारत से सस्ता कच्चा माल ब्रिटेन ले जाना और फिर वहां से तैयार माल लाकर भारत में महंगा बेचना, यहां के कुटीर उद्योगों पर सीधे कुठाराघात साबित हुआ। मशीनीकरण को बढ़ावा देकर, नील जैसे कम फायदे वाली फसल को उगाना, किसानों को जबरन इस ओर बाध्य करना, किसान मजदूर के लिए कष्ट कर साबित होने लगा। यातायात के साधन ने लोगों को अपनी बात, एक जगह से दूसरी जगह तक पहुंचने में मदद की । धीरे-धीरे कृषक मजदूर आपस में समन्वय स्थापित कर , आंदोलन की रूपरेखा तैयार करना शुरू किए। इससे आमजन में प्रभावकारी रूप से राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई।

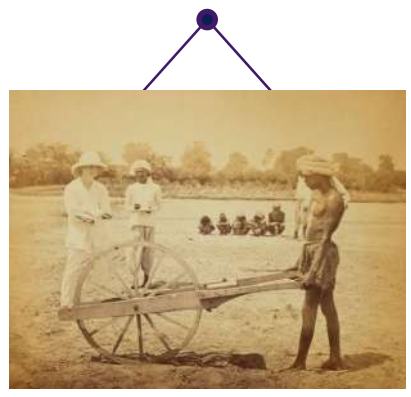

संस्कृति संग शिक्षा पर प्रभाव -

वैश्विक आबादी संग संसाधन में दूसरा स्थान रखने वाला भारत में, व्यवस्थित तरीके से शासन संचालन हेतु, कुशल क्लर्कों की आवश्यकता थी । अंग्रेजी हुकूमत ने क्लर्क तैयार करने वाली शिक्षा नीति शुरू की, जो कि नौकरशाही व्यवस्था के अंतर्गत, सरकारी कार्यालयों आदि में काम कर सके। इस शिक्षा का एकमेव उद्देश्य, अपनी स्वार्थ पूर्ति को अमली जाना पहनना था, ना कि भारतीयों का जन कल्याण। यह शिक्षा सिर्फ किताबी शिक्षा थी। तकनीकी शिक्षा से कोई संबंध नहीं था इसका, बावजूद इसके इस शिक्षा से आम जन में पठन-पाठन संग पढ़ाई की बदौलत एक गरिमामय पद प्रतिष्ठा हासिल करने की भावना भी जगी; जिसे हम नकार नहीं सकते । सन 1835 ईस्वी में लॉर्ड विलियम बेटिंग के कार्यकाल में, स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम द्वारा शिक्षा देने का विधान लॉर्ड मैकाले ने बनाया । अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देकर सदियों तक वैचारिक गुलाम बनाए रखने की कुटिल सोच उल्टी पड़ गई। कालांतर में अंग्रेजी साहित्य जो राष्ट्रीयता से वोट प्राप्त था, भारतीयों में राष्ट्र प्रेम जागृत करता रहा । जिसके फल स्वरुप भारतीयों ने अपने देश की परतंत्रता की बेड़ियों को काटने के लिये राष्ट्रीय आंदोलन प्रारंभ किया । अंग्रेजी भाषा के अध्ययन से हम भारतीय , विश्व के अन्य देशों से ज्ञान विज्ञान संग अपनी पराधीन स्थिति से दो-चार हो, सैकड़ो वर्षों की अज्ञान निद्रा को त्याग , जागृत हुए।

स्त्रियों पर प्रभाव -

पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति के प्रभाव के कारण भारत में धार्मिक तथा सामाजिक आंदोलन प्रारंभ हुए। समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने का प्रयास शुरू किया गया ।भारत में हिंदू विवाह एक धार्मिक तथा पवित्र संस्कार बंधन माना जाता है। पति परमेश्वर की धारणा जहां स्त्रियों के मन में सदैव व्याप्त रहती है, वहीं डिवोर्स तलाक जैसी बातें, जो कि समाज में अशोभनीय मानी जाती थी, अ व्यावहारिक समझी जाती थी। अब विवाह को धार्मिक संस्कार मानने वालों की कमी देखने लगी। जातिगत विवाह होना भी आवश्यक नहीं रहा। परिणाम स्वरूप समाज में पारिवारिक बिखराव की स्थिति बद से बद्तर होती चली गई। प्राच्य कल में मैत्रयि ,गार्गी सदृश्य विदुषियों का प्रभाव देखने को मिला । आज आधुनिक काल में नारी को शिक्षित होने का अवसर मिला तो आज समाज के प्रत्येक क्षेत्र में यह नई सोच के साथ अपना परचम लहरा रही है । ज्ञान प्राप्त कर स्त्रियों ने, मुगल काल में थोपी गई पर्दा प्रथा ,बाल विवाह जैसे कुप्रथाओं के विरुद्ध आवाज उठा, पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर आगे बढ़ाने के लिए सतत प्रयत्नशील है ।

निष्कर्ष -

आध्योपांत दृष्टिपात करने पर हम पाते हैं कि पाश्चात्य सभ्यता संस्कृति ने जहां एक ओर अपने स्वार्थ लोलुप,पद लोलुप, राज लोलुपता को सदैव सम्मुख रखते हुए , हमारी भारतीय संस्कृति, सभ्यता, नीति, रीति, शिक्षा, अर्थव्यवस्था तक को बर्बाद करने का कुत्सित प्रयास किया।

बावजूद इसके हम भारतीय, इन सब विषम परिस्थितियों से गुजर कर , जैसे आग में जलकर सोने का भस्म सोने से भी महंगा तथा महत्वपूर्ण हो जाता है , ठीक उसी प्रकार एक बार पुनः पूरे विश्व मंडल में जगतगुरु (जो कि कभी भारत हुआ करता था) बनने की ओर अग्रसर है। आज पूरा विश्व भारत की ओर ही देख रहा है; क्योंकि हमने हारिए न हिम्मत बिसारिए न हरि नाम , को आद्य पथ प्रदर्शक मंत्र माना है; जो हमारी भारतीय सभ्यता संस्कृति के रग रग में रचा बसा है।

भारतीय संस्कृति का अनोखा स्वरूप

आदित्य सिंह कुशवाह
बी.ए. प्रोग्राम , (प्रथम वर्ष)

स्वभाव की गंभीरता, मन की समता, संस्कृति के अंतिम पाठों में से एक है और यह समस्त विश्व को वश में करने वाली शक्ति में पूर्ण विश्वास से उत्पन्न होती है।

अगर भारत के संदर्भ में बात की जाए तो भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है, एक तथ्य कि यहाँ यह बात इसके लोगों, संस्कृति और मौसम में भी प्रमुखता से दिखाई देती है। हिमालय की अनश्वर बर्फ से लेकर दक्षिण के दूर दराज में खेतों तक, पश्चिम के रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक, सूखी गर्मी से लेकर पहाड़ियों की तराई के मध्य पठार की ठंडक तक, भारतीय जीवनशैलियों इसके भूगोल की भव्यता स्पष्ट रूप से दर्शाती है। एक भारतीय के परिधान, योजना और आदतै इसके उद्भव के स्थान के अनुसार अलग-अलग होते हैं।

भारती संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति के समान अलग-अलग है। यहाँ के लोग अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, अलग-अलग तरह के कपडे पहनते हैं, भिन्न-भिन्न धर्मों का पालन करते हैं, अलग- अलग भोजन करते हैं किंतु उनका स्वभाव एक जैसा होता है। चाहे कोई खुशी का अवसर हो या कोई दुख का क्षण, लोग पूरे दिल से इसमें भाग लेते हैं, एक साथ खुशी या दर्द का अनुभव करते हैं। एक त्यौहार या एक आयोजन किसी घर या परिवार के लिये समिति नहीं है। पूरा समुदाय या आस-पड़ोस एक अवसर पर खुशियाँ मनाने में शामिल होता है, इसी प्रकार एक भारतीय विवाह मेल-जोल का आयोजन है, जिसमें न केवल वर और वधु बल्कि दो परिवारों का भी संगम होता है। चाहे उनकी संस्कृति या फिर धर्म का मामला क्यों न हो। इसी प्रकार दुख में भी पड़ोसी और मित्र उस दर्द को कम करने में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारतीय संस्कृति के बारे में पं. मदनमोहन मालवीय के अनुसार भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और उसकी महत्ता तो संपूर्ण मानव के साथ तादात्म्य संबंध स्थापित करने अर्थात् ' वसुधैव कुटुंबकम् ' की पवित्र भावना में निहत है।

भारत का इतिहास और संस्कृति गतिशील है और यह मानव सभ्यता की शुरुआत तक जाती है। यह सिंधु घाटी की रहस्यमयी संस्कृति से शुरू होती है और भारत के दक्षिणी इलाकों में किसान समुदाय तक जाती है। भारत के इतिहास में भारत के आस-पास स्थित अनेक संस्कृतियों से लोगों का निरंतर समेकन होता रहा है। उपलब्ध साक्ष्यों के अनुसार लोहे, तांबे और अन्य धातुओं के उपयोग काफी शुरुआती समय में भी भारतीय उप-महाद्वीप में प्रचलित ये, जो दुनिया के इस हिस्से द्वारा की गई प्रगति का संकेत है। चौथी सहस्राब्दि बी.सी. के अंत तक भारत एक अत्यंत विकसित सभ्यता के क्षेत्र के रूप में उभर चुका था। संस्कृति के शब्दिक अर्थ की बात की जाए तो संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का बोध होता है जिनके सहारे वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है- संस्कार, सुधार, परिवार, शुद्धि, सजावट आदि। वर्तमान समय में सभ्यता और संस्कृति को एक-दूसरे का पयार्य माना जाने लगा है लेकिन वास्तव में संस्कृति और सभ्यता अलग-अलग होती है। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय व दृश्य कला रूपों

का प्रदर्शन होता है जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जबकि संस्कृति में कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन की उच्चतम उपलब्धियाँ सम्मिलित है।

भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। यह माना जाता है कि भारतीय संस्कृति यूनान, रोम, मिस्र, सुमेर और चीन की संस्कृतियों के समान ही प्राचीन है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक है जिसमें बहुरंगी विविधता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। इसके साथ ही यह अपने-आप को बदलते समय के साथ ढालती भी आई है। इक़बाल कहते हैं -

“ यूनान-ओ-मिस्र-ओ-रुमा , सब मिट गए जहाँ से ।
अब तक मगर है बाकी, नाम-ओ-निशाँ हमारा ।।
कुछ बात है कि हस्ती, मिटती नहीं हमारी ।
सदियों रहा है दुश्मन, दौर-ए-जहाँ हमारा। ”

जब से मनुष्य का जीवन अस्तित्व में है तब से वह निरंतर उन मूल्यों की तरफ अग्रसर है, जिनको प्राप्त कर लेने पर उसका जीवन व्यवस्थित होने के साथ-साथ ‘ आत्मिक सौंदर्य ’ से भी परिचित हो सके। उसकी यह प्रवृत्ति वास्वत में संस्कृति की ओर ही इशारा करती है। भारतीय संस्कृति समस्त मानव जाति का कल्याण चाहती है। भारतीय संस्कृति में प्राचीन गौरवशाली मान्यताओं एवं परंपराओं के साथ ही नवीनता का समावेश भी दिखाई देता है। भारतीय संस्कृति विभिन्न सांस्कृतिक धाराओं का महासंगम है, जिसमें सनातन संस्कृति से लेकर आदिवासी, तिब्बत, मंगोल, द्रविड़, हड़प्पाई और यूरोपीय धाराएँ समाहित हैं। ये धाराएँ भारतीय संस्कृति को इंद्रधनुषीय संस्कृति या गंगा-जमुनी तहजीब में परिवर्तित करती है।

अगर भारतीय संस्कृति के समन्वित रूप पर विचार करें तो इसमें विभिन्न विशेषताएँ देखने को मिलती हैं। भारतीय संस्कृति में अध्यात्म एवं भौतिकता में समन्वय नजर आता है। भारतीय संस्कृति में प्राचीनकाल में मनुष्य के चार पुरुषार्थी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एवं चार आश्रमों ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास का उल्लेख है, जो आध्यात्मिकता एवं भौतिक पक्ष में समन्वय लाने का प्रयास है। उल्लेखनीय है कि भारतीय संस्कृति ने अनेक जातियों के श्रेष्ठ विचारों को अपने में समेट लिया है। भारतीय संस्कृति में यहां के मूल निवासियों के समन्वय की प्रक्रिया के साथ ही बाहर से आने वाले शक, हूण, यूनानी एवं कुषाण भी यहां की संस्कृति में घुल-मिल गए हैं। अरबों, तुर्की और मुगलों के माध्यम से यहाँ इस्लामी संस्कृति का आगमन हुआ। इसके बावजूद भारतीय संस्कृति ने अपना पृथक अस्तित्व बनाए रखा और नवागत संस्कृतियों की अच्छी बार्ता को उदारतापूर्वक ग्रहण किया। आज हम भाषा, खानपान, पहनावे, कला, संगीत आदि हर तरह से गंगा-जमुनी तहजीब या यूँ कहें कि वैश्विक संस्कृति के नमूने हैं। कौन कहेगा कि सलवार सूट ईरानी पहनावा है या हलवा, कबाब, पराठे, 'शुद्ध भारतीय व्यंजन नहीं हैं।

इस बिंदु पर विचार करना जरूरी है कि हडप्पाकालीन सभ्यता की पंरपराएँ एवं प्रथाएँ आज भी भारतीय संस्कृति में देखने को मिल जाती है, यथा-मातृदेवी की उपासना, पशुपतिनाथ की उपासना, यांग-आसन की परंपरा इत्यादि। इसके अलावा भारतीय संस्कृति में ‘ प्रकृति मानव सहसंबंध ’ पर बल दिया गया है। हमारी संस्कृति मानव, प्रकृति और पर्यावरण के अटूट एवं साहचर्य संबंधों को लेकर चलती है। भारतीय उपनिषदों में 'ईशावास्यइंद सर्वम्' अर्थात् जगत् के कण-कण में ईश्वर की व्याप्तता को स्वीकार किया गया है।

यहाँ के विभिन्न विचारकों एवं महापुरुषों ने भारतीय संस्कृति को समन्वित रूप प्रदान करने वाले विचार प्रस्तुत किये हैं। फिर चाहे बुद्ध, तुलसीदास हो या गांधी जी, इन सभी को भारतीय संस्कृति के नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया है तथा ये सभी चरित्र भारतीय संस्कृति को समन्वित स्वरूप देते हैं। भारत की विभिन्न कलाओं, जैसे- मूर्तिकला, नृत्यकला, चित्रकला, लोकसंस्कृति इत्यादि में भारतीय संस्कृति के समन्वित स्वरूप को देखा जा सकता है। विभिन्न धर्म, पंथों एवं वर्गों के लोगों का नेतृत्व इन कलाओं में दृष्टिगोचर होता है, जैसे मध्यकाल में इंडो-इस्लामिक स्थापत्य कला और आधुनिक काल में विक्टोरियन शैली। भारतीय संस्कृति का समन्वित रूप केवल भौगोलिक राजनीतिक सीमाओं में ही नहीं है बल्कि उसके बाहर भी है। भारत के अंदर बौद्ध, जैन, हिंदू, सिख, मुस्लिम, ईसाई आदि धर्मों के लोग एवं उनके पूज्य-स्थल हैं, जो 'शांतिपूर्ण' सहअस्तित्व को दर्शाते हैं।

विदित हो कि संस्कृति का स्वरूप ' साहित्य ' में सबसे अधिक सभ्यतापूर्ण तरीके से अभिव्यंजित होता है। संस्कृति साहित्य की प्राण है। साहित्य की विभिन्न विधाओं में संस्कृति के प्रभाव को देखा जा सकता है। यहाँ की संस्कृति के आधारभूत मूल्य दया, करूणा, प्रेम, शांति, सहिष्णुता, लचीलापन, क्षमाशीलता इत्यादि को भारतीय साहित्य में समुचित तरीके से अभिव्यक्ति दी गयी है। भारतीय संस्कृति का यह समन्वित रूप संस्कृति व भाषा के माध्यम से रामायण, महाभारत, गीता, कालिदास-भवभूति-भास के काव्यों और नाटकों, के माध्यम से बार-बार व्यक्त हुआ है। तमिल का संगम साहित्य, तेलुगु का अवधान साहित्य, हिंदी का भक्ति साहित्य, मराठी का पोवाड़ा, बंगला का मंगल नीति आदि भारतीय उद्यान के अनमोल फूल हैं।

इनकी संयुक्त माला निश्चय ही ' समेकित भारतीय संस्कृति ' का प्रतिनिधित्व करती है। तुलसीदास मध्यकाल में भारतीय संस्कृति के समन्वय के सबसे बड़े कवि के रूप में नजर आते हैं।

" स्वपच सबर खस जमन जड़, पावँर कोल किरात
रामु कहत पावन परम, होत भुवन विख्यात ।। "

भारतीयों ने गणित व खगोल विज्ञान पर प्रामाणिक व आधारभूत खोज की। शून्य का आविष्कार, पाई का शुद्धतम मान, सौरमंडल पर सटीक विवरण आदि का आधार भारत में ही तैयार हुआ। तात्कालिक कुछ नकारात्मक घटनाओं व प्रभावों ने जो धुंध हमारी सांस्कृतिक जीवन-शैली पर आरोपित की है, उसे सावधानी पूर्वक हटाना होगा। आज आवश्यकता है कि हम अतीत की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजें और सवारें तथा उसकी मजबूत आधारशिला पर खड़े होकर नए मूल्यों व नई संस्कृति को निर्मित एवं विकसित करें।

भारतीय राजनीतिक संस्कृति

सुमित कुमार ओझा
हिंदी विशेष (प्रथम वर्ष)

प्रस्तावना -

भारतीय संस्कृति आपने आप में एक गहरा विषय है। हिन्दुस्तान में एक प्रसिद्ध कहावत है, " कोस-कोस पर पानी बदले, चार कोस पर बानी। " इससे हम भारत की सांस्कृतिक विविधता का अनुमान लगा सकते हैं। हर राज्य की अपनी एक बोली, अपना पोशाक, भोजन, नृत्य, कला आदि है। संभवतः यही हमारे संस्कृति को समृद्ध बनाता है, और भारत को विश्व में एक अनूठा स्थान देता है।

जब भारत स्वतंत्र हो रहा था तब यहां की अनेकता देखते हुए अन्य देशों ने यह कहा था कि भारत का अखंड रहना असंभव है परंतु आज हम इसी अनेकता को संजोए हुए हैं और इसने हमें समग्र विश्व में एक अलग पहचान दी है। भारत में साहित्य एवम भाषा से लेकर राजनीतिक संस्कृति तक में विविधता पाई जाती है, किसी एक विशेष के बारे में समझने से पूर्व हमारे लिए संस्कृति को समझना आवश्यक होगा। इसके बाद हम राजनीतिक संस्कृति एवम भारतीय राजनीतिक संस्कृति को समझेंगे।

संस्कृति -

संस्कृति क्या है? यह शब्द 'कृ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है करना। अंग्रेजी में संस्कृत के लिए हम कल्चर शब्द का प्रयोग करते हैं। यह लैटिन भाषा के ' कल्ट ' शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है परिष्कृत करना। सरल शब्दों में समझें तो संस्कृति को हम जीवनशैली का दर्पण" कह सकते हैं। समाज में रहने वाले व्यक्तियों का रहन सहन, आचरण, खान पान एवं पूजा पाठ जैसे कार्यों से हम वहां की संस्कृति को समझ सकते हैं। मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है, समय से साथ वह अपने रहन सहन तथा खान पान के तौर तरीके में परिवर्तन करते रहता है। यह स्वाभाविक होगा कि व्यवहार या अन्य मान्यताओं में परिवर्तन आने से संस्कृति पर भी कुछ प्रभाव देखने को आएगा।

यदि इसी दृष्टि से हम भारत को देखें तो अंग्रेजों के आगमन के पूर्व जो भारत की संस्कृति थी और उनके जाने के पश्चात जो संस्कृति थी उसमे थोड़ा बदलाव देखा जा सकता है। उदाहरण के लिए अब यहां पढ़ने के लिए अंग्रेजी भाषा का भी विकल्प मौजूद है एवं कई ऐसे कार्य जो अंग्रेजों द्वारा किए जाते थे जैसे वेस्टर्न कपड़े पहनना इत्यादि। फिर यही थोड़ा बदलाव समय के साथ और गहरा होता चला गया।

संस्कृति एक व्यापक विषय है। इस विषय पर लगभग सभी समाज शास्त्रियों ने अपनी अपनी परिभाषाएं दी हैं एवं अपने अपने मत रखें हैं। उदाहरण के रूप में ' एडवर्ड टायलर ' ने अपनी पुस्तक ' प्रिमिटिव कल्चर ' में बताया है कि " जटिल संपूर्ण जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, कानून, नैतिकता, रीति रिवाज और समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित की गई कोई भी क्षमताएं शामिल है। " इसी के साथ यदि हम ' रामधारी सिंह दिनकर ' की सुने तो वह अपनी पुस्तक ' रेती के फूल ' में लिखते हैं कि " संस्कृति एक ऐसी चीज है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं किंतु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते। " दिनकर की इस कथन से हम संस्कृति के व्यापकता को समझ सकते हैं।

दोनो ही परिभाषाओं को देखते हुए यह समझा जा सकता कि संस्कृति समाज में रहने वाले लोगों के विचारों, विश्वासों एवं अन्य रीति रिवाजों से निर्मित होती है। इसे परिभाषित करना तो कठिन होगा किंतु हम समाज में रह कर वहां की संस्कृति को अनुभूत कर सकते हैं।

राजनीतिक संस्कृति -

राज्य अथवा देश की राजनीति भी कहीं ना कहीं वहां की संस्कृति को दर्शाती है और वहां के बारे में बताती है। किसी देश की राजनीतिक व्यवस्था ही वहां की राजनीतिक संस्कृति की परिचायक होती है। समाज में रहने वाले व्यक्तियों के राजनीति के प्रति क्या विचार हैं? और राजनीति में उनकी प्रतिभागिता किस प्रकार से है? साधारण संस्कृति के ही भांति सभी देशों के राजनीतिक संस्कृति में भी भिन्नता होती है। उदाहरण के रूप में भारत की राजनीतिक स्थिति और अन्य देश जैसे अमेरिका या फ्रांस की राजनीतिक परिस्थितियां एक समान नहीं हो सकती।

कई राजनीति शास्त्र ज्ञाताओं ने इसे परिभाषित किया है, भारतीय एवं विदेशी विचारकों ने अपने देश की राजनीतिक व्यवस्था को देखते हुए अन्य देशों की राजनीतिक व्यवस्था से तुलना करके इसकी परिभाषा दी है। "डेनियल इल्जार" ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है कि राजनीतिक संस्कृति से तात्पर्य यह है कि लोग सरकार के बारे में क्या विश्वास रखते हैं और क्या महसूस करते हैं। लोगों को इसके प्रति कैसे कार्य करना चाहिए या राजनीतिक कार्यवाही के प्रति अभिविन्यास का विशेष पैटर्न जिसमें राजनीतिक व्यवस्था अंतर्निहित है। ठीक इसी तरह ' गैब्रियल आमंड ' और ' सिडनी वर्बा ' ने अपनी पुस्तक ' द सिविक कल्चर ' (1963) में राजनीतिक संस्कृति को एक राजनीतिक व्यवस्था के सदस्यों के बीच राजनीति के प्रति व्यक्तिगत दृष्टिकोण और झुकाव के पैटर्न के रूप में परिभाषित किया है।

' लुसियन पाई ' के अनुसार राजनीतिक संस्कृति दृष्टिकोण, विश्वासों, और भावनाओं का समूह है जो एक राजनीतिक प्रक्रिया को ढंग और अर्थ देती है और जो राजनीतिक व्यवस्था में व्यवहार को नियंत्रित करने वाली अंतर्निहित धारणाएं और नियम प्रदान करती है।

उपरोक्त सभी परिभाषाओं से यह समझा जा सकता है कि राजनीतिक संस्कृति का तात्पर्य व्यक्ति के राजनीति के प्रति विचारों, दृष्टिकोण और भावनाओं से है और इस सब का राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ता? और यह भी कहा जा सकता है कि राजनीति के प्रति लोगों की मानसिकता क्या है? अथवा वह किस प्रकार की धारणा रखते हैं? यहां व्यक्ति के पॉलिटिकल थॉट यानी की राजनीतिक विचार सबसे महत्वपूर्ण हैं। यह स्वभाविक है कि सभी की विचारधारा एक जैसी नहीं हो सकती। लोगों की विचारधारा भी उस जगह की राजनीति को प्रभावित करती है।

भारतीय राजनीतिक संस्कृति -

यदि भारत के संदर्भ में बात करें तो भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। भारतीय संस्कृति हमेशा से समृद्ध रही है और अनेकता में एकता इसकी सबसे बड़ी विशेषता है। भारतीय राजनीतिक संस्कृति यहां की साधारण संस्कृति के जैसे ही विविधता पर आधारित है। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि भारतीय राजनीतिक संस्कृति में अनेकता में एकता का क्या महत्व है, और यह किस प्रकार से यहां की राजनीति को प्रभावित करता है? भारत वह देश है जहां हर जगह आपको एक विभिन्न संस्कृति दिखाई देगी, परिधान से लेकर भोजन करने के तरीके तक में अंतर देखने को मिलता है। इतने विविधता के बाद में हमारे देश को चलाने वाला एक ही व्यक्ति होता है जिसे हम सब मिलकर चुनते हैं। किसी देश को एक विशेष स्वरूप प्रदान करने वाला वहां का अतीत होता है। वहां की राजनीति उस स्थान के इतिहास, भूगोल, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, एवं धार्मिक विश्वासों पर आधारित होती है। और भारत के पास यह सभी आधार मौजूद हैं। 1947 के बाद भारत की राजनीतिक स्थिति में एक बहुत बड़ा बदलाव आया। तब हमारे पास स्वराज था। परिस्थितियां कुछ और निखर कर आयी जब 1950 में हमारा संविधान लागू हुआ उसके बाद से आज तक (आपातकाल को छोड़ कर, 9175-1977 तक) हमारी राजनीतिक स्थिति यही रही हैं कि हम एक लोकतांत्रिक देश है और हमारे यहां व्यक्तियों को जाति और धर्म से ऊपर उठकर कुछ मौलिक अधिकार दिए गए हैं। हम सब यह जानते हैं कि भारत एक लोकतांत्रिक देश है लगभग हर क्षेत्र में विविधता होने के बाद हम अपने आप को लोकतांत्रिक बनाए रखने में सक्षम है। भारत में बहुदलीय प्रणाली को मानते हुए यहां चुनाव कराए जाते हैं और सभी पार्टियों को चुनाव में भाग लेने का बराबर हक दिया जाता है, यह पूर्णतः जनता पर निर्भर करता है की वह किसे अपना नेता चुनती है और देश चलाने का कार्य किसे सौंपती है। लोकतंत्र की सबसे बड़ी विशेषता यही है कि यहां सबसे महत्वपूर्ण लोगों का मत होता है और भारत में अठारह वर्ष से ऊपर के सभी नागरिकों को मतदान का अधिकार प्राप्त है चाहे वह किसी धर्म, जाति, रंग, या प्रांत का हो। और ऐसा भी नहीं हैं कि सारी शक्ति एक ही व्यक्ति के हाथ में दे दी जाए। भारत एक संघीय गणराज्य है। यहां शक्ति राज्य और केंद्र में विभाजित होती है जिसे संभालने के लिए मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री होते हैं। भारत के राजनीतिक परिस्थितियों में कुछ उतार चढाव भी हुए हैं, इसका उदाहरण हम आपातकाल के समय को मान सकते हैं। सत्ता में बदलाव होना लोकतंत्र के लिए स्वाभाविक है। यह जरूरी नहीं की कोई एक व्यक्ति या एक पार्टी को सर्वदा के लिए चुना जाए। किंतु जब वही चीज छीन जाए जो आपको एक अलग पहचान देती हो तब उसे हम कही से सही नहीं मान सकते, आपातकाल में सभी मौलिक अधिकार रद्द कर दिए गए थे। भारतीय राजनीति पर यह समय हमेशा एक धब्बा रहेगा। हालांकि इसके बाद संविधान में कुछ संशोधन किए गए और मौलिक अधिकारों के साथ नागरिकों को कुछ मौलिक कर्तव्य भी दिए गए।

राष्ट्र सर्वोपरि की भावना ही हमें एक करके रखती है। भले ही हमारी सोच, बोली, धर्म, भाषा, प्रांत, रहन-सहन सब कुछ अलग हो लेकिन हमारे राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना सर्वोपरि है। जो की हमें एक साथ बांधती है और यह भारतीय राजनीतिक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण भाग है। हमनें हमेशा धर्म और जाति से ऊपर उठकर अपने राष्ट्र के बारे में सोचा है। इसका यह कारण है कि हमारे देश में हर चीज के लिए एक व्यवस्था बनाई गई है और सब को अपने कर्तव्य और अधिकार दिए गए हैं।

उपसंहार -

अंततः हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि भारतीय संस्कृति हमेशा से समृद्ध रही है चाहे वह राजनीतिक संस्कृति हो अथवा अन्य कोई। राजनीति एक ऐसा क्षेत्र है जहां कुछ भी पूर्व से तय नहीं किया जा सकता। इतनी अधिक विविधता के बावजूद भी हमने खुद को लोकतांत्रिक बनाए रखा यह हमारे लिए उपलब्धि के समान है। और हम यह उपलब्धि बिना एकता के कभी हासिल नहीं कर सकते थे। भारतीय राजनीतिक संस्कृति को नियंत्रित रखने में भारत के संविधान की महत्वपूर्ण भूमिका रही है संविधान यह सुनिश्चित करता है कि भारत एक संघीय संसदीय, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बना रहे।

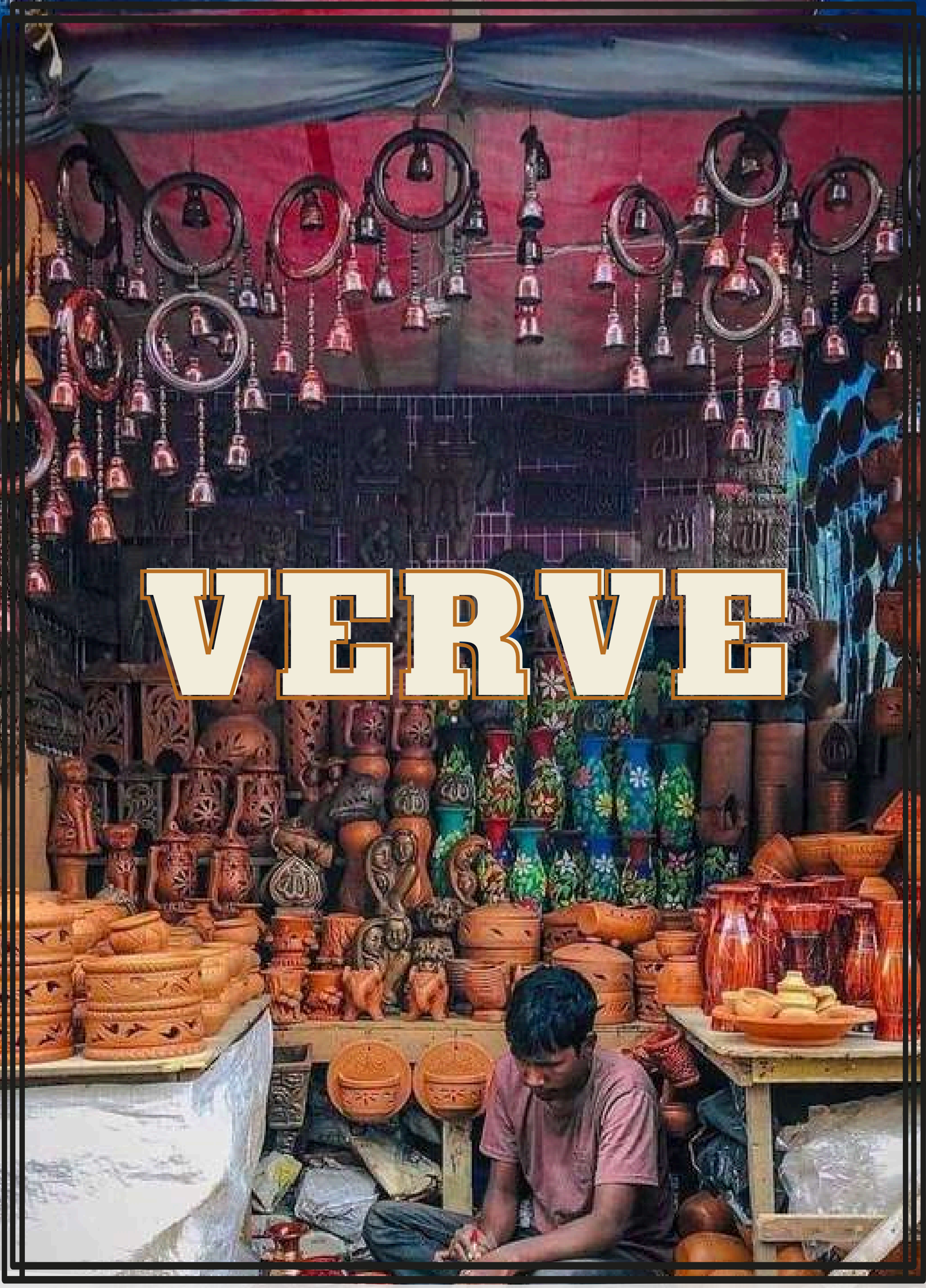

English Section

A Gastronomic Odyssey: Exploring the Enchanting World of Indian Cuisine, with a Delectable Detour into Bihar's Culinary Delights

Shruti Kumari
English Honours (6th Semester)

Embark on a tantalizing journey through the intricate tapestry of Indian gastronomy, where each bite tells a story of centuries-old traditions, regional diversity, and the artistry of flavours. From the snow-capped peaks of the Himalayas to the sun-kissed shores of the Indian Ocean, the culinary landscape of India is as diverse as its geography, offering a kaleidoscope of tastes, textures, and aromas waiting to be savoured. In this culinary exploration, I will delve deep into the heart of Indian food culture, with a special focus on the hidden treasures of Bihar's culinary heritage as this Bihari will be glad to let you know about Bihari's delicious food varieties.

The Symphony of Flavour's:
Indian cuisine is a symphony of flavours, where spices are the maestros conducting a harmonious blend of sweet, sour, spicy, and savoury notes. From the piquant tang of tamarind to the subtle sweetness of cardamom, each spice adds its own unique cadence to the culinary composition, creating a symphony of sensations that dance on the palate and linger in the memory.

A Tapestry of Traditions:
Woven into the fabric of Indian cuisine are centuries of history, culture, and tradition, each thread contributing to the rich tapestry of flavours that define the culinary landscape of the subcontinent. From the royal feasts of the Mughal emperors to the humble fare of village kitchens, Indian cuisine is a testament to the ingenuity and resourcefulness of its people, who have transformed simple ingredients into culinary masterpieces through centuries of experimentation and innovation.

The Spice Route:
At the heart of Indian cuisine lies the spice trade, which has shaped the destiny of nations and left an indelible mark on the culinary traditions of the subcontinent. Traders from distant lands brought with them a treasure trove of spices – cinnamon from Sri Lanka, cloves from the Malabar Coast, and pepper from the hills of Kerala – which found their way
into the kitchens of India, infusing dishes with exotic flavours and aromas that captivate the senses and transport the palate to distant lands.

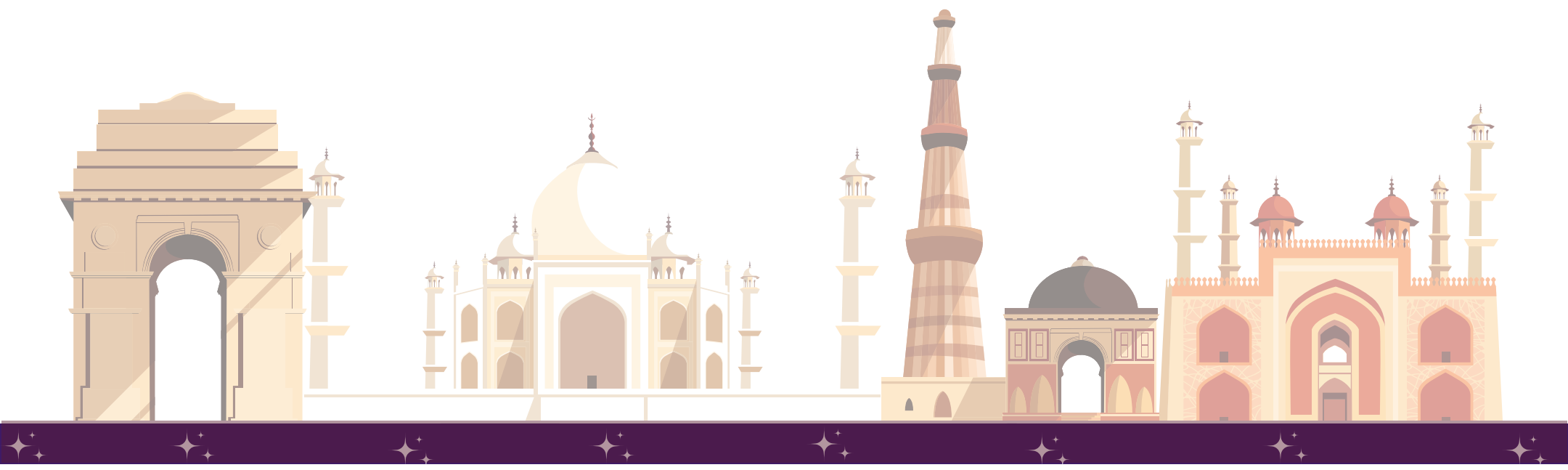

The Vegetarian Paradise:
Vegetarianism is not just a dietary choice in India; it is a way of life, rooted in ancient religious and philosophical traditions that celebrate the sanctity of all living beings. From the fertile plains of Punjab to the arid deserts of Rajasthan, Indian cuisine offers a cornucopia of vegetarian delights, from creamy paneer curries to crisp samosas, each dish a testament to the culinary creativity and diversity of the subcontinent.

The Street Food Extravaganza:
No exploration of Indian cuisine would be complete without a stroll through the bustling bazaars and narrow alleyways that teem with the sights, sounds, and smells of street food. From the fiery chat of Delhi to the fragrant biryanis of Hyderabad, street food vendors tantalize the taste buds with an array of flavours and textures that showcase the culinary heritage of India in all its glory.

Bihar's Culinary Kaleidoscope:
Nestled in the heart of the Gangetic plains, Bihar's culinary tradition is a hidden gem waiting to be discovered. Drawing inspiration from its agrarian roots and Maithili heritage, Bihar's cuisine is a celebration of simplicity, sustainability, and seasonal abundance. From the earthy flavour's of Litti chokha to the delicate sweetness of Tilkut, Bihar's culinary repertoire reflects the rhythm of rural life and the bounty of the land.Litti Chokha, a staple, comprises roasted wheat balls stuffed with spicy sattu (roasted gram flour) and served with mashed potatoes, brinjal, or tomato chutney. Sattu Paratha, made from roasted gram flour, is another popular dish. The state also offers delicious sweets like Khaja, a flaky pastry soaked in sugar syrup, and Thekua, a crispy sweet made from wheat flour, jaggery, and ghee. These dishes reflect Bihar's cultural diversity and culinary finesse. I will say that there are a number of dishes you can enjoy in Bihar. Aaiye kavi humare Bihar hum apko sab khilaenge.

In conclusion, Indian cuisine is a treasure trove of flavours, textures, and aromas that reflect the rich tapestry of the subcontinent's history, culture, and traditions. From the regal splendour of Mughlai cuisine to the rustic simplicity of Bihar's culinary fare, each region
offers a unique gastronomic experience that delights the senses and nourishes the soul. As we savour the myriad flavours of India, let us celebrate the diversity, creativity, and ingenuity of a culinary tradition that is as vast and varied as the country itself.

Tamil Nadu: A Tapestry of Culture and Heritage

Nibha Kumari
History Honours (6th Semester)

"India is the cradle of the human race, the birthplace of human speech, the mother of history, the grandmother of legend and the great grandmother of traditions"

Tamil Nadu, being in news and critics over political issues, is a state in southern part of India, a land of diverse culture and architecture. Also known as Tamilagam during ancient period. The history is a sage of ancient civilizations, empires and dynasties. The region apart from political significance, boasts a rich cultural and archaeological heritage, with evidence of human habitation dating back to the Stone Age. The Sangam period, characterized by the flourishing of Tamil literature and poetry, is considered a golden era in Tamil Nadu's cultural history. The Chola, Pandya, and Pallava dynasties, known for their architectural marvels and patronage of the arts, left an indelible mark on the landscape of Tamil Nadu. It is also renowned for its plethora of temples, owing each a masterpiece of Dravidian architecture. Art and literature: we often associate the state with classical arts that have been nurtured and preserved for centuries. Carnatic music, with its soul-stirring melodies and complex ragas, is jewel in Tamil Nadu's cultural crown. The state is also known for its rich tradition of folk arts, including Therukoothu (street theatre), Villu Paatu (bow-song), and Parai Attam (drum dance), which showcase the vibrant cultural tapestry of rural Tamil Nadu. The culinary delight is as diverse as its cultural landscape. The traditional Tamil meal is served on a banana leaf, known as "Virundhu Sappadu," is a gastronomic experience. Each dish, whether it's the tangy sambar or the creamy payasam, tells a story of Tamil Nadu's rich culinary heritage.

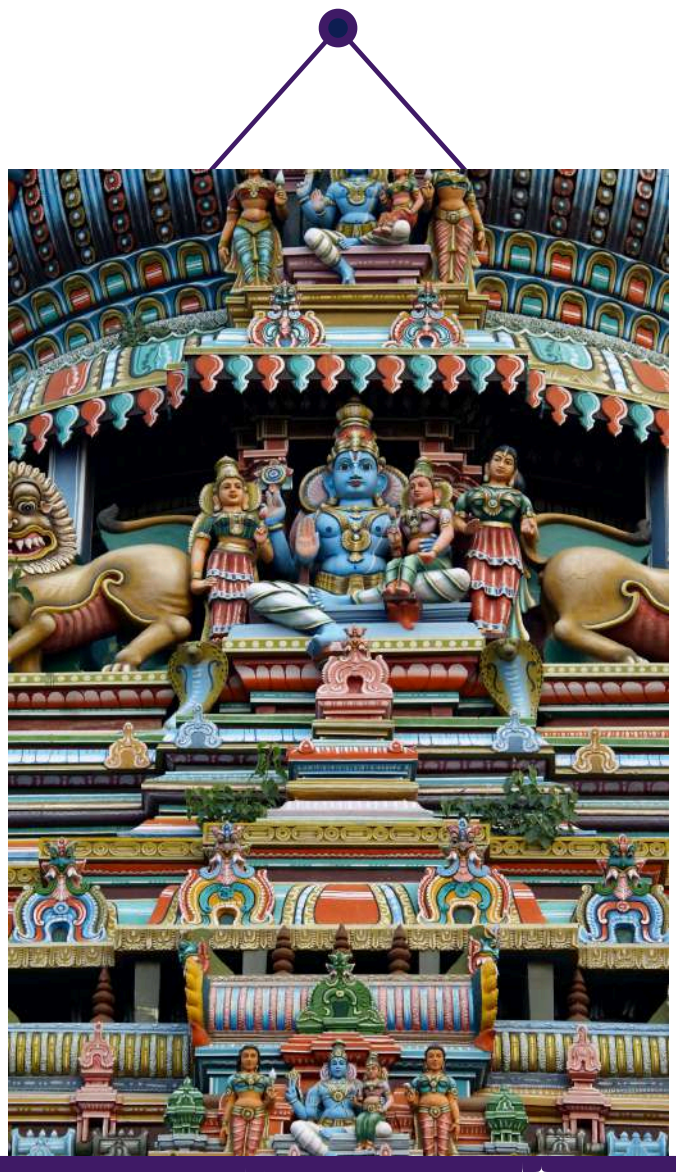

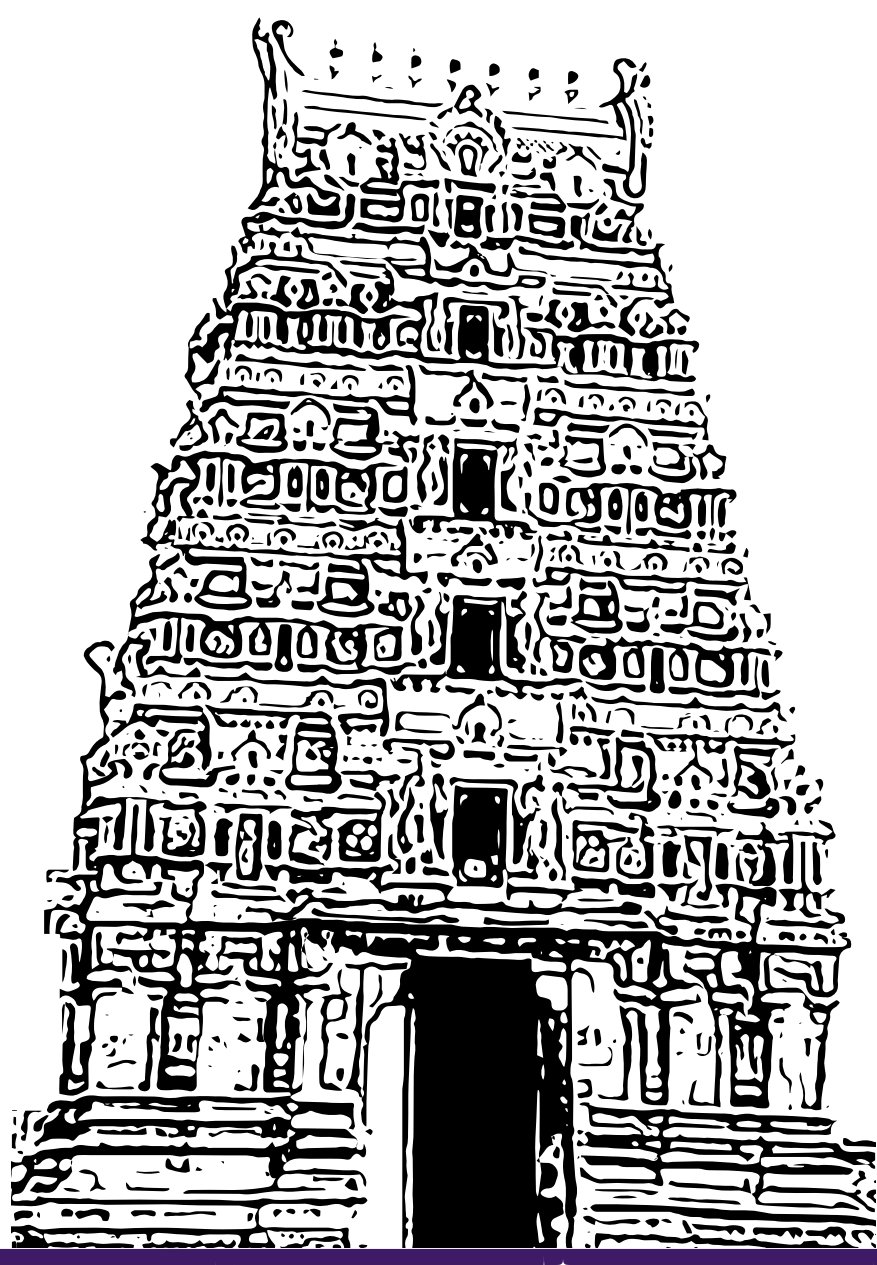

Temple tradition : Tamil Nadu's temples are not only places of worship but also centre of community life, art, and culture. Temples have long been patrons of the arts, nurturing classical music, dance, and other cultural traditions. What I personally experienced that really astonished was draping of saree by women of all ages, which could vary in ways. The Tamil language, one of the oldest classical languages in the world, is a cornerstone of Tamil Nadu's cultural identity. Thirukkural, a revered Tamil literary work, encapsulates ethical and moral principles that continue to resonate with readers across generations. While our trip to Tamil Nadu we get to know about their temple traditions in deep for a while and observed "they are more strict towards their culture and heritage than the North". They have more living temples with distintive culture like taking full parikrama of Shiva temple at Kailasanathar Temple, Kanchipuram. Their traditions do differ along with culture and history. While Tamil Nadu's cultural heritage is celebrated globally, it also faces challenges in the modern era. Urbanization, globalization, and changing lifestyles pose threats to traditional art forms, languages, and customs. Urbanization has not reached in terms of culture and tradition. Tamil Nadu stands as a beacon of culture and heritage, a land where ancient traditions coexist with modernity. Its temples, classical arts, culinary delights, language, and literature are testaments to the richness of its cultural legacy. By cherishing and safeguarding its cultural heritage, Tamil Nadu ensures that its timeless traditions continue to thrive and inspire generations to come.

Abhijnanashakuntalam

Nishtha Thukral
English Honours (4th Semester)

Kalidasa's "Abhijnanashakuntalam" was termed as the cornerstone as we read the text in Indian classical literature. This play penned in Sanskrit in the fourth century projected the Indian Cultural values as it embodied the concept of fulfilling one's dharma, as we perceive acceptance of responsibility upholding the importance of fulfilling one's duties, his wife Shakuntala and son, Bharata. The reverence of nature further exemplified the fantastical reality of the play as it unfolded amongst the lush background of an Ashram (hermitage) and Shakuntala as nature's daughter adorned by birth, found by the birds. Often seen as peace and beauty. The celestial figures posed like Menaka, her mother also depicted the Indian Culture in this context. The concept of Karma shown in the initial negligence led Dushyant to have a life of agony when parted. This was a reflection of his actions developed into repercussions. In essence, this served as a social fabric that continued to resonate with an exploration of love, loss and light.

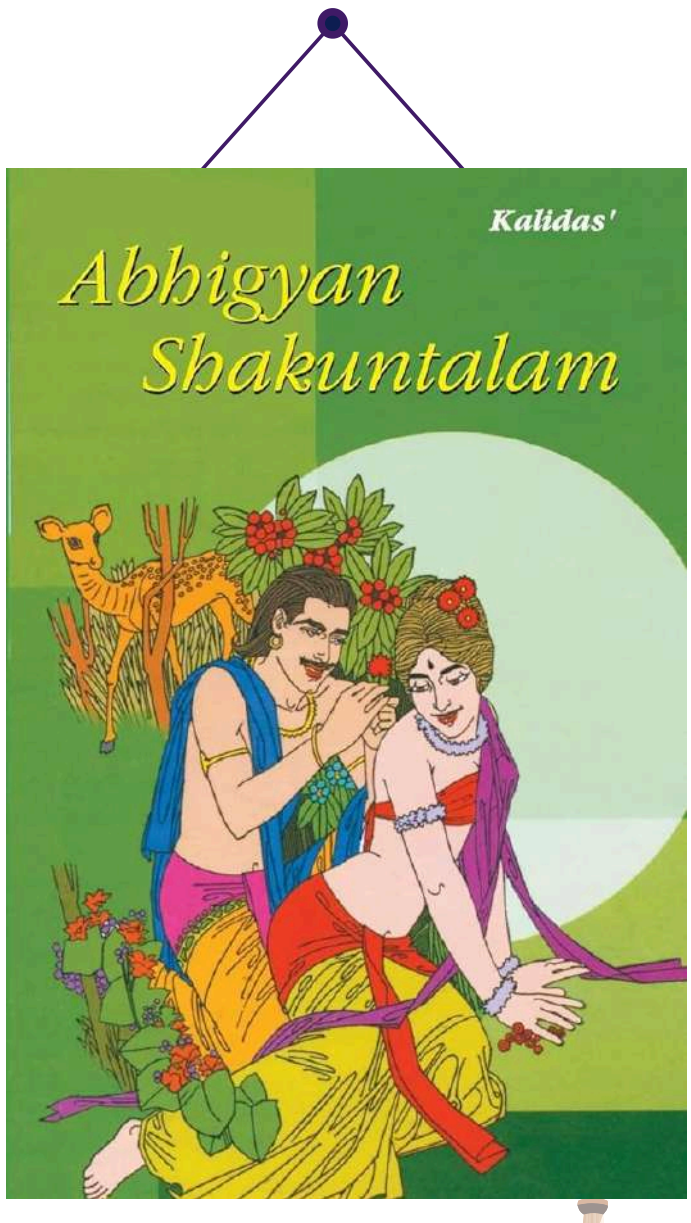

India's rich culture and its diverse food

Amrit Raj
B.Sc. Physical Science (4th Semester)

Exploring India's Rich Culture Through its Diverse Cuisine

India, the mystical land where time-honored traditions dance with modernity, is not just a country; it's an experience waiting to be savored or it can be referred to as the land of diversity, boasts a rich tapestry of cultures, languages, traditions, and cuisines. From the snow-capped Himalayas in the north to the palm-fringed shores of the south, from the arid deserts of the west to the lush forests of the east, every region of India contributes uniquely to its vibrant cultural mosaic. And what better way to explore its soul than through the kaleidoscope of its diverse cuisine.

A Symphony of Tastes & Culture:

Picture yourself standing at the crossroads of history, where the flavors of ancient civilizations mingle with the zest of contemporary culinary innovation. Here, in the heart of India, every bite tells a story – a story of conquests, trade routes, and cultural exchanges that have shaped its gastronomic landscape. From the fiery curries of the north to the subtle spices of the south Moving eastward, the coastal state of West Bengal tantalizes taste buds with its love for fish delicacies infused with mustard and poppy seeds, each region offers a symphony of tastes that is as diverse as it is delightful.

The Spice Trail:

Step into the bustling markets of India, where the air is thick with the heady aroma of exotic spices – cardamom, cloves, cinnamon, and more. These precious jewels of the kitchen not only tantalize the taste buds but also hold the key to a treasure trove of culinary secrets passed down through generations. And it's not just about adding flavor; it's about creating a sensory experience that transports you to distant lands with every mouthful.

A Celebration of Festivals:

In India, festivals are not just occasions for religious or cultural observance but also opportunities to indulge in culinary extravaganzas. From the lavish feasts of Diwali, the festival of lights, to the colorful spreads of Holi, the festival of colors, every celebration is accompanied by a mouthwatering array of sweets, snacks, and savory dishes. For instance, during Chhath puja in Bihar there is famous sweet dish popularly known as thekua & gujiya in Bihar-UP region while Christmas brings forth a spread of rich cakes, pies, and traditional Anglo-Indian delicacies.

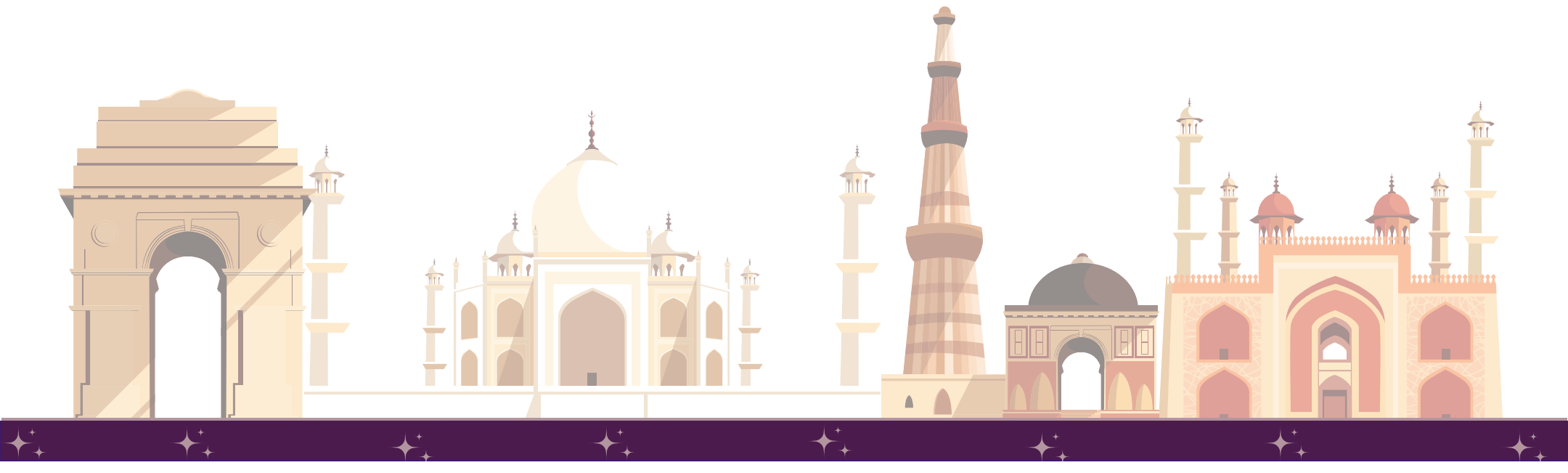

The Vegetarian Utopia:
For the vegetarians among us, India is nothing short of paradise. Here, vegetables are not just side dishes but stars in their own right, celebrated for their versatility, flavor, and nutritional value. From the humble potato to the exotic jackfruit, from the creamy paneer to the hearty lentils, vegetarian cuisine in India is a testament to the creativity and ingenuity of its people.

Ayurveda: The Science of Life:
And then there's Ayurveda, the ancient science of healing that has been woven into the very fabric of Indian cuisine. According to Ayurvedic principles, food is not just fuel for the body; it's medicine for the soul. And so, every dish is carefully crafted to nourish not just the body but also the mind and spirit, using a delicate balance of flavors, textures, and spices that soothe, invigorate, and inspire.

India's rich cultural heritage finds expression in its diverse and tantalizing cuisine, which serves as a window into the country's history, geography, and people. From the spicy curries of the north to the coconut-infused delights of the south, from the vegetarian feasts of the east to the meaty extravaganzas of the west, Indian food is as varied and colorful as the country itself. In every dish, one can taste the warmth of Indian hospitality, the richness of its traditions, and the boundless creativity of its culinary artisans. Truly, to savor the flavors of India is to embark on a gastronomic journey like no other.

Exploring India's Diverse Culture:A Tapestry Woven Through Time

Deependra Dev Singh
B.A. Program (6th Semester)

India, a landmass pulsating with vibrant energy, is a kaleidoscope of cultures. From the snow-capped Himalayas to the sun-drenched beaches of Goa, each region boasts unique traditions, languages, cuisines, and artistic expressions. This rich tapestry, woven over millennia through trade, migration, and the mingling of faiths, is what makes India truly extraordinary.

A Land of Many Faiths

India's soul is deeply spiritual. Hinduism, the world's oldest religion, finds its roots here. The majestic temples of Khajuraho, the serene chants in Rishikesh, and the colorful festivities of Holi all paint a vivid picture of Hindu beliefs. But India is a land of acceptance. Islam, Christianity, Sikhism, Buddhism, Jainism, and various tribal religions coexist peacefully, each adding its own thread to the cultural fabric. Mosques pierce the skylines of historic cities, while Buddhist prayer flags flutter in the mountain breeze. This religious pluralism fosters a spirit of tolerance and respect for diversity.

A Symphony of Languages

India is a land where languages dance to their own rhythms. Hindi, the national language, unites the nation, but over 120 languages and countless dialects create a symphony of sound. The lyrical tones of Bengali mingle with the robust pronunciations of Tamil, while the vibrant Telugu coexists with the rhythmic beats of Marathi. This linguistic diversity can be a challenge, but it also adds a layer of richness to everyday interactions.

A Culinary Journey for the Senses

Indian cuisine is a love letter to spices. From the fiery curries of the south to the creamy delights of the north, each region boasts its own culinary specialties. The aroma of freshly baked naan bread mingles with the fragrance of simmering stews, creating an irresistible invitation. Local ingredients take center stage, with fragrant basmati rice, succulent seafood on the coasts, and melt-in-your-mouth kebabs in the north. Food in India is more than sustenance; it's a celebration of life, shared with loved ones and enjoyed with all five senses.

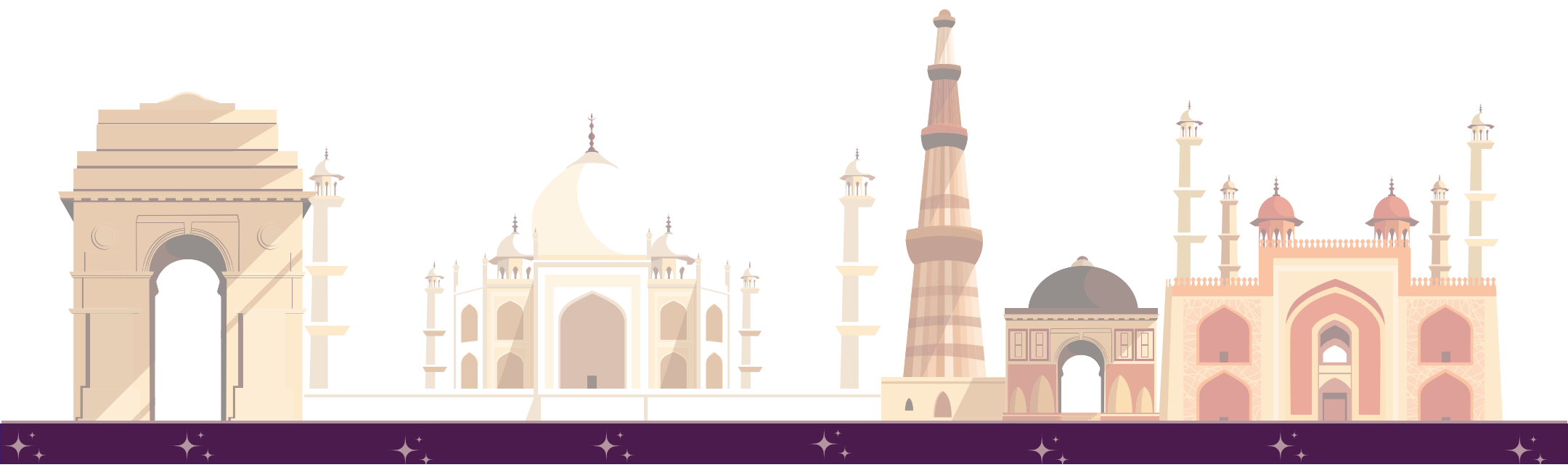

A Celebration of Art and Dance

India's artistic heritage is as diverse as its landscape. The majestic Mughal architecture of the Taj Mahal stands in stark contrast to the intricate carvings of the Sun Temple in Konark. Each region boasts its own artistic styles, from the vibrant paintings of Rajasthan to the delicate filigree work of Odisha.

Dance is another integral part of Indian culture. Classical dance forms like Bharatnatyam, with its graceful storytelling, and Kathakali, known for its elaborate costumes and dramatic performances, captivate audiences with their beauty and complexity. Energetic folk dances like Bhangra and Garba, often performed during festivals, bring communities together in a joyous celebration.

A Culture of Festivals

Festivals are the heartbeat of India. Throughout the year, the country comes alive with vibrant celebrations that reflect its diverse faiths and traditions. Diwali, the festival of lights, illuminates homes and streets, symbolizing the triumph of good over evil. Holi, the festival of colors, is a riot of joy, where people throw colored powder at each other in a spirit of revelry. Dussehra, the ten-day festival celebrating the victory of good over evil, features spectacular displays of effigies burning and fireworks. These festivals are not just religious occasions; they are social gatherings that strengthen the bonds of community.

Unity in Diversity

Despite its remarkable diversity, India is bound by a unifying thread – a sense of community and togetherness. The concept of "Vasudhaiva Kutumbakam," meaning "the world is one family," underscores this unity. Respect for elders, the importance of family ties, and a love for hospitality are values cherished across the nation. India's cultural diversity is not merely a collection of differences; it's a beautiful symphony where each element plays its part to create a harmonious whole. It's a land where ancient traditions thrive alongside modern innovations, and where tolerance and acceptance pave the way for a vibrant social fabric. As you travel through India, embrace the differences, savor the flavors, and immerse yourself in the beauty of a culture that has blossomed through centuries of exchange and evolution.

Our Culture: Unity in Diversity

Gunjan Upreti
Hindi Honours (4th Semester)

We have rainbow like bharat, where stories getting old,
India's culture as like as bold.
From Kashmir to Kanyakumari,
Grace of bindi and saree.

From Himalaya's peaks to Southern shore,
Diverse traditions, rich folklore.
Different culture at every ten steps,
same as sweet nap.
Craze of different food,
Depends on nature's mood.

In the land where colours dance and languages sing,
India's diversity is a wondrous thing.
In the flavours of biryani and spicy chaat,
Or the sweetness of jalebi, wins our heart.

Our unity shines like a winner,
In every corner of the world.
In the whispers of Vedas, and the chants of prayer,
Spirituality's essence, in the perfumed air.

From classical ragas to Bollywood beats,
Music echoes through bustling streets.
In every corner, a story's told,
India's culture, a tapestry bold.

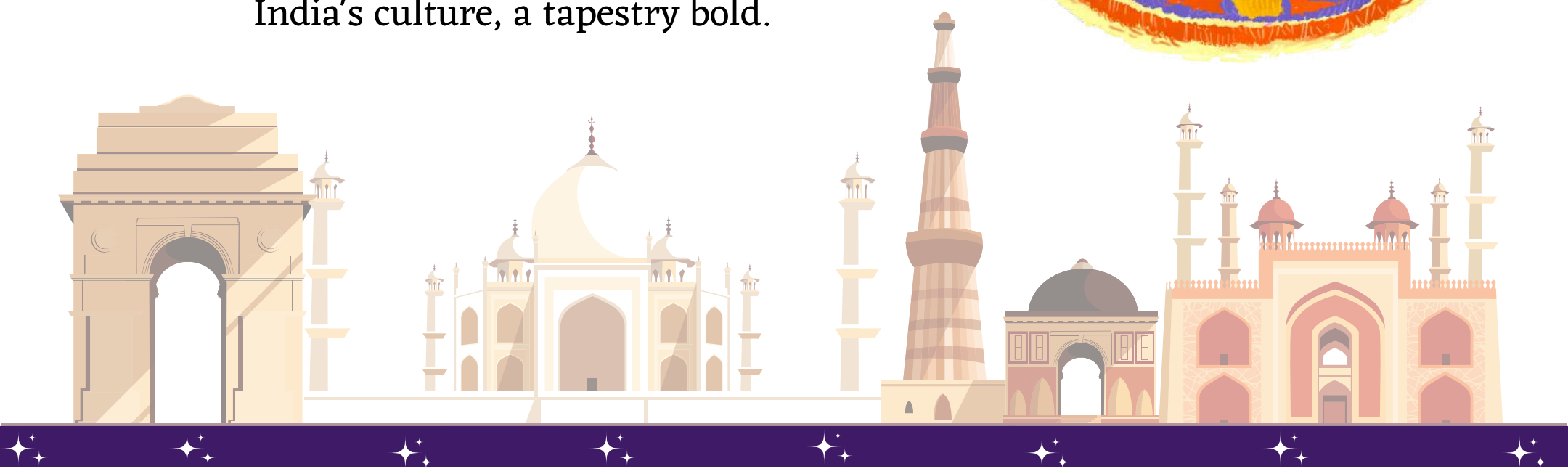

A Taste of India

Saranya
English Honours (2nd Semester)

Oh, the aroma of spices, so rich and divine,
In every Indian dish, a culture so fine.
From the bustling streets of Mumbai to the serene hills of Kashmir,
Food is the heartbeat of India, a love affair so sincere.

The chaat of Delhi, a burst of tangy delight,
The biryani of Hyderabad, a symphony of flavors so bright.
The dosas of South India, crisp and golden brown,
A taste of tradition, a culinary crown.

The samosas and pakoras, deep-fried delights,
Served with tangy chutneys, a burst of flavors so right.
The butter chicken, a Punjabi gem,
A creamy, rich gravy, a taste that's heaven-sent.

The thalis, a colorful array,
A celebration of India's diverse ways.
From the sweetness of gulab jamun to the spice of vindaloo,
Indian cuisine is a journey, a culinary adventure so true.

So savour the flavors, the spices, and the heat,
For in every Indian dish, there's a story so sweet.
A tale of tradition, love, and pride,
A taste of India, a journey that never ends, a culinary ride.

India is the Best

Garima
English Honours (2nd Semester)

Our India is divided into four parts
From North to South and East to West
Still one
That makes it the best.

It's regarded as the king of kings
Whose head starts with
Jammu and Kashmir,
Where mortals wrap in Pheran,
Dancing their favourite rouf,
With the Ladyar Tasman,
On the roof.

It goes through
Himachal, Punjab to Rajasthan
Where fellows greet in 'khamba Gani',
Invite you for ghoomar,
In their folk cloth ghagra and choli,
Which also offers the beautiful part
Often called 'The Pink City'

That never gets apart.
Its right hand is Gujarat
That begins from 'Tame kem cho'
To 'maja ma',
Who is asked by Haryana
To have moves with them
In their dhoti and Kurta.

.

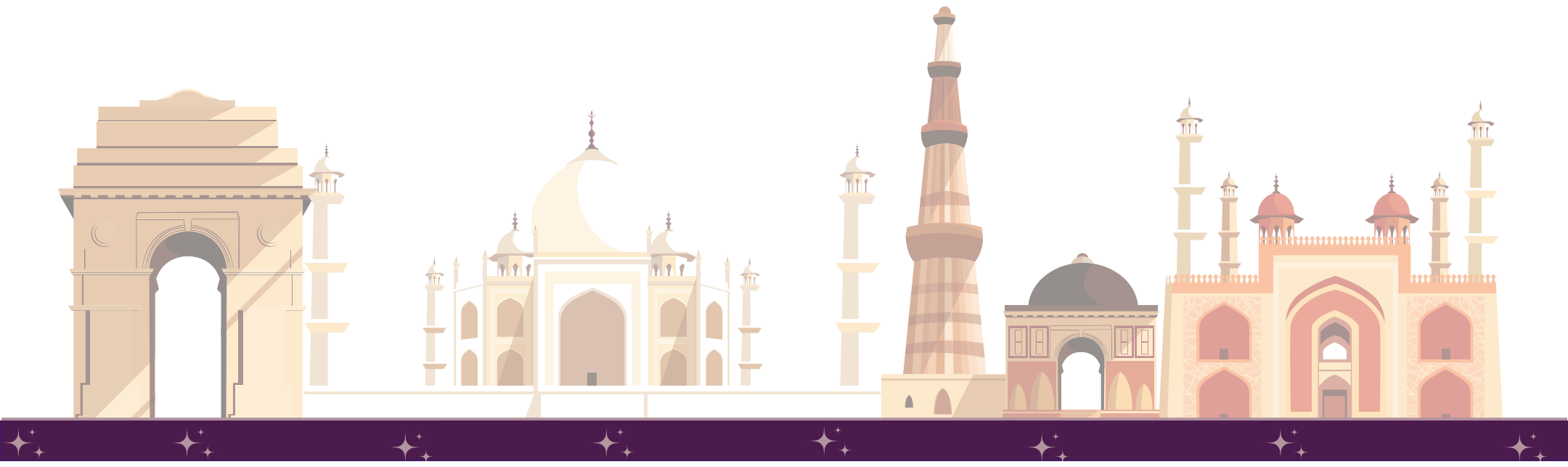

Then, its blood moves to South
Where you might heard through people's mouth,
Fighting for English to be an official language
And the inhabitants power
Inherited by douth,
Its cells constantly run like
Karnataka, Tamil Nadu, Kerala, Telangana and Mumbai,
And South's largest city called Chennai.
Its left hand is East
With fingers named like Orissa, Bihar, West Bengal and Jharkhand,
With a thumb called Nagaland,
The blood moves here has beautiful platelets like
Arunachal Pradesh, Manipur, Meghalaya, Tripura,
Sikkim, Mizoram
and Assam,
It's famous for Chilika Lake in Odisha,
The Victoria Memorial in Kolkata,
Sundarbans in West Bengal,
And the Jagannath temple in puri,
They all are different and unique
Like North & South, East & West,
Still one,
That makes the India best.
Last but not the least,
Its heart left with no ease,
Captured by men with many degrees,
Yet unemployed and on their knees,
This city is seized
By the partyholic bees,
But Delhi too agrees
Like North & South, East & West,
India is the best.

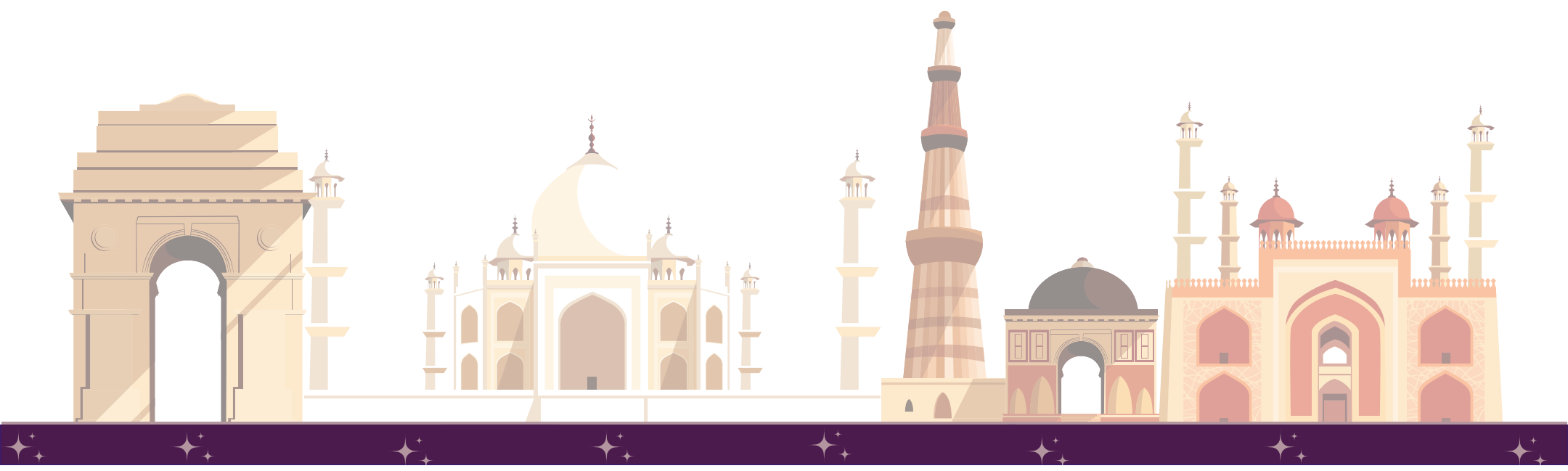

City of Mud

Abhinav Baliyan
English Honours (2nd Semester)

How can I resist falling for this city's allure,
Where the mist carries the messages,
Where the sun's rising and setting paints the canvas of sky.
The city breathes ceaselessly, a pulsing life,
Arteries and veins, conduits of life's resilient flow.

Where days slumber, the moon claims it's vigil,
Amidst the crowd, solitude becomes a silent companion.
On the road, forging friendships or weaving enmities,
The city glow, a dance between crimson nights and dawn's white.

Gardens here harbour secrets veiled in shadow's depth;
Kalindi, witness to birth, ascension and the inevitable fall.
Forts, once sovereign, now echo love's discreet whispers.

Unheard tales linger within the city's throbbing heart,
Tombs, erstwhile adorned, now humbly kiss the earth.
In this distant haven, far from my familiar abode,
A new home beckons, a chance to be reborn.

May dreams find fulfillment, and cries echo through,
In this city of mud, my humble desires take root.

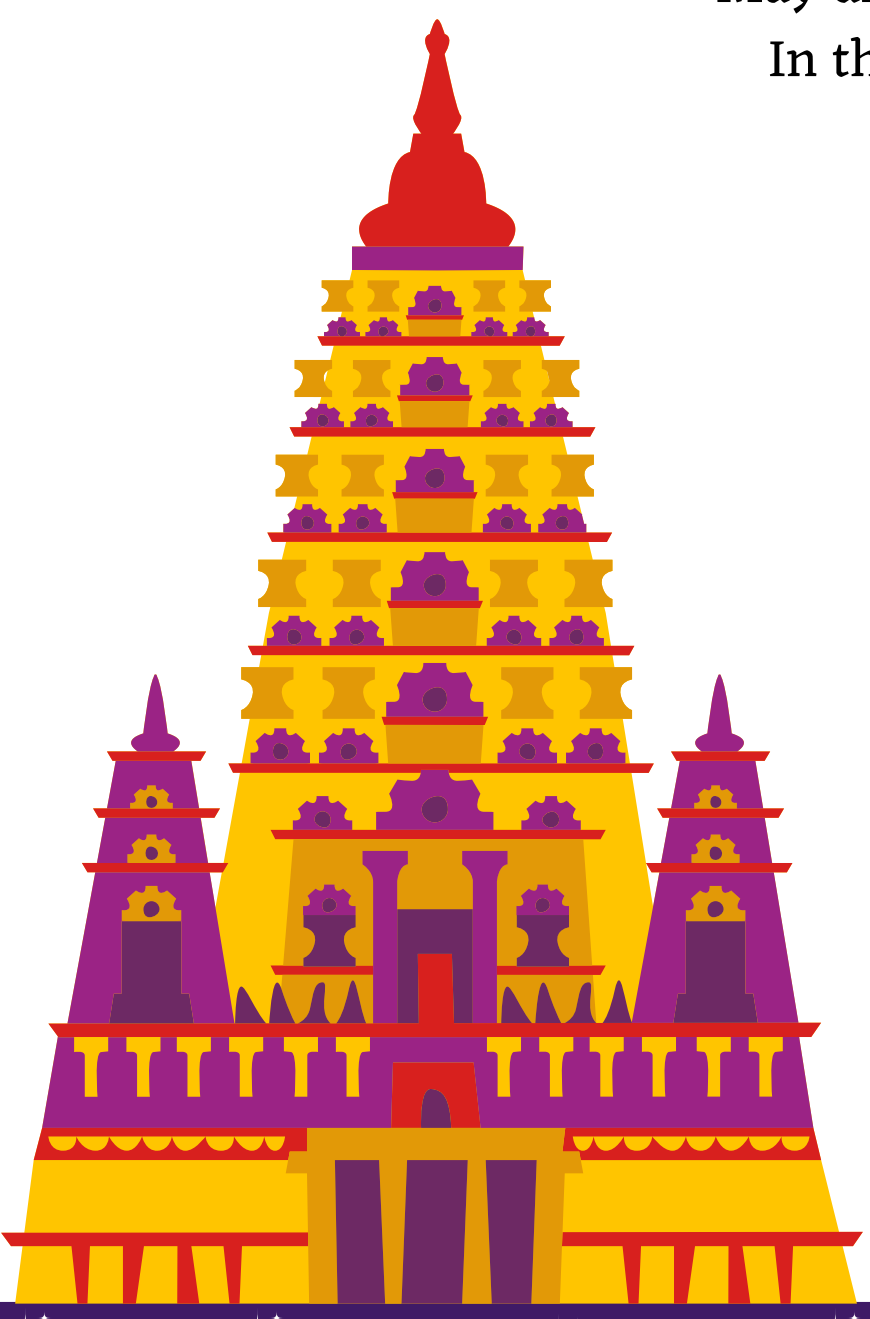

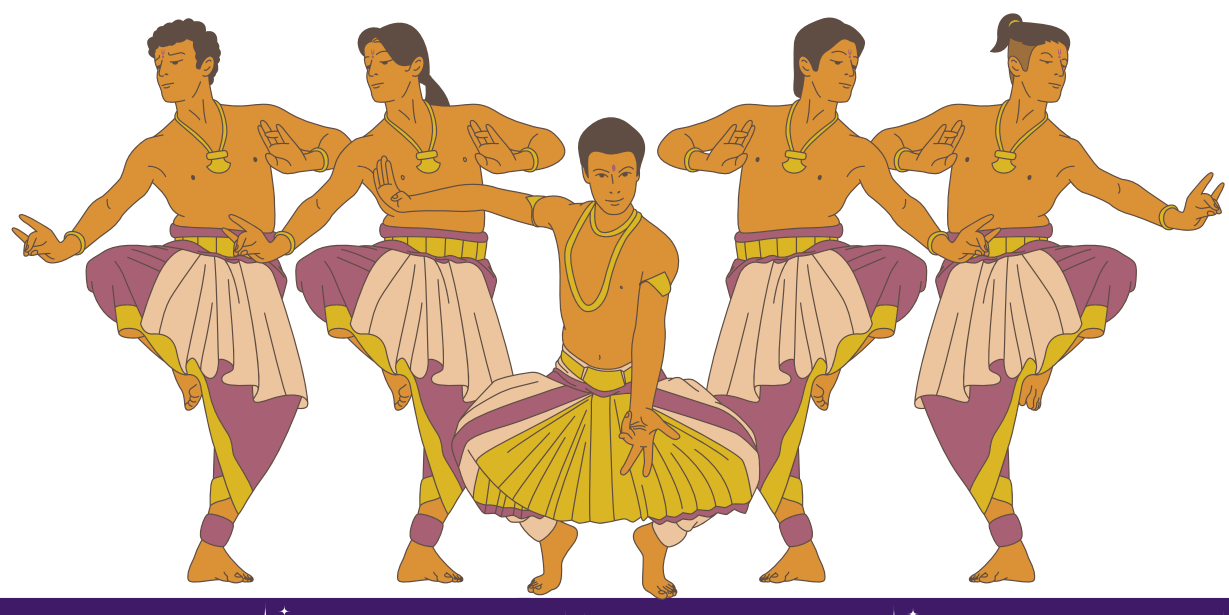

Bearing the weight of Silence

Nibha Kumari
History Honours (6th Semester)

In the shadows of a weary soul,
Lies a tale of unspoken toll,
A boy who bore burdens far too heavy,
Yet, his heart remained steadfast, unwavering, steady.

At ten, he stepped into the realm of toil,
His young shoulders carrying the weight of soil,
For family's sake, he donned the yoke,
While childhood dreams went up in smoke.

Wearing borrowed shoes, worn with care,
Treading paths of trials, unfair,
Six months in the same pair of pants,
His struggles, unseen, in silent chants.

He sacrificed his youth at the altar of duty,
Never knowing the warmth of youthful beauty,
Day by day, he toiled and strived,
Yet in his heart, a flame still thrived.

But as years passed, resentment grew,
Blame and accusations, a venomous brew,
His sacrifice deemed selfish, a show,
By those who never walked in his shadow.

Unmarried, he remained, for their sake,
His love hidden, for fear it might break,
His heart, tender, yet shrouded in fear,
Of losing the one thing he held dear.

Silence

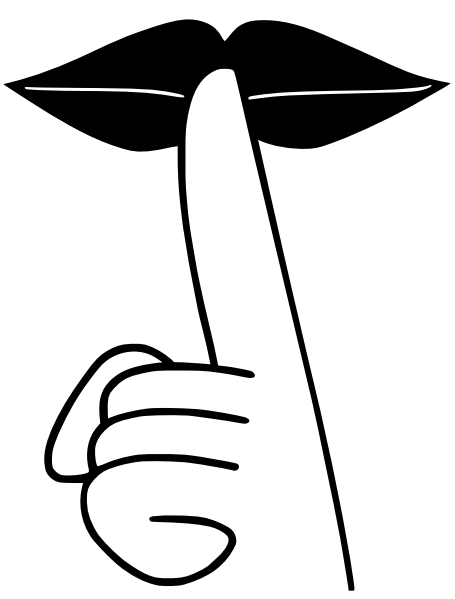

The whispers of suicide, a haunting call,
Yet something universal held him in thrall,
His spirit battered, but never broken,
In his darkest hour, a light still spoken.

For others, he gave all he had,
Yet for himself, he remained sad,
Dreams and desires, buried deep,
In the depths of sacrifices, he'd steep.

He never tasted the joys of youth,
Nor felt the freedom of uncaged truth,
From dawn till dusk, he labored on,
His soul a battlefield, weary and worn.

But in his heart, a flame still burns,
A glimmer of hope, amidst the turns,
For love, though hidden, blooms strong,
In the face of adversity, it belongs.

So let us not judge the struggles he bore,
For his sacrifices, an untold lore,
In the silence of his suffering, let us see,
The strength of a soul, boundless and free

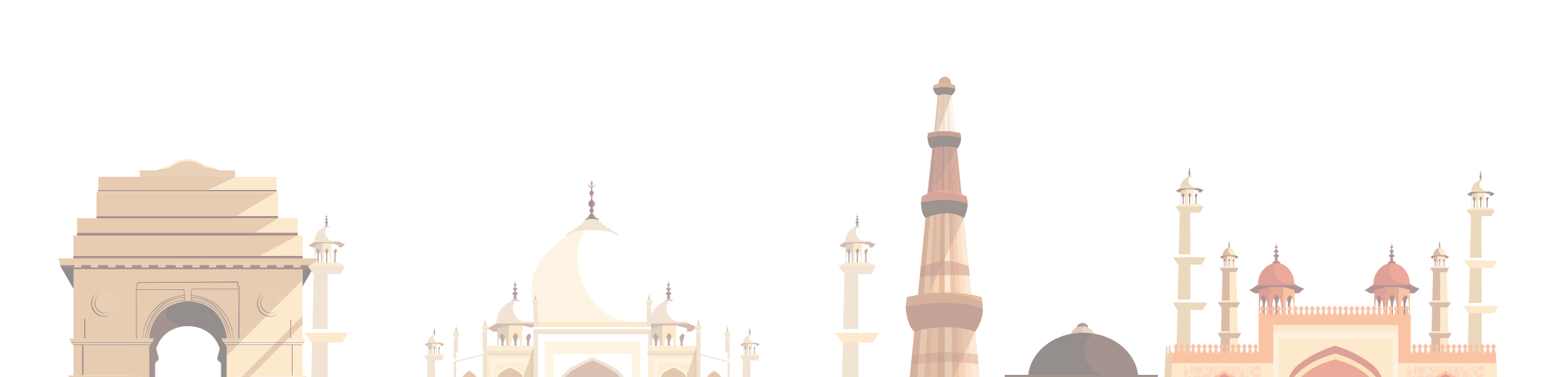

Where I belonged

Harsh Rathee
B.A. Honours (English)

I wondered where I belonged
I sat among the crowd of the elite.
Where they had a story to tell with the words they speak.
I wondered why I sit there
To watch them all breathe.
The life of lies they lived and speak,
I wondered, why I wished, I lived.
I wondered who all sit there, where they were
Because in the crowd of elite, I find myself sitting not like the elite.
The world they belonged to, I did not.
The world they sit in, I not sit there.
I wondered, who they all talked to if not me.
I wondered, the silent wispers they spoke.
But i could not because I sat in the world of elite.
I was there, the silent creature, I heard.
They heard me not, the words spoke.
I wondered, who was it, who spoke?
In the world of indifferent wispers, who heard me weep.
Let me walk into the world I heard was only for the elite.

I walked and found everyone but not the one who spoke.
I was then there, I wished to be, the world of elite.
I looked back to find the one who spoke.
There in the shadows of the unknown world,
It was just me, sitting; looking at me.

A Great Creation

Harsh Rathee
B.A. Honours (English)

Have you ever feared of being forgotten
Yes I did, in all those cozy cold nights.
When I curled myself in a cold blanket,
It was not the blanket curling up,
But my heart, turning into an ice stone.
When did I ever fail anyone?
I still wonder, in those warm dreams.
Why you forced me to become the ice rock,
I still don't know the answer, I seek.
If the world has casted me;
Then does it have the right to destroy me.
I never gave it the right; but it did.
What was wrong and what was right,
What was my fault; just the ambition.
I wanted to be something; not to be forgotten.
Who should I blame, who should I not.
No, I am not the first ice creation,
These great creations, this world casts every day and moment.
I regret not turning into who I am today,
But thankful for creating me, this walking dead.
Just now don't expect me to show you pity,
Then I will be grateful, because it's time I destroy....

CUTURE OF A.R.S.D.

CULTURAL SOCIETY

The inculcation of moral and aesthetic values with the amalgamation of talent and indigenous culture are a huge challenge for any community. The cultural society of ARSD College believes in the preservation of this immaculate heritage. Culture is what a society lives on. Each society can see its culture reflected in its language, folktales, music, literature etc. Apart from this, however, culture has a host of sociological and economic values. Participation in the cultural activities brings an individual a host of personal benefits. It impact is always deep, wondrous, and great. It creates a sense of belonging that few other activities can bring. The Culture Society of ARSD aims to encourage students' interest, participation and responsibility by providing social, cultural and recreational activities for the College community. Keeping this in mind the College has different groups which give students an opportunity to demonstrate and develop their talent in the fields of music, dance and other fields of culture, giving a boost to their physical and mental health.

SAARANG: THE MUSIC GROUP

Music plays an important role in our daily lives and is woven into the fabric of Society. The musical culture is integral to ARSD College from a very long period of time and is pretty visible throughout the year. Being a part of the music group demands commitments in terms of practice routines.

KALASHREE: THE CLASSICAL AND FOLK DANCE GROUP

Dance is a form of meditation and prayer that keeps our mind peaceful. Kalashree provides a platform for students who have interest in folk dance as well as classical and semi-classical dance forms of India. Dance today has evolved from its finite ethnic cults to evolve into a radiant and vibrant form of communication.

OUTBREAKS : THE WESTERN DANCE GROUP

Western dance forms help our body to be more alive. It is indeed a universal language just like music, complimenting people with different tastes, emotions, needs and backgrounds. Members of this group enjoy time spent together in a positive, upbeat environment. They are energized and inspired by other dancers in their midst.

STELLAR: THE FASHION GROUP

In modern era, the study of culture and human societies, studies fashion. Fashion means presenting oneself in clothing, footwear, lifestyle, accessories, makeup, and hairstyle. Members of the society tried and put up light on the current issues prevailing in the society.

WHAT IS NSS ?

The National Service Scheme (NSS) is an Indian government sector public service program conducted by the Ministry of Youth Affairs and Sports of the Government of India. Popularly known as NSS, the scheme was launched in Mahatma Gandhi's centenary year in 1969 with the primary objective of developing the personality and character of the student youth through voluntary community service. 'Education through Service' is the purpose of the NSS. The ideological orientation of the NSS is inspired by the ideals of Mahatma Gandhi. Very appropriately, the motto of NSS is "NOT ME, BUT YOU". An NSS volunteer always places the 'community' before 'self'.

OBJECTIVES OF NSS

- **Understand the community in which they work.**
- **Understand themselves in relation to their community.**
- **Identify the needs and problems of the community and involve them in problem-solving.**
- **Develop among themselves a sense of social and civic responsibility.**
- **Utilise their knowledge in finding practical solutions to individual and community problems.**
- **Develop competence required for group-living and sharing of responsibilities.**
- **Practise national integration and social harmony.**

BENIFITS OF JOINING NSS

- **Increases community understanding.**
- **Develop problem-solving abilities.**
- **Gain skills in mobilizing community participation.**
- **Acquire leadership qualities & democratic values.**
- **Develop capacity to meet emergencies & natural**
- **disasters.**
- **Hone your management,**
- **communication, analytical**
- **& pressure tackling abilities.**
- **Get a government recognised certificate on the**
- **completion of the tenure.**

NOT ME BUT YOU

In the heart of NSS ARSD's quest so grand, Sevadeep shines. Empowering futures, illuminating JJ Camp; Waste segregation, safe touch, in all kinds of awareness we engage, Providing books and stationery, opening the birds' cage. Jeevseva's call, for creatures in need, Street animals' well-being, a noble deed; Food drives, reflective collars, their safety we ensure, Love and compassion, in our hearts secured. Udaan encourages to spread our wings, Empowering women and transgenders, upliftment it brings; Pads, education, self-defense we share, Through workshops, nukkad nataks, seminars, we show we care. Project Dhara, for our planet's sake, Cleanliness drives every week, no efforts we forsake; Seminars, discussions, workshops, the message clear, Armed with brooms and gloves, together we steer. We collaborate, co-operate, at the end, together dance, Growth blooms, giving everybody a leadership chance; With hands entwined, we strive for the right, Sustaining futures, under NSS ARSD's radiant light. In unity, in purpose, we stand tall, Youth for society, answering the call; At NSS ARSD everyone is so true, As we keep our motto NOT ME BUT YOU.

OUR PROJECTS :-

- **SEVADEEP :**

Education breeds confidence. Confidence breeds hope. Hope breeds peace.

- **JEEVSEVA :**

Care they need, Love they deserve.

- **UDAAN :**

Uplifting the standards of living of women.

- **DHARA :**

Inspiring eco-conscious living.

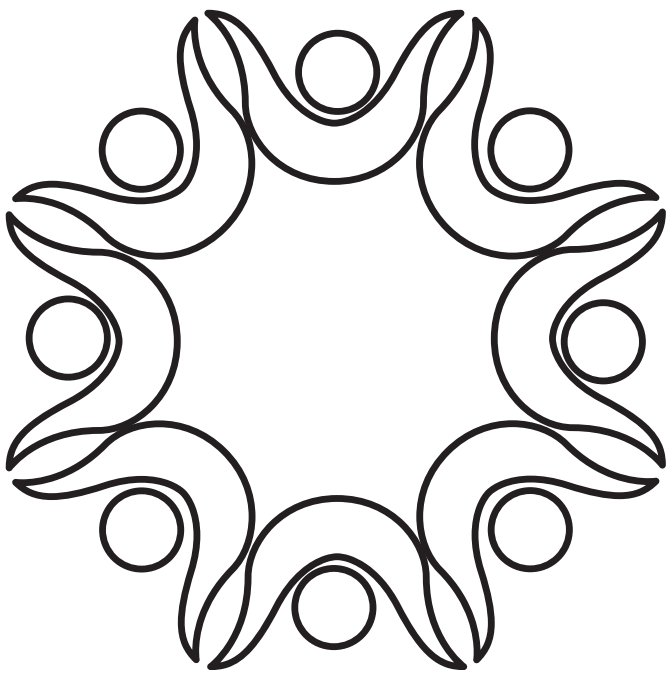

FROM THE PERSPECTIVE OF A VOLUNTEER :-

Being a volunteer at NSS ARSD isn't just about ticking off tasks; it's about leaving a lasting impression on our community. By rolling up our sleeves and getting involved in community projects, we learn more than just the basics. Through community service initiatives, NSS instills a sense of responsibility and empathy in its volunteers, fostering personal growth skills and societal development work. At NSS ARSD, we have gained invaluable experiences, learned the importance of teamwork, leadership skills, and civic engagement. NSS initiatives also promote social cohesion and bridge gaps between communities, fostering a culture of inclusivity and mutual respect. Overall, NSS serves as a catalyst for positive change, empowering individuals to make meaningful contributions to society through its different projects.

NATIONAL SERVICE SCHEME

SAFARNAMA 2023-24

OUR TOP EVENTS

1

UPSC SEMINAR WITH IPS SHUBHAM AGARWAL
17 AUGUST

2

SEMINAR WITH FORMER FORIEGN SECRETARY (MEA)
21 AUGUST

3

TRANSGENDER SHELTER HOME VISIT
30 MARCH

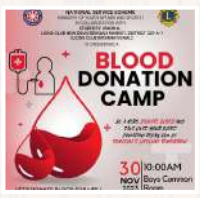

4

BLOOD DONATION CAMP
30 NOVEMBER

5

MEGA CLEANLINESS DRIVE WITH BHUMI NGO
29 JANUARY

6
ELECTION AWARENESS UNDER SVEEP PROGRAM OF ELECTION COMMISSION
27-29 FEBRUARY

NSS WEEK 2023

MINUTES SPENT ON TOES SPREADING HAPPINESS

UDAYACHAL 2024

Designed by: College Magazine Editorial Board,
Atma Ram Sanatan Dharma College

Place of Publication
A.R.S.D. College, Dhaula Kuan, New Delhi

Period of Publication
Yearly

Printer's name, Address, Whether a citizen of India
A.R.S.D. College, Dhaula Kuan, New Delhi - 110021, Yes

Publisher's Name, Nationality, Address
Mr. Arun Ruhela, Indian, A.R.S.D. College

Editor's Name, Whether a Citizen of India, Address
Dr. Bhavnath Jha, Yes, A.R.S.D. College, Dhaula Kuan, New Delhi - 21

Name and Address of Individuals who own the Newspaper and Partners or Shareholders holding more than one percent of the total capital
The Principal
A.R.S.D. College, New Delhi

I, Mr. Arun Ruhela, hereby declare that the particulars given above are true
to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
Mr. Arun Ruhela (Publisher)

Disclaimer:

Several images from the internet have been used with the articles only to demonstrate them better. This magazine is part of institution's internal publications and has no commercial value.

ATMA RAM SANATAN DHARMA COLLEGE
(UNIVERSITY OF DELHI)

Daula Kuan, New Delhi

Tel: 011-24113436, 2417508, 24111390

Website: www.arsdcollege.net